

भण्डारण भारती

भण्डारण
विशेषांक

अंक : 79



केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
जन-जन के लिए भण्डारण

निगम गीत

भारत के कोने-कोने में बनी अमित पहचान है।
केंद्रीय भंडारण का यह निगम हमारी शान है।

खाद्यान्नों का है रखवाला, भंडारण – विद्या का ज्ञाता,
निगोशिएबल जमा पावती दे, किसानों को खूब लुभाता।
लाखों टन की क्षमता इसकी सुख-समृद्धि की खान है,
भारत के कोने-कोने में बनी अमित पहचान है।

भिन्न, प्रशिक्षित, कुशल कार्यबल, वैज्ञानिक भंडारण करता,
भाँति-भाँति के उत्पादों के संरक्षण की क्षमता रखता।
कस्टम के बांडेड गोदामों का भी बड़ा विधान है,
भारत के कोने-कोने में बनी अमित पहचान है।

कीट-नियंत्रण की सेवाएं, एअरलाइनों तक को भाएं,
बन्दरगाहों पर देता है, उत्तम सी.एफ.एस. सुविधाएं,
हैंडलिंग बीमा परामर्श का, सेवा केंद्र महान है,
भारत के कोने-कोने में बनी अमित पहचान है।

आईसीडी, बार्डर आईसीपी, एअरकार्गो केंद्र चलाए,
भंडारण की जागरूकता कृषक भाइयों में फैलाए।
उन्नत सुविधा, उत्तम सेवा ही इसका परिधान है
भारत के कोने-कोने में बनी अमित पहचान है।

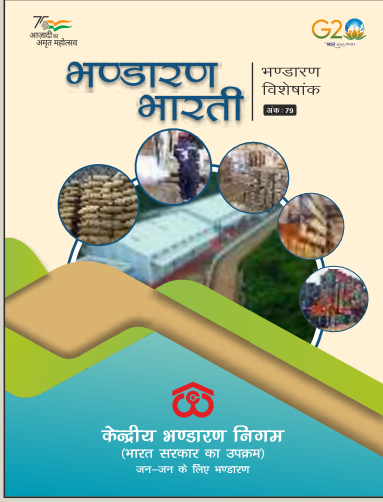
भारत के कोने-कोने में बनी अमित पहचान है।
केंद्रीय भंडारण का यह निगम हमारी शान है।

भण्डारण भारती

छमाही पत्रिका

भण्डारण
विशेषांक

अंक : 79



अक्टूबर, 2022 – मार्च, 2023

मुख्य संरक्षक

अमित कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक

संरक्षक

संगीता रामरख्यानी
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता

अनिल माणिक राव
समूह महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक

नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक

रजनी सूद

सहायक संपादक

रेखा दुबे, शशि बाला, वरुण भारद्वाज

संपादन सहयोग

विद्या भूषण, बीरेंद्र सिंह

केंद्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज़ खास,
नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: मैट्रिक्स प्रिंटिंग सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड
ए-26, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज-1, नई दिल्ली

| विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---------------------------------|
| • प्रबंध निदेशक की कलम से | 03 |
| • सुस्वागतम् | 04 |
| • निदेशक (कार्मिक) की ओर से | 05 |
| • प्रस्तावना | 06 |
| • संपादकीय | 07 |
| आलेख | |
| • मिलेट्स अर्थात "मोटा अनाज | वरुण भारद्वाज 08 |
| • कदन्न फसलों को हानि पहुंचाने वाले पादप | राशिद परवेज 13 |
| • अनाज को सुरक्षित एवं साफ-सुथरा | रणधीर सिंह 16 |
| • संगठन के कार्यों में जनसंपर्क | महिमानंद भट्ट 19 |
| • घर में खाद्य प्रबंधन | विपिन कुमार सिंह 22 |
| • ग्रामीण विकास प्रक्रिया में सहकारिता की भूमिका | आर.पी.सिंह बघेल 59 |
| पर्यटन | |
| • भारत दर्शन पार्क—पर्यटन स्थल | विमलेश गोस्वामी 43 |
| अधिनस्थ वेअरहाउस—एक परिचय | |
| • सैंट्रल वेअरहाउस—बीदर, कंटेनर फ्रेट स्टेशन, व्हाइटफील्ड | 47 |
| कविताएं | |
| • नमस्ते / नमस्कार | अशोक कुमार अरोड़ा 10 |
| • ये देश हमें बदलना होगा | इंदु रानी 15 |
| • एक पत्र नई पीढ़ी के नाम | रविशंकर श्रीवास्तव 18 |
| • क्या होती है माँ | बीरेंद्र सिंह 27 |
| • कर्ण: एक परिचय | संजीव कुमार साहू 30 |
| • तलाश | धर्मेन्द्र कुमार अस्थाना 32 |
| • ललकारती पुकार | जूही पंकज किराड 38 |
| • देखो कितना देश बचा है | पीयूष सरोज 46 |
| • उम्मीदें | देवेश दीक्षित 50 |
| साहित्यिकी | |
| • भिखारिन | गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर 33 |
| विविध | |
| • सच्ची खुशी | मीनाक्षी गंभीर 11 |
| • तुझे कॉकरोच कहूं या तिलचट्टा.. | रोहित उपाध्याय, 28 |
| • जी हाँ मैं चौकीदार हूँ | डॉ. मीना राजपूत 31 |
| • रिटायरमेंट एक | कुमार चंद्र सिंह नेगी 36 |
| • प्यूवर लॉजिस्टिक एंड स्मार्ट कोल्ड चेन एक्सपोजे | क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद 39 |
| • रिश्तों के बदलते स्वरूप | मधुर पाहवा 42 |
| • अपनी माटी के कुम्हार स्वयं बने | रेखा दुबे 49 |
| • मानव जीवन में रंगों का महत्व | रजनी सूद 51 |
| • बचपन का जमाना | सुनीता बाला 52 |
| • ईटीवी से सीडब्ल्यूसी तक का सफर..... | रामराज रेड्डी 53 |
| • केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा आईजीएमआरआई, हापुड... | 58 |
| सचित्र गतिविधियाँ | 63-80 |

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी संबंधित लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।



केंद्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भंडारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना ।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के संबल के रूप में एकीकृत भंडारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणीय संसाधक के रूप में खड़ा होना ।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भंडारण, लॉजिस्टिक सेवाएं एवं तत्संबंधी अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, व्यापार, उद्योग व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना ।
- भंडारण, हैंडलिंग और वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना ।
- पर्यावरण अनुकूल विधियाँ अपनाते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभाना ।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के माध्यम से भंडारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भंडारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 को क्रियान्वयन में सहयोग करना ।
- पोर्ट हैंडलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भंडारण वित्तपोषण, 3 पीएल, परामर्शी सेवाएं, मल्टी मॉडल परिवहन आदि के क्षेत्रों में फॉरवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक वेल्थू चेन की योजना बनाना और उसमें विविधता लाना ।
- वेअरहाउसिंग और लॉजिस्टिक क्षेत्रों में वैश्विक उपस्थिति दर्ज कराना ।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना ।

प्रबंध निदेशक की कलम से.....



भंडारण भारती पत्रिका के नवीनतम अंक भंडारण विशेषांक के माध्यम से पहली बार आपसे जुड़ते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। वास्तव में यह पत्रिका संगठन का आईना है जिसके माध्यम से निगम द्वारा हमारे शेयरहोल्डर, ग्राहकों, जमाकर्ताओं, आपूर्तिकर्ताओं, कार्यनीतिक पार्टनरों, बैंकों और बीमाकर्ताओं को प्रदान की जाने वाली सेवाओं और गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। मुझे आशा है कि आपके समक्ष प्रस्तुत इस भंडारण विशेषांक में दी गई सूचनाएं न केवल पाठकों अपितु निगम के कार्मिकों के लिए भी अत्यंत लाभदायक सिद्ध होंगी।

यह प्रशंसनीय है कि इस वर्ष भी निगमित कार्यालय सहित सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में निगम का **67वां स्थापना दिवस** उत्साह एवं उल्लासपूर्वक मनाया गया जिसकी झलकियां आपको इस पत्रिका में भी देखने को मिलेंगी।

हमारे मूल मूल्यों और बिजनेस फिलॉसफी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता हमें चुनौतियों का सामना करने के लिए सदैव प्रेरित करती है। हमारे क्षेत्र में अग्रणी के रूप में, हम लगातार उत्कृष्टता प्राप्त कर रहे हैं और परिवर्तन को अपना रहे हैं। मुझे आपसे यह साझा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि तमाम बाधाओं के बावजूद, केंद्रीय भंडारण निगम प्रतिस्पर्धी वेअरहाउसिंग उद्योग में अपनी प्रमुख स्थिति बनाए हुए है। निगम ने हैंडलिंग और परिवहन तथा अन्य वैल्यू-एडिड सेवाओं सहित भंडारण सेवाएँ प्रदान करने के लिए एनसीसीएफ के साथ एम.ओ.यू पर हस्ताक्षर भी किए हैं। साथ ही, किसानों, व्यापारियों को केवाईसी के माध्यम से उनके पंजीकरण और गिरवी रखकर ऋण प्राप्त करने की सुविधा सहित रिपॉजिटरी पार्टिसिपेंट सर्विसेज प्रदान करने के लिए सीसीआरएल और एनईआरएल (डब्ल्यूडीआरए की रिपॉजिटरी) के साथ एक समझौता भी किया है। हाल ही में निगम ने विभिन्न बैंकों के साथ समझौता किया है और ई-एनडब्ल्यूआर गिरवी रखकर ऋण लेने की सुविधा के लिए एक इको सिस्टम बनाया है। केंद्रीय भण्डारण निगम ने हाल ही में केंद्रीय भण्डारगृह, नरसिंहपुर (म.प्र.) व केंद्रीय भण्डारगृह डुमिराल्ला (आ.प्र.) में प्रसंस्करण मशीन (Processing Machine) भी लगाई है जिससे अनाज का ग्रेडिंग, सॉर्टिंग, सफाई आदि कार्यों सहित वैल्यू एडिड सेवाएं भण्डारगृह परिसर में ही दी जाएंगी जिससे किसानों को न केवल धन की बचत होगी अपितु समय भी बचेगा। निगम ने कोल्ड स्टोरेज की स्थापना में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। ये कोल्ड स्टोरेज बड़ौदा (गुजरात) तथा नासिक (महाराष्ट्र) में संचालित किए जा रहे हैं जो प्याज, अंगूर व अन्य शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं का भंडारण करते हैं। इनके अलावा, निगम सूरजपुर (उ.प्र.) व अन्य काफी स्थानों पर कोल्ड स्टोरेज खोलने की योजना बना रहा है।

निगम में सीआरडब्ल्यूसी का सफलतापूर्वक विलय भी एक प्रशंसनीय कदम रहा है। निगम "सामाजिक रूप से जिम्मेदार और पर्यावरण अनुकूल तरीके से विश्वसनीय, लागत प्रभावी, वैल्यू एडिड और इन्टीग्रेटेड वेअरहाउसिंग तथा लॉजिस्टिक समाधान प्रदान करने" के अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है। केंद्रीय भंडारण निगम में विविधीकरण और भविष्य की योजनाओं को कारगर बनाने के लिए निगम ने इन्फॉर्मेशन टेक्नोलोजी के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

यह गर्व का विषय है कि निगम के निगमित कार्यालय को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु लगातार दो वर्ष के लिए प्रशासनिक मंत्रालय से तो पुरस्कार प्राप्त हुआ ही है, साथ ही हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर, मुंबई एवं गुवाहाटी को भी मंत्रालय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। यह भी अत्यंत खुशी की बात है कि निगम की गृह पत्रिका "भंडारण भारती" को प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा वर्ष 2022 हेतु श्रेष्ठ पत्रिका प्रकाशन के लिए **तृतीय पुरस्कार** प्रदान किया गया। इससे प्रतीत होता है कि निगम न केवल व्यावसायिक क्षेत्र में अपितु राजभाषा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल करते हुए निरंतर आगे बढ़ रहा है। इसी शृंखला में निगम को प्रशासनिक मंत्रालय द्वारा **स्वच्छता पखवाड़ा** हेतु लगातार दो वित्त वर्ष 2021-22 और 2022-23 के लिए **प्रथम पुरस्कार** प्रदान किया गया जो हम सभी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय है।

निगम को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए मैं अपने सभी कार्मिकों को धन्यवाद देना चाहूंगा और मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा निगम वेअरहाउसिंग के क्षेत्र में उच्चतम मानक बनाए रखते हुए राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी समुचित अनुपालन सुनिश्चित करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

अमित कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक



सुस्वागतम्

केन्द्रीय भंडारण निगम, निदेशक (कार्मिक) के पद पर दिनांक 30.12.2022 को कार्यभार ग्रहण करने पर श्रीमती संगीता रामरख्यानी का हार्दिक अभिनन्दन करता है। इससे पूर्व आप कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (कॉनकॉर) में समूह महाप्रबंधक (मानव संसाधन) के पद पर कार्यरत थीं, जो रेल मंत्रालय के तहत एक नवरत्न पीएसयू हैं।

श्रीमती संगीता रामरख्यानी एलएलबी के साथ मैनेजमेंट ग्रेजुएट हैं। उन्हें मानव संसाधन के क्षेत्र में 30 से अधिक वर्षों का गहन अनुभव है। उन्होंने कॉनकॉर के साथ अपने करियर में फील्ड और निगमित कार्यालय दोनों में विभिन्न चुनौतीपूर्ण कार्य किए हैं। वह नीति निर्माण, औद्योगिक संबंध, स्थापना मामलों और मानव संसाधन सेवाओं की आईटी सक्षमता में सहयोगी रहीं। वह कॉनकॉर की चार संयुक्त उद्यम/सहायक कंपनियों के निदेशक मंडल में भी रही हैं। उन्होंने कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति लाभ प्रदान करने के लिए कॉनकॉर के कल्याण ट्रस्ट के सचिव के रूप में भी काम किया है। उन्होंने एंटवर्प पोर्ट, बेल्जियम में लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में और सिंगापुर और मलेशिया में स्ट्रैटिजिक मानव संसाधन में प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

केन्द्रीय भंडारण निगम परिवार निदेशक (कार्मिक) के पद पर कार्यभार संभालने के लिए उन्हें अपनी हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता है और आशा करता है कि आपके मार्गदर्शन में निगम प्रत्येक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

निदेशक (कार्मिक) की ओर से.....

केंद्रीय भंडारण निगम की 'भंडारण भारती' पत्रिका के इस नवीनतम अंक 'भंडारण विशेषांक' के माध्यम से मेरा पहली बार आपसे परिचय हो रहा है। मुझे यह जानकर गर्व की अनुभूति हो रही है कि यह उत्कृष्ट स्तर की पत्रिका अनेक मंचों से सम्मानित होती रही है। यह पत्रिका निगम के विविध कार्यों की जानकारी देने सहित राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य को भी पूरा करती है।

आप जानते हैं कि निगम की स्थापना 02 मार्च, 1957 को हुई थी। प्रसन्नता की बात है कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी निगम के सभी कार्यालयों में निगम का 67वां स्थापना दिवस अत्यंत उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर हम निगम द्वारा अब तक किए गए कार्यों को याद करते हुए भविष्य की योजनाओं को पूरा करने का संकल्प लेते हैं। निगम ने न केवल अपने उद्देश्य को प्राप्त किया अपितु अपने व्यवसाय का विकास और विस्तार भी किया है। निगम खाद्यान्नों के वैज्ञानिक भंडारण के साथ-साथ किसानों के हितों के लिए कार्य करते हुए देश की अर्थव्यवस्था में तो अपना योगदान दे ही रहा है, साथ ही किसानों को भंडारण तकनीकों के बारे में राजभाषा हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से प्रशिक्षण देकर अपने दायित्वों का पालन भी कर रहा है। यह अपनी मजबूत विविधीकरण योजना के साथ और ऊंचाइयां छूने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत खुशी हो रही है कि "भंडारण भारती" को सदैव की तरह इस वर्ष भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा वर्ष 2022 हेतु श्रेष्ठ पत्रिका पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, निगम के निगमित कार्यालय को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु लगातार दो वर्ष के लिए तथा हमारे 03 क्षेत्रीय कार्यालयों को भी प्रशासनिक मंत्रालय द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। साथ ही, हमारे निगम को प्रशासनिक मंत्रालय द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा हेतु लगातार दो वित्त वर्ष के लिए 'प्रथम पुरस्कार' प्रदान किया गया जो हम सभी के लिए गौरव की बात है।

निगम अपनी व्यावसायिक एवं अन्य गतिविधियों सहित राजभाषा के क्षेत्र में भी सभी सरकारी अपेक्षाओं का अनुपालन कर रहा है। मुझे विश्वास है कि निगम के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी इसके उद्देश्य और लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए तथा टीम भावना के साथ प्रतिबद्धता एवं समर्पण से इस संगठन के विकास हेतु तत्परता से कार्य करते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

संगीता

संगीता रामरख्यानी
निदेशक (कार्मिक)



प्रस्तावना

‘भंडारण भारती’ पत्रिका का यह अंक ‘भंडारण विशेषांक’ के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका में भंडारण से संबंधित विषयों पर प्रमुखता से लेख प्रकाशित किए गए हैं। निगम अपने मुख्य व्यवसाय के साथ-साथ निगमित सामाजिक दायित्व, सूचना तकनीक, डिजीटलीकरण, मानव संसाधन विकास एवं राजभाषा के क्षेत्र में भी अपनी भूमिका निभाता रहा है।

हमारा निगम खाद्यान्नों को सुरक्षित एवं वैज्ञानिक भंडारण के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। निगम डब्ल्यू.डी.आर.ए. की नेगोशिएबल वेअरहाउस रसीद प्रणाली के माध्यम से किसानों को ऋण प्रदान करके किसानों के हित में कार्य कर रहा है। निगम राजभाषा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसका परिणाम यह रहा है कि विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों एवं वेअरहाउसों में संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के अवसर पर समिति द्वारा राजभाषा में किए गए कार्यों पर संतोष व्यक्त किया गया तथा मंत्रालय एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से निगम को राजभाषा कार्यान्वयन एवं पत्रिका के श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए पुरस्कृत भी किया गया है।

इस पत्रिका में भंडारण से संबंधित विषयों की ज्ञानवर्धक जानकारियां मिलेंगी। मैं राजभाषा अनुभाग सहित इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि इस पत्रिका के माध्यम से हम निरंतर आपको नई एवं विभिन्न गतिविधियों की जानकारियाँ पहुंचाते रहेंगे। निगम न केवल अपने व्यावसायिक अपितु राजभाषा के क्षेत्र में भी उच्चतम शिखर को प्राप्त कर सके, इसके लिए हम पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध एवं प्रयासरत हैं।

शुभकामनाओं सहित।

(अनिल माणिक राव)
समूह महाप्रबंधक (प्रणाली/कार्मिक)



संपादकीय

‘भंडारण भारती का यह अंक ‘भंडारण विशेषांक’ के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। निगम अपने मुख्य व्यवसाय वैज्ञानिक भंडारण की सेवाओं एवं उससे संबंधित जानकारियों और सूचनाओं को इस पत्रिका के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत रहा है। इसी उद्देश्य को साथ लेकर चलते हुए यह अंक भंडारण विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है जो आपके समक्ष प्रस्तुत है।

चूंकि भंडारण एक महत्वपूर्ण कार्य है, अतः इसके दृष्टिगत इस अंक में भंडारण के विभिन्न पहलुओं से संबंधित आलेख प्रमुखता से प्रकाशित करके इस पत्रिका को और अधिक उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है। भंडारण विषयों के अतिरिक्त पत्रिका की परंपरा को बनाए रखते हुए इस अंक में साहित्यिकी, कविताएं एवं सामान्य लेख आदि स्थायी स्तंभों के साथ पर्यटन आदि से जुड़े लेख भी नवीनतम रूप से प्रकाशित किए गए हैं। छमाही के दौरान निगम की विभिन्न गतिविधियों की झलक सहित संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षणों से संबंधित झलकियां, स्थापना दिवस एवं उसके उपलक्ष्य में अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित हुए सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन तथा निगम के सेवा विस्तार से संबंधी फोटोग्राफ भी इस पत्रिका में प्रमुखता से प्रकाशित किए गए हैं।

कलम के धनी रचनाकारों से अनुरोध है कि अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाओं से भंडारण भारती के नियमित प्रकाशन में अपना योगदान जारी रखें ताकि पत्रिका के माध्यम से निगम के कार्मिकों में सृजनात्मक प्रतिभा प्रोत्साहित होती रहे। पत्रिका के सभी पाठकों से उनके बहुमूल्य एवं उपयोगी सुझावों की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है जिससे हम पत्रिका को और अधिक रोचक, पठनीय एवं समृद्ध बना सकें।

शुभकामनाओं सहित।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

मिलेट्स अर्थात "मोटा अनाज": एक विश्लेषण

वरुण भारद्वाज *

मिलेट्स, नाम तो सुना होगा। साधारण बोलचाल की भाषा में मिलेट्स को मोटा अनाज कहा जाता है। यह आजकल खूब चर्चा में है। साल 2023 को यूएन ने 'इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स' घोषित किया है। आखिर ऐसा क्या है इस मिलेट्स यानि मोटे अनाज में जो इसे सुपरफूड की कैटेगरी में लाकर खड़ा करता है। आज जिस मोटे अनाज की चर्चा हो रही है, वह भारत के लिए नया बिल्कुल नहीं है। ज्वार के सबूत तो भारत में हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों में भी मिले हैं। अपने देश में 3000 से 5000 साल पहले से इन मिलेट्स के खाए जाने के प्रमाण मौजूद हैं। चूंकि ये हमारे लिए, हमारे पाचन तंत्र के लिए, हमारी रगों में बहते खून के लिए, हमारे एंजाइम्स और हार्मोंस के लिए, हमारी जीभ के लिए, सीधे कहें तो हमारे डीएनए के लिए नए नहीं हैं। हमारा शरीर इन्हें अच्छी तरह पहचानता है। पहले मिलेट्स को कदन्न यानी गरीबों का अन्न कहते थे।

मिलेट में मुख्यतः ज्वार, बाजरा, रागी (मडुआ), झंगोरा, बैरी, कंगनी, कुटकी (लघु धान्य), कोदो, चेना (चीना), सामा या सावा और जौ आदि आते हैं। पीएम मोदी ने बताया कि कर्नाटक में मोटे अनाज को सिसी धान्य कहते हैं। यहां के लोगों की भावनाओं का सम्मान करते हुए इसे श्री अन्न नाम दिया गया है। इससे



पहले भी हमारे प्राचीनतम साहित्यों में श्री अन्न का उल्लेख मिलता है। कालिदास ने अपने अभिज्ञान शाकुंतलम में फॉक्सटेल मिलेट यानी कंगनी का उल्लेख किया है। उन्होंने अपनी इस रचना में ऋषि कण्व को राजा दुष्यंत के दरबार में शंकुतला को विदा करते हुए कंगनी डालते हुए दिखाया है, यहां कंगनी के जरिए शुभ प्रकृति को इंगित किया गया है।

भारत हमेशा से ही कृषि प्रधान देश रहा है। पिछले कुछ सालों में ही यहां गेहूं-चावल खाने का चलन बढ़ा है, लेकिन इससे पहले भारत देश मोटे अनाज से समृद्ध था। भारत में 60 के दशक में मिलेट का उत्पादन कम हुआ और उसकी जगह भारतीयों की थाली में गेहूं और चावल सजा दिए गए। 1960 के दशक में हरित क्रांति के नाम पर भारत के परंपरागत भोजन को हटा दिया गया। गेहूं को बढ़ावा दिया गया। मोटा अनाज खाना बंद कर देने से कई तरह के रोगों के साथ ही देश में कुपोषण भी बढ़ा है।

मिलेट्स की विशेषताएँ

मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, सावा, कंगनी, चीना, कोदो, कुटकी और कुट्टू को मिलेट क्रॉप कहा जाता है। मिलेट्स को सुपर फूड भी कहा जाने लगा है, क्योंकि इनमें पोषक तत्व अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में होते हैं। मोटे अनाज या 'मिलेट्स' (Millets) में विशेष पोषक गुण (प्रोटीन, आहार फाइबर, सूक्ष्म पोषक तत्वों और एंटीऑक्सिडेंट से समृद्ध) पाए जाते हैं। भारतीय मिलेट्स अनुसंधान संस्थान के अनुसार, रागी यानी फिंगर मिलेट में कैल्शियम की मात्रा अच्छी होती है। प्रति 100 ग्राम फिंगर मिलेट में 364 मिलिग्राम तक कैल्शियम होता है। रागी में आयरन की मात्रा भी गेहूं और चावल से ज्यादा होती है।

मोटे अनाज की फसल को उगाने के फायदा यह है कि इसे ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती है। यह पानी की कमी होने पर खराब नहीं होती है और ज्यादा बारिश होने पर भी इसे ज्यादा नुकसान नहीं होता है। मोटे अनाज की फसल खराब होने की

* सहायक प्रबन्धक (राजभाषा एवं क्रय), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली



हिसाब से खुद को ढाल लेते हैं, इसलिए इन्हें स्मार्ट अनाज भी कहते हैं।

दुनियाभर में बढ़ती जनसंख्या, झगड़े, सूखा, बाढ़ आदि की वजह से खाद्यान्न की कमी अब आम बात हो गई है। भारत इसमें मौका देख रहा है। भारत में मोटे अनाज का उत्पादन बड़े पैमाने पर हो सकता है। चूंकि इसमें सिंचाई की बहुत

स्थिति में भी पशुओं के चारे के काम आ सकती है। बाजरा और ज्वार जैसी फसलें बहुत कम मेहनत में तैयार हो जाती हैं। इसके साथ ही मोटे अनाज वाली फसलों में रसायनिक उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग करने की जरूरत भी नहीं होती है। इसके साथ ही इन फसलों के अवशेष पशुओं के चारे के काम आते हैं। इसलिए इनको धान की पराली की तरह जलाना नहीं पड़ता और पर्यावरण प्रदूषण से भी बचा जा सकता है।

मोटे अनाज को विभिन्न प्रकार की मृदा और जलवायु दशाओं में उगाया जा सकता है, जिससे वे किसानों के लिये एक बहुमुखी फसल विकल्प का निर्माण करते हैं। मोटे अनाज प्रायः पारंपरिक कृषि विधियों का उपयोग कर उगाये जाते हैं, जो आधुनिक, औद्योगिक कृषि पद्धतियों की तुलना में अधिक संवहनीय तथा पर्यावरण के दृष्टिकोण से अनुकूल हैं।

चूंकि इन फसलों की बुआई, सिंचाई से लेकर पकने तक में ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती, इसलिए ये पानी की खपत भी कम करते हैं। वहीं, भारत जैसे देश के लिए यह ज्यादा लाभकारी इसलिए हो जाता है क्योंकि देश की कुल 140 मिलियन हेक्टेयर खेती लायक भूमि में से करीब 51 फीसदी यानी 72 मिलियन हेक्टेयर भूमि सीधे मॉनसून यानी वर्षा पर निर्भर है। कई बार मॉनसून समय पर रहता है तो कई बार नहीं। कई बार कई क्षेत्र सूखे रह जाते हैं। ऐसे में उन जगहों पर बाजरा, रागी और ज्वार की खेती की जा सकती है। चूंकि ये शुष्क वातावरण में भी उग जाते हैं और मनमाफिक बारिश हो जाए तो बढ़िया फसल होती है, लेकिन उगते दोनों परिस्थितियों में हैं यानि मौसम के

ज्यादा जरूरत नहीं होती। इसलिए यह खाद्य संकट का एक हल भी हो सकता है।

मिलेट्स खाने के फायदे

पूरी दुनिया पिछले कुछ दशकों में लाइफस्टाइल से जुड़ी समस्या से दो-चार हो रही है। ये बीमारियां ज्यादातर हमारे गलत खानपान की वजह से हो रही हैं। हम जंक फूड (नूडल्स, पिज्जा, बर्गर आदि) का बहुत ज्यादा सेवन कर रहे हैं। इनमें फाइबर की मात्रा बहुत ही कम होती है। वहीं मिलेट्स में अच्छे फाइबर की अधिकता होती है। इससे लाइफस्टाइल की परेशानी को कम करने में काफी मदद मिलेगी।

मिलेट्स पोषक तत्वों की कमी को दूर करने में लाभप्रद है। चाहे मेजर मिलेट्स हों या फिर माइनर मिलेट, ये चावल या गेहूं से किसी भी मायने में कम नहीं हैं। इनमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, कैल्शियम और आयरन से लेकर तमाम तरह के पोषक तत्व मिलते हैं। सीधे कहें तो एक हेल्दी थाली बनाने में ये अहम भूमिका निभा सकते हैं। चूंकि इसमें कीड़े भी कम लगते हैं, इसलिए पेस्टिसाइड भी बहुत कम डाला जाता है। साथ ही इसके लिए रासायनिक खाद आदि का इस्तेमाल भी कम करना पड़ता है। ये इस लिहाज से भी बेहतर है।

चूंकि इनमें ग्लूटन नहीं होता यानी ऐसे लोग जिन्हें ग्लूटन पचाना मुश्किल होता है, उनके लिए मिलेट्स बेहतर हैं।



दरअसल, ग्लूटन गेहूं और जौ में मौजूद ऐसा प्रोटीन है जिसे पचाना कुछ लोगों के लिए मुश्किल होता है। इन वजहों से शर्खस को लगातार गैस, अपच, सिर दर्द आदि की परेशानी होती है। दूसरी तरफ मिलेट्स धीरे-धीरे पचते हैं। इसलिए इन्हें खाने के बाद शरीर में शुगर का स्तर अचानक नहीं बढ़ता, जबकि चावल और रोटी शरीर में पहुंचने के बाद शुगर लेवल बढ़ जाता है। मिलेट्स खाने के बाद लंबे समय तक पेट भरे रहने का आभास होता है, इसलिए मिलेट्स को शुगर के मरीज और जिन्हें अपना मोटापा कम करना हो, वे भी खा सकते हैं।

मिलेट्स को बढ़ावा देने हेतु सरकारी प्रोत्साहन

मिलेट्स उत्पादक किसानों के कल्याण के लिए भारत सरकार पूरी तरह से कटिबद्ध है। मोटे अनाजों के उत्पादन और उपभोग को बढ़ावा देने के लिये सरकार द्वारा वर्ष 2007 में नेशनल मिलेट्स मिशन लॉन्च किया गया। सरकार मोटे अनाजों की खेती के लिये किसानों को उचित एमएसपी भी प्रदान कर रही है। सरकार ने मोटे अनाजों को सार्वजनिक वितरण प्रणाली में शामिल किया है ताकि इसे आम लोगों के लिये सुलभ और सस्ता बनाया जा सके। सरकार मोटे अनाजों के उत्पादन और उपभोग को बढ़ाने के लिये मोटे अनाजों की जैविक खेती को बढ़ावा दे रही है। केंद्र सरकार ने अपने बजट में मिलेट को बढ़ावा देने के लिए श्री अन्न योजना चलाई है।

केन्द्रीय भंडारण निगम भी किसानों को मोटे अनाज की उपज के लिए भंडारण प्रभार में छूट प्रदान कर रहा है। निगम किसानों को उनके भंडारण के सापेक्ष नेगोशिएबल वेअरहाउस रसीद भी जारी कर रहा है जिसको गिरवी रखकर किसान राष्ट्रीयकृत बैंकों से ऋण प्राप्त कर सकते हैं।

तथापि, वर्ष 2023 को 'इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स' के तौर पर मनाया जा रहा है। मोटे अनाज के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाई जा रही है, ताकि इसे अपनी डाइट में जोड़कर सेहत को बेहतर बनाया जा सके। गेहूं-चावल के मुकाबले मोटा अनाज उगाना और खाना दोनों ही ज्यादा सुविधाजनक है। मोटे अनाजों और उनके स्वास्थ्य लाभों के बारे में जागरूकता की कमी को शिक्षा एवं प्रचार-प्रसार के माध्यम से दूर किया जा सकता है। मोटे अनाज प्रायः अन्य प्रधान अनाजों की तुलना में अधिक महँगे होते हैं, जिससे वे निम्न आय वाले उपभोक्ताओं के लिये कम सुलभ होते हैं। सरकारी सब्सिडी या बाज़ार के हस्तक्षेप से इससे आम जन के मिलेट्स उपभोग में वृद्धि की जा सकती है।

नमस्ते / नमस्कार

अशोक अरोड़ा *

भारत की अनेकों परम्पराएं गौरवशाली
नमस्ते/नमस्कार की शान है निराली
नमस्ते शब्द संस्कृत के "नमः+ते" से बना
जिसका शाब्दिक अर्थ है आपको नमन करना
नमस्ते है पूरा वाक्य, संज्ञा है नमस्कार
इन दोनों शब्दों का एक ही है सार
दोनों हाथ जोड़कर हृदय के पास रखते हैं
थोड़ा सर झुका कर नमस्ते बोलते हैं
मान्यता है हर व्यक्ति में ईश्वर का अंश होता है
नमस्ते कर शीश झुकाने से ईश्वर को नमन होता है
थोड़े समय में कर सकते है बहुत लोगों का अभिवादन
एक ही शब्द से काम चलता सुबह, शाम, रात हो या दिन
नमस्ते में किसी दूसरे के साथ कोई स्पर्श नहीं
वायरस या संक्रमित बीमारी का खतरा नहीं
कोई भेदभाव नहीं हर क्षेत्र भाषा के लिए एक सार
भारत ही नहीं बहुत से देशों ने इसकी महत्ता को किया स्वीकार
बहुमुखी कार्य सम्पादित होते द्वारा नमस्ते/नमस्कार
स्वागत, आदर, विदाई, अभिनंदन, पूजा और आभार
नमस्ते शास्त्रीय नृत्य, योग और धार्मिक अनुष्ठानों का भाग है
उत्तम ऊर्जा का होता संचार, दिल से कर पाते लोगों से संवाद है
अहंकार रहता दूर, बुद्धि निर्मल, शांत होता तन और मन
नमस्ते है अभिवादन, अध्यात्म और योगासन का अद्भुत मिलन

* प्रबंधक (सेवानिवृत्त), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

सच्ची खुशी

मीनाक्षी गंभीर *

एक दिन बैठी थी यूँ ही, कई दिनों से एक बड़ी खुशी का इंतजार था तैयारी भी कर रही थी, सोच रही थी कि क्या-क्या करूँगी जब वो आएगी, नाचूँगी, गाऊँगी खूब धूम मचाऊँगी। फिर एक दिन अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई, मैंने पूछा कौन है? आवाज आई मैं खुशी हूँ पर हाँ थोड़ी छोटी हूँ, वो नहीं जिसकी राह तुम ताक रही हो, पर हूँ तो खुशी ही, कहो तो अंदर आ जाऊँ? मैं बोली जरा रुको कुछ काम खत्म कर लूँ और बड़ी खुशी के आने का इंतजाम कर लूँ। फिर मैं इतनी व्यस्त हो गई कि उसे भूल ही गई। उसने फिर दस्तक दी और बोली अंदर तो आने दो चाहे स्वीकार न करना। मैं खीज कर बोली, तुम बाद में आना अभी बहुत काम बाकी हैं। छोटी खुशी बोली मैं तो रोज आती हूँ, दिन में कई बार तुम ही दरवाजा नहीं खोलती अब नहीं आऊँगी, कहकर वो पैर पटकते हुए बच्चों के जैसे चली गई। कई बरस बीत गए बड़ी खुशी नहीं आई और दिल जैसे तरस गया उसके इंतजार में। फिर एक दिन सपनों में मिली उस बड़ी खुशी से। मैंने पूछा, तुम मेरे घर क्यों नहीं आई, मैंने खूब तैयारी भी की थी तुम्हारे आने की। वह बोली – अरे तुमने पहचाना नहीं, आई थी, कई बार आई थी पर तब मेरा कद शायद छोटा था और तुमने आने भी तो नहीं दिया, पर किसी और ने खुली बाहों से मुझे अपनाया और देखो आज कितनी बड़ी हो गई हूँ। अचानक से मेरी आँख खुली और मैं पसीने-पसीने होकर उठ बैठी, भाग कर दरवाजा भी खोला पर कोई नहीं था। आज मेरा दिल और दरवाजा दोनों खुले हैं, पर कोई दस्तक नहीं देता।

जब कभी मैं खुशी के बारे में सोचती हूँ तो मुझे एक मूवी का डायलॉग याद आ जाता है। **“आज खुश तो बहुत होंगे तुम।”** संसार में हर इंसान अपना जीवन खुशी से जीना चाहता है और चाहे भी क्यों न? हर किसी को एक खुशहाल जीवन जीने का अधिकार जो है, पर हर किसी के लिए खुशी की परिभाषा अलग-अलग होती है। कुछ दूसरों की खुशी में अपनी खुशी ढूँढते हैं, तो कुछ अपने बटुए को पैसों से भरा हुआ देखकर खुश होते हैं। कुछ दोस्तों के साथ मौजमस्ती करके खुश रहते हैं, तो कुछ परिवार के साथ सौहार्दपूर्ण समय बिताकर। हम कह सकते हैं, हर इंसान का जीवन एक तलाश है, खुशी पाने के लिए एक

अनवरत खोज। हमारे अंदर ही वो जादुई शक्ति मौजूद है कि हम जो चाहे हासिल कर सकते हैं, यह सब हमारे हाथ में है। खुशी, संतुष्टि और आनंद सब हमारे भीतर ही छुपा हुआ है, सिर्फ जरूरत है उसे ढूँढ निकालने की। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कौन हैं और किस अवस्था में हैं, यदि हम चाहें तो सकारात्मक सोच से खुशी को अपने अंदर ही महसूस कर सकते हैं।

दैनिक जीवन में एक सवाल से हम सबका सामना अक्सर होता है— आप कैसे हैं? लगभग हर व्यक्ति अपने परिचित से मिलने पर यह सवाल करता ही है और इसके जवाब भी लगभग एक से ही मिलते हैं— मजे में हैं, आनन्द में हैं, ठीक हैं, सब बढ़िया वगैरह-वगैरह। क्या इन सभी जवाबों का मतलब एक समान ही होता है? शब्द-शब्द का भेद है और हर एक शब्द मायने रखता है, अर्थ को बदलने, अपने प्रयोग से एक ही वाक्य के कई अर्थ प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है।

कुछ लोग सोचते हैं कि यदि मुझे ये मिल जाए या मुझे वो हासिल हो जाए तो मैं खुश हो जाऊँगा। लेकिन ऐसे व्यक्ति कभी भी खुश नहीं रह सकते जो अपने वर्तमान से असंतुष्ट हैं और सदैव भविष्य में ही अपनी खुशियाँ तलाश करते रहते हैं। जरूरत है तो केवल एक सकारात्मक रवैया अपनाने की और आप हमेशा संतुष्टि का अनुभव कर सकते हैं। कहीं भविष्य में खुशियाँ ढूँढने के चक्कर में आप अपना वर्तमान उदास और दुखी मन से ना गुजार दें शायद आपको विश्वास नहीं होगा पर यह सच है कि जैसा रवैया आप दूसरों के लिए अपनाते हैं वो आप को भी कहीं ना कहीं प्रभावित करता है। जो चीज आपको अच्छी लगती है वो उन्हे भी अच्छी लगेगी, जो बात आपको बुरी महसूस होती है वो उन्हे भी होगी। अपने व्यवहार में थोड़ा-सा बदलाव आपको ढेरों खुशियाँ दे सकता है क्योंकि आपका आंतरिक दृष्टिकोण ही आपके अंदर सच्चे मायने में खुशी की भावना का एहसास कराता है। जो हमेशा नकारात्मक सोच लेकर चलते हैं, वो कभी भी सच्ची खुशी का आनंद नहीं उठा सकते हैं क्योंकि वो चाहे कुछ भी हासिल कर लें उन्हे हमेशा और अधिक पाने की इच्छा रहेगी

* प्रधान निजी सचिव, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय, नई दिल्ली



और वो असंतुष्ट ही रहेंगे। वो केवल उदासीनता को ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उन्हें इस बात का एहसास भी नहीं होता और वो अपने नकारात्मक नजरिये के कारण मिलती हुई खुशी को भी नजरअंदाज कर देते हैं।

आप जैसा सोचते हैं और जैसा व्यवहार करते हैं वो घूम कर आपके पास ही वापस आता है। क्या खुशियों को आकर्षित किया जा सकता है? दूसरों के साथ खुशियाँ बांटने से आप खुद के अंदर खुशी को महसूस कर सकते हैं। आप माने या ना माने पर यदि आप दूसरों की बुरी लगने वाली बातों को नजरअंदाज कर दें और सिर्फ यह सोचे कि मैं दुनिया का सबसे खुशनसीब इंसान हूँ, तो आप चाहे कुछ हो जाए, सदैव खुश रहेंगे। केवल एक सकारात्मक सोच अपनाने की आवश्यकता है। अपनी स्वार्थी इच्छाओं का त्याग कर दें और यह सोचना छोड़ दें कि आप ही सबकुछ हैं और फिर देखें कि आपके इस जरा से बदलाव ने आपकी पूरी जिंदगी को ही बदल डाला है। खुशियाँ तो आपकी ओर आकर्षित हुए बिना रह ही नहीं सकती हैं, क्योंकि आपके भीतर महसूस होने वाली खुशी के लिए आपका मन ही जिम्मेदार है। “सारे दुख दूर हो जाने के बाद मन प्रसन्न होगा यही तो भ्रम है, वास्तविकता ये है मन प्रसन्न रखो तो सारे दुख दूर हो जाएँगे” तो आज से आनंद उठाना शुरू कर दें इस जादूई शक्ति का, बस अपने जीवन में एक सकारात्मक नजरिया अपना कर। हर दिन के हर सेकंड के लिए आभारी रहें जो आपको उन लोगों के साथ बिताने को मिले जिन्हें आप प्यार करते हैं। हर बार जब आप किसी को देखकर मुस्कराते हैं, तो यह प्रेम की क्रिया है, उस व्यक्ति के लिए एक उपहार है, एक खूबसूरत चीज है।

हम हमेशा से सुनते आए हैं कि दूसरों की खुशी में खुश रहना सीखना चाहिए। पर दूसरों की खुशी के साथ-साथ अपनी खुशी को महत्व देना भी जरूरी है। और इसके लिए आपको मजबूती से पक्ष रखना सीखना होगा, फिर वो चाहे दोस्त हों, परिवार हो या जीवनसाथी। अगर दूसरों के लिए अपनी इच्छाएं और मन मारेंगे, तो सुख कहां से प्राप्त होगा। अगर कोई आपको कमजोर और अधीन महसूस कराए, तो कमजोर ना पड़ें। सुखी रहने के लिए सबका खयाल रखना जरूरी है, वैसे ही अपनों से प्रेम और सराहना मिलना भी खुशी का एक जरिया है। अगर हम अपना पक्ष रखते हैं, तो हम स्वार्थी या अपरिपक्व नहीं हैं। ये हमारा अधिकार है। बड़प्पन दिखाने के मकसद में अपने हाथों सब गंवाना भी सही नहीं है। अगर हम पहले खुद के लिए सोचते हैं और जरूरत पड़ने पर अपने लिए बोलते हैं, तो ये गुनाह नहीं मानवाधिकार है। लोगों को पता होना चाहिए कि अगर आप

उनका ध्यान रख रहे हों, तो वे आपका ध्यान रखें या ना रखें, लेकिन आपकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचा सकते। उन्हें कोई अधिकार नहीं है कि वो आपका निरादर करें। उन्हें ऐसा करने से रोकने और आत्मसम्मान के लिए खड़े होने का अधिकार आपको है। सीधी बात है कि अपनी बात रखना मानवाधिकार है। इसे स्वार्थ ना समझें क्योंकि ये मुद्दा आत्मसम्मान का भी है।

हम सभी चाहते हैं कि हमारी लाइफ में खुशियां हों क्योंकि खुशियों के बिना हमारी जिन्दगी एक मुरझाये हुए फूल की तरह है। दोस्तों, खुशियां उस बरसात की तरह हैं जो हमारी बंजर पड़ी जमीन में फूल खिला सकती है। सभी खुश रहना चाहते हैं और इसके लिए प्रयास करते रहते हैं। खुशी को दूढ़ते रहते हैं पर खुशियां नहीं मिलतीं। खुशियों को खरीदा नहीं जा सकता क्योंकि इसके लिए कोई दुकान नहीं है। आप खुशियों का बहाना ढूँढ सकते हैं लेकिन वास्तविक खुशी आपको कैसे मिलेगी? उस खुशी का संबंध आत्मा से होता है, इसको केवल अनुभव किया जा सकता है। सच्ची खुशी एक ऐसा अनुभव है जिसे हम पैसा देकर बाजार से नहीं खरीद सकते अथवा बगीचे के किसी फूल की तरह उसे पेड़ों पर नहीं पा सकते। यह वातावरण में नहीं उड़ती, न ही नव वृक्षों के झूमते हुये पत्तों पर लगती हैं, न ही इसे देश-विदेश में कहीं भी और कुछ भी मूल्य देकर पाया जा सकता है।

Happiness and Freedom begin with a clear understanding of one principle. Some things are within your control and some things are not.

— Epictetus

खुशी और स्वतंत्रता एक सिद्धांत की स्पष्ट समझ के साथ शुरू होती है। कुछ चीजें आपके नियंत्रण में होती हैं और कुछ चीजें आपके नियंत्रण में नहीं होती हैं।

— एपिक्टेटस

**ना भाग बड़ी खुशी के पीछे
छोटी-छोटी खुशी में ही जिन्दगी है
कहीं इंतजार इतना लंबा न हो जाये
बड़ी खुशी के पीछे जिन्दगी बीत जाये**

कदन्न फसलों को हानि पहुंचाने वाले पादप परजीवी सूत्रकृमि एवं प्रबंधन

राशिद परवेज *

कदन्न को अंग्रेजी में मिलेट कहते हैं। छोटे आकार के बीज (अनाज) को भी मिलेट कहा जाता है। यह बहुत ही ज्यादा पौष्टिक आहार होता है। कदन्न मानव के साथ-साथ जानवरों के लिए भी एक पौष्टिक आहार है। कदन्न फसलों की खेती भारत के लगभग सभी राज्यों में की जाती है। इन फसलों की खेती में कम लागत तथा वह क्षेत्र जहां खेती के लिए विकल्प सीमित होने के कारण इन फसलों की खेती छोटे और सीमांत किसानों द्वारा की जाती है। कदन्न फसलों की खेती लगभग 60-65 दिनों की छोटी अवधि में पर्याप्त उपज देने में सक्षम हैं। वर्तमान में ये आजीविका सहायक फसलें लगभग 2.6 मिलियन हेक्टेयर में उगाई जाती हैं, जिनमें से अकेले रागी का लगभग 59 प्रतिशत क्षेत्र और 3/4 से अधिक उत्पादन होता है। इन फसलों का उपयोग मुख्य रूप से मानव उपभोग के लिए भोजन के रूप में होता है। मानव के साथ-साथ इन फसलों का उपयोग मवेशियों को अच्छी गुणवत्ता वाला चारा प्रदान करने के लिए किया जाता है।

प्रोटीन, खनिज और विटामिन के मामले में चावल और गेहूं से अधिक पौष्टिक होने के कारण उन्हें पोषक अनाज के रूप में माना जाता है। यह विभिन्न प्रकार की कृषि-पारिस्थितिक स्थितियों जैसे मैदानी इलाकों, तटीय क्षेत्र और पहाड़ी क्षेत्रों में इन फसलों की खेती की जाती है। भारत के साथ-साथ दुनिया में कदन्न फसलें उगाने वाले क्षेत्रों में पादप परजीवी सूत्रकृमि इन फसलों को आर्थिक हानि पहुंचाते हैं। अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार इन फसलों में सूत्रकृमियों के कारण होने वाले फसल नुकसान अनुमानित वार्षिक उपज हानि (11.8%) का आकलन किया गया था।

सूत्रकृमि सूक्ष्म आकार, बेलनाकार, रंगहीन तथा धागेनुमा होते हैं। प्रायः इन्हें नग्न आंखों से नहीं देखा जा सकता है। इन्हें देखने के लिये विशेष प्रकार के सूक्ष्मदर्शी की आवश्यकता होती है। यह मुख्यतः मिट्टी में 5 - 35 सेमी. तक की सतह पर पाये जाते हैं। यह पौधों की जड़ों को बाहर तथा अन्दर दोनों प्रकार से

हानि पहुंचाते हैं। इनकी उपस्थिति एक निश्चित संख्या से अधिक होने पर पौधों को पानी तथा अन्य पोषक तत्वों को प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न होती है।

हालांकि कदन्न फसलों की उपज को प्रभावित करने वाले पादप परजीवी सूत्रकृमियों पर बहुत कम ध्यान दिया गया, परन्तु इन फसलों में कई सूत्रकृमियों की उपस्थितियों को दर्ज किया गया है, जिनमें से कुछ पादप परजीवी सूत्रकृमि इन फसलों को आर्थिक हानि पहुंचाते हैं। इनमें से पुट्टी सूत्रकृमि (हैटरोडेरा स्पी.), गुर्दाकार सूत्रकृमि (रोटाइलेंक्योलस रेनिफोर्मिस), जड़ गाठ सूत्रकृमि (मेलेडोगाईन स्पी.), फोलियर सूत्रकृमि (एफ्लेंकोईडिस स्पी.), तथा लीजन सूत्रकृमि (प्राटाइलेंकस स्पी.) महत्वपूर्ण हैं। कुछ अन्य पादप परजीवी सूत्रकृमि, हेलीकोटाईलेंकस स्पी., मैक्रोपोस्थोनिया स्पी., टाइलेंकोरिहंकस स्पी., ट्राइकोडोरस स्पी., क्रिकोनिमोइड्स ऑर्नाटस, होप्लोलेमस इंडिकस, क्रिकोनिमेलॉ ऑर्नेट, कैलोसिया एक्सिलिस, हेमिसाइकिलॉफोरा स्पी., हिर्शमानिएला ओराईजी एवं हेमिक्रिकोनमोइडिस कोकोफिलस आदि भी कदन्न की फसलों में विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा रिपोर्ट किए गए हैं। इन हानिकारक सूत्रकृमियों के बारे में जानकारी न होना इस समस्या को और भी भयावह बना देता है। अतः प्रस्तुत लेख में कदन्न फसलों को हानि पहुंचाने वाले आर्थिक महत्वपूर्ण सूत्रकृमि एवं उनके प्रबंधन का वर्णन किया गया है।

पुट्टी सूत्रकृमि (हैटरोडेरा स्पी.)

भारत में रागी फसल से सर्वप्रथम पुट्टी सूत्रकृमि को वर्ष 1972 में बेंगलूर से चिन्हित करके शेटी द्वारा वर्ष 1975 में रिपोर्ट किया गया था। हैटरोडेरा स्पी. हैटरोडेरेडे परिवार के अंतर्गत सूत्रकृमि की एक उपजाति है। यह सूत्रकृमि परजीवी है और फसलों को अक्सर बड़ी आर्थिक क्षति पहुंचाते हैं। मादा की कठोर, भूरे, पुट्टी में बदलने की क्षमता के कारण यह सूत्रकृमि अद्वितीय है जो अपने शरीर के भीतर बनने वाले अंडों की रक्षा करता है। मादाएं,

* प्रधान वैज्ञानिक, सूत्रकृमि संभाग, भाकृअनुप - भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली



हालांकि, सफेद या पीले, नींबू के आकार या गोलाकार 0.5–1.0 मिमी की होती हैं। इसके नर बेलनाकार होते हैं। हैटरोडेरा नाममादा और पुट्टी की विभिन्न खालों को संदर्भित करता है। पुट्टी सूत्रकृमि मुख्य रूप से फसलों के पौधों की जड़ों से जुड़े होते हैं। इनसे संक्रमित होकर पौधे कमजोर हो जाते हैं, और अक्सर बौने और बदरंग हो जाते हैं तथा तेज धूप में मुरझा सकते हैं। जड़ प्रणाली आमतौर पर क्षीण हो जाती है, सामान्य जड़ गतिविधि में कमी या हानि की भरपाई करने के प्रयास में पौधे अक्सर मिट्टी की सतह के करीब नई जड़ों का एक द्रव्यमान विकसित करते हैं। पुट्टी सूत्रकृमि की दूसरी अवस्था के शिशु पौधों की नई जड़ों पर आक्रमण करते हैं। जड़ों में प्रवेश करने के बाद प्रत्येक सूत्रकृमि नई जड़ को अपने भोजन के लिए चिन्हित करता है। पुट्टी सूत्रकृमि जायंट कोशिकाओं के विकास को प्रेरित करता है जो जड़ के भीतर सामान्य संवहनी गतिविधि को बाधित करता है। यह सूत्रकृमि रागी के अतिरिक्त अन्य कदन्न फसलों को भी अत्याधिक हानि पहुंचाता है।

गुर्दाकार सूत्रकृमि (रोटाइलेंक्योलस रेनिफोर्मिस)

गुर्दाकार सूत्रकृमि (रोटाइलेंक्योलस रेनिफोर्मिस) को चंद्रशेखरन ने वर्ष 1964 में रागी फसल में चिन्हित किया तथा यह देखा कि अगर इस सूत्रकृमि की संख्या एक सीमा से अधिक होती है तभी पौधों की ऊंचाई तथा अनाज की उपज में कमी होती है। गुर्दाकार सूत्रकृमि कदन्न फसलों की अधिकांश फसलों को क्षति पहुंचाते हैं। गुर्दाकार सूत्रकृमि संक्रमित पौधों में सामान्य लक्षण स्टंटिंग और जड़ों पर भूरे से काले रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। गुर्दाकार सूत्रकृमि की अपरिपक्व मादा स्पिराल या सी-आकार की होती है। यह लगभग 0.3 से 0.5 मिलीमीटर लंबी होती है। परिपक्व मादा का गुर्दे के आकार का शरीर होता है तथा इसमें एक छोटी-सी पूंछ होती है। गोल स्टाइललेट नॉब्स के साथ एक छोटा, पतला स्टाइललेट, एक तीन-भाग घेघा, एक लंबा और संकीर्ण इस्थमस और एक अच्छी तरह से विकसित मेटाकार्पस होता है। गुर्दाकार सूत्रकृमि का नर वर्मीफॉर्म सामान्य सूत्रकृमि की तरह होता है।

जड़ गाठ सूत्रकृमि (मेलोडोगाईन स्पी.)

जड़ गाठ सूत्रकृमि की पांच प्रजातियां अर्थात् मेलोडोगाईन इन्कोगनिटा, एम. जावानिका, एम. एरेनेरिया, एम. एक्रोनिया और एम. ग्रैमिनिकोला को रागी की फसल से कृष्ण मूर्ति और इलियास ने वर्ष 1967 में रिपोर्ट किया था कि यह सूत्रकृमि मिट्टी

की ऊपरी सतह से 30 सेमी. गहराई तक बहुतायात मिलते हैं। इस सूत्रकृमि की मादा गोलाकार, अण्डे के आकार की होती है। इसके अण्डे जेलेटिन पदार्थ में एकत्रित रहते हैं। यह सूत्रकृमि एक ही फसल में कई पीढ़ियां पूरी करती है। यह सूत्रकृमि लगभग 25–30 दिन में अपना जीवनचक्र पूर्ण कर लेते हैं। इसका नर बेलनाकार, धागेनुमा होता है। इसका लार्वा (द्वितीय डिंबक) नई जड़ों को भेदकर उसके अन्दर घुस जाते हैं तथा पानी तथा भोजन ले जाने वाली कोशिकाओं को अपना भोजन बना लेते हैं। तत्पश्चात् यही सूत्रकृमि गोलाकार होकर जड़ तंत्र में गांठें पैदा कर देते हैं। यह गांठ भूरे रंग की छोटी अथवा बड़ी होती है। अत्यधिक ग्रसित पौधे में इन गांठों का आकार बड़ा होता है। जिस कारण जड़ माला के आकार की दिखाई देती है तथा जड़ें फूली हुई प्रतीत होती हैं। सूत्रकृमि द्वारा संक्रमित गांठों को जड़ों से अलग नहीं किया जा सकता। इन गांठों के कारण पौधे मृदा में पोषक तत्व एवं पानी की उपलब्धता होते हुए भी पर्याप्त मात्रा में उसे ग्रहण नहीं कर पाते जिस कारण पौधों की पत्तियां पीली पड़ जाती हैं तथा वृद्धि रुक जाती है जिससे पौधे में दुर्बलता आ जाती है। अतः पौधा बौना दिखाई देने लगता है।

फोलियर सूत्रकृमि (एफलेंकोईडिस स्पी.)

भारत में फोलियर सूत्रकृमि (एफलेंकोईडिस बेसेई) को सेटेरिया इटालिका से दवे तथा अन्य द्वारा वर्ष 1979 में रिपोर्ट किया गया था। शुक्ला तथा अन्य द्वारा वर्ष 1997 में फॉक्सटेल बाजरा के लाइट ईयर रोग के रूप में संदर्भित किया गया था। दवे तथा अन्य ने वर्ष 1979 में खेत परिस्थितियों में फॉक्सटेल बाजरा के पुष्पगुच्छों में ए. बेसेई और एक फंगस फोमा उपजाति के सहवर्ती संक्रमण को देखा, जिससे अनियमित पैच में मलिनकिरण था। ऐसे पुष्पगुच्छों में अनाज का विकास अंकित नहीं किया गया। ए. बेसेई एक बीज-जनित एक्टोपैरासाइट है जो एपिकल मेरिस्टेम के आसपास पौधों को नुकसान पहुंचाता है। अगर ए. बेसेई संक्रमित बीज को बुआई के लिए उपयोग किया जाता है तब यह सूत्रकृमि खेत में अनुकूल वातावरण मिलने पर सक्रिय हो जाते हैं और विभज्योतक क्षेत्रों की ओर आकर्षित होते हैं। पौधे के प्रारंभिक विकास के दौरान ए. बेसेई संक्रमित पौधों के पत्ते मुड़े हुए एवं कम संख्या में होते हैं। सूत्रकृमियों की संख्या में तेजी से वृद्धि, देर से जुताई के कारण भी हो सकती है। सूत्रकृमि एंथेसिस से पहले स्पाइकलेट्स में प्रवेश करने में सक्षम होते हैं। जैसे-जैसे पौधे का विकास होता है और उसमें अनाज भरना और परिपक्वता आने के साथ साथ सूत्रकृमियों का प्रजनन बंद हो जाता है। हालांकि तीसरे चरण के किशोर से वयस्क तक का विकास अगले चरण तक जारी रहता है।

प्रबंधन

कदन्न फसलों को हानि पहुंचाने वाले रोगों, कीटों एवं सूत्रकृमियों को नियंत्रण करने के लिए आमतौर पर कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। परंतु इनके अत्यधिक उपयोग ने पर्यावरण को बहुत क्षति पहुंचाई है, जिससे न केवल मानव जाति पर बुरा प्रभाव पड़ा है बल्कि खेती में उपयोग होने वाली जमीन की उर्वरकता भी कम हो गई है। अतः यह आवश्यक है कि फसलों को हानि पहुंचाने वाले रोगों, कीटों एवं सूत्रकृमियों को नियंत्रण करने के लिए जैव नियंत्रण विधियों का उपयोग ज्यादा से ज्यादा किया जाए, अतः कदन्न फसलों को हानि पहुंचाने वाले सूत्रकृमियों को निम्नलिखित जैव नियंत्रण विधियों का उपयोग करके नियंत्रण किया जा सकता है –

- कदन्न फसलों में एकल ग्लोमस फेसिकुलेटम अथवा जैव उर्वरकों के साथ संयोजन का उपयोग करके सूत्रकृमि आर. रेनिफोर्मिस, प्राटाइलेंकस जी और मेलोडोगाईन स्पी. की गुणन दर में कमी होती है।

- जैव नियंत्रण कारक स्फूडोमोनास फ्लोरेसेंस से 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से सीडलिंग रूट डिप 30 मिनट तक एवं पौधे के आधारीय मिट्टी को 2.5 किग्रा/हेक्टेयर की दर से रोपण के 30 दिनों के बाद उपचारित करके कदन्न फसलों में सूत्रकृमियों की संख्या को नियंत्रण किया जा सकता है।
- कदन्न फसलों में सूत्रकृमियों को जैव नियंत्रण कारक ट्राइकोडर्मा विरीडी 4 ग्राम/मी² की दर से पौधे के आधारीय मिट्टी को उपचारित करके कम किया जा सकता है।
- कदन्न फसलों में सूत्रकृमियों को नियंत्रण करने के लिए बुआई में उपयोग होने वाले बीजों को 3 घंटे के लिए H₂O₂ (1%) में भिगोना और उसके बाद 48°C पर 15 मिनट के लिए गर्म पानी में उपचारित करना चाहिए। बुआई में उपयोग होने वाले बीजों को 15 मिनट तक 50°C पर उपचारित करके सूत्रकृमियों की संख्या को नियंत्रण किया जा सकता है।

ये देश हमें बदलना होगा

* इंदु रानी

ये देश हमें बदलना होगा,
प्रगति पथ पर बढ़ने की खातिर,
ये सामाजिक परिवेश हमें बदलना होगा ।
ये देश हमें बदलना होगा ॥

रिश्वत लेना-रिश्वत देना, कि रिश्वत लेना-रिश्वत देना,
कब तक ये व्यापार चलेगा,
दफ्तरों में चाय-पानी का कब तक ये संसार चलेगा,
कि रिश्वत लेना-रिश्वत देना कब तक ये व्यापार चलेगा,
दफ्तरों में चाय-पानी का कब तक ये संसार चलेगा ।
लूट-घूस का, नोट-वोट का,
कि लूट-घूस का, नोट-वोट का कब तक ये बंटाधार चलेगा ।

आ गया समय अब,
कि आ गया समय अब मिलकर इस नासूर को दूर करें,
हम करें तुम करो मिलकर सब ये प्रण करें, कि
भ्रष्टाचार डर कर भागे, भ्रष्टाचारी थर-थर कांपे,
कि भ्रष्टाचार डर कर भागे, भ्रष्टाचारी थर-थर कांपे ।
बदलाव ये ऐसा करना होगा,
ये देश हमें बदलना होगा ।
ये देश हमें बदलना होगा ॥

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (लेखा), क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली

बदलाव की जो ये हवाएं चली हैं तो
धुएं को आग तक, आग को आवाज तक
आवाज को अंजाम तक पहुंचा कर ही मानेंगे ।
क्योंकि अब ना हम भ्रष्टाचार सहेंगे,
कहना है जो, वो कह के रहेंगे,
कदम जो बढे हैं वो अब ना रुकेंगे,
मंजिल से पहले हम न थमेंगे।

सीने में जो ये अलख जगी है,
बड़ी मुश्किल से जो ये चिंगारी लगी है,
इसे रुकने ना देंगे ।
हर मैं को, हर तुम को हम बना दो,
चिंगारी जो है उसे शोला बना दो,
जला दो भ्रष्टाचार को इसमें, जला दो भ्रष्टाचार को इसमें,
देश को निर्मल बना दो, देश को निर्मल बना दो ।
बदलाव ये ऐसा करना होगा,
ये देश हमें बदलना होगा ॥
ये देश हमें बदलना होगा ॥



अनाज को सुरक्षित एवं साफ-सुथरा रखने के सरल उपाय

रणधीर सिंह *

खाद्यान्न मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। मनुष्य जीवन में कई चीजों की कमी बर्दाशत कर लेता है लेकिन भूखा नहीं रह सकता। संभवतः इसी तथ्य के दृष्टिगत हमारे शास्त्रों में अन्न को 'अमृत' कहा गया है। अतः अन्न को खराब होने से बचाना बहुत जरूरी है। फलों की तरह अन्न भी कई प्रकार के होते हैं। एक ही प्रकार के अन्न का प्रयोग करने से हमारी सभी पोषण आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं। अतः मौसम के हिसाब से तरह-तरह का अन्न तथा उनसे बनी वस्तुएं खानी चाहिए। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए माननीय प्रधानमंत्री जी की दूरदृष्टि तथा पहल से प्रेरित होकर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2023 को 'मोटा अनाज वर्ष' घोषित किया गया है। भारत सरकार द्वारा मोटे अनाज को 'श्री अन्न' कहा गया है जो पूर्णतया उपयुक्त है।

किसान अनाज को कैसे सुरक्षित रखें :-

अनाज को खराब होने से बचाने के लिए सबसे अच्छा एवं सरल उपाय यह है कि उसे नजदीक के केन्द्रीय या राज्य वेअरहाउस में भंडारित करवा दें जहाँ उसका वैज्ञानिक रूप से भंडारण किया जाता है। अन्न के पोषक तत्वों एवं वाणिज्यिक गुणवत्ता को बनाए रखा जाता है तथा किसानों को भंडारण शुल्कों में विशेष छूट दी जाती है।

यदि किसान अपने घरों अथवा गोदामों में अनाज का सुरक्षित भंडारण करना चाहते हैं तो वे निम्नलिखित उपाय अपना सकते हैं। आईए, सबसे पहले 'श्री अन्न' यानी मोटे अनाज के सुरक्षित भंडारण पर चर्चा करते हैं। मोटे अनाज जैसे ज्वार, बाजरा, रागी इत्यादि को प्राकृतिक रूप से भंडारित किया जाता है। मोटे अनाज के सुरक्षित भंडारण के लिए कीटनाशकों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है।

सबसे पहले भंडारित किए जाने वाले श्री अन्न से बाहरी तत्व जैसे पेड़-पौधों के टुकड़े, डंठल, पत्ते, तिनके, धूल, मिट्टी आदि निकाल कर थोड़ा धूप में सुखा लें। श्री अन्न को गोहूँ, चने आदि

की तुलना में कम सुखाने की आवश्यकता है। हाँ, इतना जरूरी है कि श्री अन्न को ठण्डा होने के बाद ही भंडारित किया जाना चाहिए। जहाँ तक गोहूँ, चना जैसे अन्य अनाज का संबंध है, इसके एक-दो दाने दाँतो तले रखकर चबाएं, यदि कड़क की आवाज आए तो, समझ जाएं कि अनाज सूख गया है और भंडारित करने लायक है।

चावल और गोहूँ की तुलना में श्री अन्न की शेल्फ लाइफ कम है। अतः इस प्रकार के अन्न को वायुरोधी स्टेनलैस स्टील के कंटेनरों में भंडारित करना चाहिए। यदि साफ-सुथरा करने के बाद श्री अन्न को भंडारित किया जाएगा तो यह 6 महीने तक खराब नहीं होता। जहाँ तक उपभोक्ताओं का संबंध है, उन्हें श्री अन्न यानी मोटे अनाज को कम मात्रा में खरीदना चाहिए, ताकि इसकी जल्दी खपत हो जाए। स्टोरेज कंटेनरों को ठण्डे स्थान पर रखना चाहिए तथा धूप से बचाना चाहिए।

गोदामों की सफाई :-

अनाज के भंडारण के लिए जिन गोदामों का पहले प्रयोग हो चुका है, उनके फर्श तथा दीवारों आदि की दरारों के अंदर अनाज के कुछ दाने रह जाते हैं, जिन पर कीट-कृमि अंडे देते रहते हैं। ऐसे गोदामों में जब अनाज का भंडारण किया जाता है तो, नया अनाज कीटग्रस्त होने लगता है, अतः अनाज का भंडारण करने से पहले गोदामों की अच्छी तरह से सफाई करनी चाहिए, फर्श तथा दीवारों की दरारें भरवा दी जाएं, गोदामों में सफेदी की जाए तथा मैलाथियान का छिड़काव किया जाए।

नए अनाज को पुराने अनाज से दूर रखें :-

नए अनाज को पुराने अनाज के साथ अथवा पास में रखने से नया अनाज कीटग्रस्त हो सकता है। इसलिए नए अनाज को न तो पुराने अनाज में मिलाएं और न इसे पुराने अनाज के साथ भंडारित करें।

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (सेवानिवृत्त), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

यदि अनाज को स्टील या लोहे की टंकियों में भंडारित करना है तो, टंकियों को अच्छी तरह साफ करके दो-तीन दिन तक धूप में सुखाएँ। तत्पश्चात् ठंडे होने के बाद इनमें अनाज का भंडारण करें।

अनाज को साफ बोरियों में भरें :-

जब पुरानी बोरियों को नया अनाज भरने के लिए प्रयोग में लाया जाता है तो पुरानी बोरियों में बचे-खुचे दानों पर पोषित कीट नए अनाज को संक्रमित कर देते हैं। यदि आप नए अनाज को भरने के लिए पुरानी बोरियों का प्रयोग कर रहे हैं तो पहले उन्हें अच्छी तरह धूप में सुखा लें तथा ठंडी होने के बाद उनमें अनाज भरें।

अनाज को ढोने वाले वाहनों की सफाई :-

अनाज की दुलाई के लिए प्रयोग किए जाने वाले वाहन जैसे ट्रक, गाड़ी इत्यादि में बचे-कुचे अनाज पर कीट पलते रहते हैं। अतः जिन वाहनों का अनाज की दुलाई के लिए लगातार प्रयोग होता है, उन्हें बीच-बीच में पूरी तरह साफ कर लें।

अनाज को फर्श की सीलन से बचाने के लिए निभार (डनेज) का प्रयोग करें :-

अनाज की बोरियाँ सीधे ही फर्श पर रख देने से फर्श की सीलन से अनाज क्षतिग्रस्त होने लगता है। अनाज की बोरियाँ सीधे भंडारित न की जाएँ। अनाज तक फर्श की नमी न पहुँचे, इसके लिए किसी उचित निभार सामग्री का प्रयोग करना चाहिए। लकड़ी की पट्टियाँ या बाँस की चट्टाइयों के बीच पॉलिथिन रख कर निभार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

गोदामों को हवा लगाना :-

जहाँ तक हो सके धूप वाले दिनों में गोदामों में हवा लगानी चाहिए। बरसात के दिनों में दरवाजे तथा रोशनदान बंद रखे जाने चाहिए।

कीटग्रस्तता का पता कैसे लगाया जाए :-

यह बहुत जरूरी है कि कीटग्रस्तता का जितनी जल्दी हो सके पता लगाया जाए ताकि तुरन्त नियंत्रण उपाय किए जा

सकें। कीटग्रस्तता का पता लगाने के लिए सबसे सरल तरीका यह है कि पूरे अनाज में से कहीं-कहीं से लगभग एक किलोग्राम अनाज निकाल लें और इसे छलनी में रख कर हिला लें। यदि अनाज में कीट इत्यादि होंगे तो वे नीचे गिर जायेंगे, जिन्हें आप आसानी से देख सकते हैं।

कीट नियंत्रण :-

अनाज के भंडारण से पहले गोदामों में अच्छी तरह छिड़काव किया जाना चाहिए। इसके लिए आप डेल्टा मेथरीन 2.5 डब्ल्यू. पी. 200 ग्राम 3 लीटर पानी में मिलाकर घोल तैयार कर प्रत्येक 100 वर्ग मी. के क्षेत्र में छिड़काव करें। यह कीटनाशक 2 से 3 महीने प्रभावी रहता है। इस अवधि में छिड़काव किये हुए क्षेत्र को पोंछना नहीं चाहिए।

खाद्यान्नों का धूमीकरण :-

यदि आपने अनाज ऐसे भंडारण ढांचों/पातों में रखा हुआ है जिन्हें पूरी तरह एअरटाइट किया जा सकता है तो खाद्यान्नों में कीटग्रस्तता के नियंत्रण के लिए अल्यूमिनियम फॉस्फाइड का 9 ग्राम (3 टिकिया) प्रति मैट्रिक टन की दर से प्रयोग में ला सकते हैं।

चेतावनी :-

अल्यूमिनियम फॉस्फाइड एक जहर है। इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक किया जाए। अच्छा होगा, इस कार्य के लिए किसी प्रशिक्षित व्यक्ति की सहायता लें। अल्यूमिनियम फॉस्फाइड की ट्यूब को ऊपर से अच्छी तरह बंद करके ताले में बंद कर रखा जाना चाहिए।

चूहों पर नियंत्रण :-

चूहे अनाज के प्रमुख शत्रु हैं। वे अनाज को न केवल खाते हैं, बल्कि खाने से अधिक उसे बर्बाद करते हैं। चूहे अपने मल-मूत्र से अनाज को दूषित कर देते हैं। चूहों पर निम्नलिखित तरीकों से नियंत्रण किया जा सकता है।

चूहेदानी का प्रयोग करें :-

चूहों को पकड़ने के लिए विभिन्न प्रकार की चूहेदानियों का प्रयोग किया जा सकता है चूहों को मारने के लिए चूहेदानी को पानी में डूबाकर चूहों को मारा जा सकता है।



बेट्स (चारा) का प्रयोग :-

बेट्स के रूप में रसायनों का प्रयोग चूहे मारने के लिए किया जा सकता है। पानी में घुलनशील यौगिक तथा सूखे बेट के रूप में बाजार में उपलब्ध होते हैं जैसे ब्रोमोडिलाउन, एनेट तथा बारफैरिन आदि ये धीरे-धीरे असर करने वाले रसायन हैं जिनके खाने से चूहों में आंतरिक रक्तस्राव होता है और वे मर जाते हैं।

चेतावनी :-

चूहों को मारने के लिए प्रयोग किए जाने वाले रसायनों को हमेशा सुरक्षित जगह यानी ताले के अंदर रखें तथा इन्हें घरेलू पशुओं व बच्चों से दूर रखें। बेट का प्रयोग करने के बाद हाथों को अच्छी तरह साबुन से धोना चाहिए।

प्रधूमकों का प्रयोग :-

चूहों के नियंत्रण के लिए ए.एल.पी. टिकिया से चूहों के बिलों को प्रधूमित किया जा सकता है। चूहे के बिलों में ए.एल.पी. टिकिया डालने के बाद उन्हें मिट्टी से ढक कर वायुरोधी बना देना चाहिए।

चेतावनी :-

अल्युमिनियम फॉस्फाइड एक जहर है। अतः इसका प्रयोग सावधानी से किया जाए। टिकिया को कम से कम खुला रखा जाए ताकि हवा के साथ इसकी क्रिया न हो पाए। काम खत्म होने के बाद साबुन से हाथ अच्छी तरह धोने चाहिए। टिकियों को बच्चों से दूर ताले के भीतर रखा जाना चाहिए।

एक पत्र नई पीढ़ी के नाम

रविशंकर श्रीवास्तव "रवि" *

हे भारत के शूरवीर
मैं, स्वागत करने आया हूँ ।
अग्रिम पीढ़ी को सत्ता का,
भार सौंपने आया हूँ ।
तुम ऐसा कुछ कर दिखलाओ,
जो सबको सम्मान मिले ॥
गौरव जिससे बढ़े तुम्हारा,
भारत मां को मान मिले ॥
वही मार्ग तुम को अब चुनना,
शांति और सद्भाव बढ़े ,
विश्व कुटुंब बने वह करिए ,
मैं समझाने आया हूँ ॥
हे भारत....
जाति धर्म के झगड़े तुम भूलो,
तभी एकता आएगी,
जो भटके सन्मार्ग सुझाओ,

शांति तभी रह पाएगी ।
फिर भी जो ना राह पर आयें
आतंकी उन्मादी जो,
उन्हें समूल नष्ट करने का
मंत्र बताने आया हूँ ॥
हे भारत....
तुम ही तो गांधी, सुभाष हो,
तुम ही भगत, चन्द्र शेखर,
तुम ही राणा और शिवाजी,
तुम कलाम का तेज प्रखर ॥
दीप जले शिक्षा का चहुँ दिशा
नहीं अशिक्षा कहीं बचे,
विश्व गुरु हो भारत ऐसा,
अलख जगाने आया हूँ ॥
हे भारत....

* भंडारगृह प्रबंधक, सेंट्रल वेअरहाउस, लखनऊ-I एवं II

संगठन के कार्यों में जनसंपर्क (पब्लिक रिलेशन्स) की आवश्यकता एवं उपयोगिता

महिमानंद भट्ट *

किसी भी संगठन के कार्यों में जनसंपर्क का भविष्य वहाँ के आंतरिक वातावरण पर निर्भर करता है। जैसा संगठन का आंतरिक वातावरण होगा वैसा ही वहाँ पर जनसंपर्क विकसित होगा। संगठन में खुशहाल और संगठित वातावरण होगा तो निश्चय ही वहाँ जनसंपर्क का भविष्य भी उज्ज्वल और प्रगतिमान होगा। जनसंपर्क (पब्लिक रिलेशन्स) का कार्य, उसके अन्दर निहित दो शब्दों पी और आर से स्पष्ट हो जाता है। पी—पराफार्मेन्स, आर—रिकाग्निशंस, अर्थात् जनसंपर्क ऐसा कार्य है जिसे जनता “स्वीकृति” (रिकग्निशंस) दे। वह अच्छी अवधारणा पैदा करे, न केवल जनता को, बल्कि अपने संगठन को भी एक—दूसरे के प्रति जागरूक करे। संगठन के अंदर के लोग भी संगठन की सही जानकारी रखें, जिससे कि बाहर के लोगों में वह कंपनी का सही चित्रण कर सकें और इस प्रकार एक लाभप्रद स्वस्थ वातावरण का निर्माण हो सके।

संगठन के विभिन्न घटक कम्यूनिकेशन के माध्यम से एक दूसरे से संबंधित होते हैं। आज के औद्योगिक युग में बुद्धिमत्तापूर्ण सूचनाओं का विभिन्न तकनीकों द्वारा जनता तथा ‘विशिष्ट जनता’ तक पहुँचाना ही कम्यूनिकेशन का प्रमुख कार्य है। अतः जनसंपर्क का प्रमुख कार्य एक ऐसी विचारधारा उत्पन्न करना है जिसके द्वारा जनता कम्यूनिकेशन के विभिन्न माध्यमों से प्रभावित होकर व्यक्ति वही इच्छित कार्य करे जिसके लिए प्रयास किया गया था। जनसंपर्क का उद्देश्य इस विचारधारा से पब्लिक ओपीनियन का निर्माण करना होता है। तभी तो कहा गया है कि “जनसंपर्क का प्रमुख कार्य जनता में यही समझ उत्पन्न करना और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रभावित करने वाली प्रक्रियाओं और सम्प्रेषण की तकनीकों को प्रयोग में लाना है। संगठन जितना विकसित होगा उतना ही वहाँ का जनसंपर्क मजबूत होगा। यह सत्य है कि जनसंपर्क बिना समझ (अन्डरस्टैंडिंग) और ज्ञान (नॉलेज) के पैदा नहीं होता। जनसंपर्क अपने आप में एक ऐसा विषय है जिसे अपने विकास के साथ समझ और ज्ञान का विकास भी साथ—साथ करना पड़ता है। जनसंपर्क यह समझ (अन्डरस्टैंडिंग) मैनेजमेंट एवं प्रबंधकों में उत्पन्न करता है जो बहुत बड़ा काम है तथा सामाजिक वातावरण

का अध्ययन कर निर्णय लेना और भविष्य में दिशा—निर्देश देने के साथ—साथ जनता और कर्मचारियों को जानकारी देकर उन्हें यथार्थ से परिचित कराता है।

जनसंपर्क व्यक्ति, संस्था व फर्म और जनता के मध्य आपसी सहमति और प्रतिष्ठा (गुडविल) स्थापित करने और विकसित करने का विज्ञान और कला दोनों हैं। जनसंपर्क एक योजनाबद्ध प्रयास है जिसके द्वारा स्वीकृत माध्यमों का प्रयोग कर जनमत को प्रभावित किया जाता है। जनसंपर्क का यह रूप जनता और उसके लाभ के लिए अत्यन्त उपयोगी है। अच्छा जनसंपर्ककर्ता आज के युग में इच्छित नीतियों को जनमत में बदलने वाला एक बहुत बड़ा शिल्पकार है, निर्णय लेता है, सृजनात्मकता के साथ विश्लेषण करता है और वह इसका सबसे बड़ा सहायक भी है। जनसंपर्क एक तरह से प्रबंध—विभाग का भी कार्य करता है वह जनता के मत का अध्ययन और मूल्यांकन करने जैसे गुण रखता है। नीतियों का परिचय और उन पर चलने को व्यक्ति और जन—रुचि का ध्यान रखते हुए उन्हीं कार्यों को क्रियान्वित करता है, जिससे जनता में समझ बने और जनता उसे स्वीकार करें।

जनसंपर्क का कार्य विवेकपूर्ण योजनाबद्ध तथा सतत प्रयास द्वारा संगठन और उसकी जनता के बीच परस्पर सहमति बनाए रखना है। दूसरे शब्दों में कहें तो व्याख्यात्मक सामग्री द्वारा किसी व्यक्ति, फर्म अथवा संस्था का घनिष्ठ संबंध दूसरे व्यक्तियों, जनता विशेष या समुदाय के साथ स्थापित करना, पड़ोसी की भाँति उनमें आपसी विचारों के आदान—प्रदान का विकास और उनकी प्रतिक्रिया का जायजा लेना है। जनसंपर्क विचारों के सम्प्रेषण का वह शिल्प है जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार की जनता के साथ संपर्क करके इच्छित परिणाम की प्राप्ति की जा सकती है। इसे मैनेजमेंट का कर्तव्य भी कहा जा सकता है जो जनता की रुचियों और अभिमत का ध्यान रखता है, उसका विश्लेषण करता है, और उसके अनुरूप इस शिल्प द्वारा अपने संगठन की नीतियों और क्रियाओं आदि कार्यक्रमों को जन—अभिमत बनाने एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने के उद्देश्य से संचालित करता है। जनसंपर्क को आधुनिक मानवीय विज्ञान (Public Relations is a human Engineering) भी कह सकते हैं जिसके द्वारा कुछ

* प्रबंधक (सेवानिवृत्त), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली



तकनीकों तथा सम्प्रेषण के माध्यमों से जनता तक पहुँचा जाता है। वास्तव में जनसंपर्क द्विपक्षीय सम्प्रेषण (Two way communication) है जिसमें सह-अभिमत का आधार सम्पूर्ण सत्य, ज्ञान तथा पूर्ण सूचनाएँ होती हैं जिनसे तनाव कम होता है तथा आपसी सौहार्द पैदा होता है। यह वह चेतना प्रयास है जिससे बिक्री में वृद्धि तथा संस्था एवं उसके उत्पादन के प्रति जनता की चाह बनती है। संगठन का संदेश ठीक विधि से, उचित समय पर, सही श्रोताओं तक बिना किसी विज्ञापन के पहुँचे इस प्रकार के जनसंपर्क को व्यापारिक तथा आधुनिक औद्योगिक वातावरण की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ माना गया है। जनसंपर्क एक व्यवस्थापकीय प्रक्रिया है (Public Relations is a Management function of a continuing and Planned Character) जो सतत् एवं योजनाबद्ध-प्रयासों द्वारा जनता और निजी संगठन व संस्थान के विषय में संबंधित लोगों अथवा भविष्य में संपर्क में आने वाली जनता की सहानुभूति, सम्मति एवं समर्थन प्राप्त कर सके। इस सम्मति के साथ इस प्रक्रिया द्वारा अपनी नीतियों, कार्य-विधियों और सूचनाओं द्वारा अधिकाधिक क्षमता से उपयोगी उत्पादन कर सह-अभिरुचि की पूर्णता प्राप्त करना है।

जनसंपर्क-कार्य व स्वरूप: आधुनिक युग में हर किसी को चाहे वह सरकारी संस्थान हो या निजी, जनता से संपर्क रखना पड़ता है क्योंकि जनता को साथ लिए बिना कोई भी कार्य पूरा नहीं हो सकता। समाज में रहने वाले हर प्राणी को अन्य लोगों से संबंध बनाना आवश्यक होता है, तभी तो समाज को सामाजिक संबंधों का जाल कहा गया है।

जनसंपर्क में वे सभी कार्य सम्मिलित माने जाते हैं जिससे जनता से संपर्क करना होता है। यह जनता किसी संस्थान या संगठन के अंदर कार्य करने वाली हो सकती है अथवा बाहर के वे सभी लोग भी जिनसे संगठन के लोगों या वहाँ के उत्पादन (प्रोडक्ट) का संबंध होता है। जनसंपर्क इस कार्य के लिए एक "आपसी विचारमंच" तैयार करके संगठन के प्रति "एक धारणा" का निर्माण करता है। केवल इतना ही नहीं, अपने संगठन के अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों को जनता में अपने संगठन की एक "पब्लिक इमेज" को स्थापित करने की सलाह भी देता है। जनसंपर्क विषय केवल इस कार्य में परामर्श देकर ही चुप नहीं बैठ जाता बल्कि वह उन स्त्रोतों की खोजबीन भी निरन्तर करता रहता है जिन कारणों से जो गलत अवधारणा संगठन के अन्दर या बाहर, जनता के मन में बैठ गई है उसे दूर कर सके। जनसंपर्ककर्ता अपने संगठन के प्रभाव को विस्तृत रूप में फैलाने के लिए सम्प्रेषण (कम्यूनिकेशन) के अनेक माध्यमों का प्रयोग करता है, जैसे समाचार-पत्रों, विज्ञापनों, फिल्मों, प्रदर्शनियों एवं स्थानीय माध्यमों आदि का। इन सभी कार्यों के पीछे एक ही ध्येय

होता है कि वह संगठन और जनता के बीच सम्बन्धों की स्थापना में सुधार और विस्तार कर सके। जनसंपर्क का वास्तविक कार्य जनता को अपनी संस्थागत सच्चाई का दिग्दर्शन कराना है। सच्चाई और आदर्शों से भरा यह एक ऐसा प्रोपेगंडा होता है जिसमें जनकल्याण की भावना प्रधान होती है। प्रेस से संबंध का कार्य भी जनसंपर्क का प्रमुख कार्य होता है पर केवल प्रेस से संबंध बनाने से ही जनसंपर्क का कार्य पूरा नहीं हो पाता। जनसंपर्ककर्ता को विशेषतः लेखन, संपादन प्रस्तुतीकरण, विस्तार (प्रोमोशन) भाषण (मंच पर संबोधन) उत्पादन-प्रकाशन, योजना-निर्माण कार्यक्रम, संगठन का विज्ञापन, जनसभाओं में शामिल, अभिमत अध्ययन (Opinion Survey) आदि क्षेत्रों में अपनी भूमिका अदा करनी होती है। जनसंपर्क के दो प्रमुख कार्यक्षेत्र हैं: (1) बाह्य (External) संगठन या कम्पनी का प्रचार-विज्ञापन, प्रेस नोट, प्रोपेगंडा आदि (2) आन्तरिक (Internal) संगठन के अन्दर का समन्वय संपर्क आदि का कार्य। जनसंपर्ककर्ता को जब अपने सम्प्रेषण के विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करना होता है तो वह कार्यक्षेत्र विशिष्टता के अनुसार अलग-अलग हो जाता है। कम्यूनिकेशन के अनेक माध्यम (चैनल) होते हैं। जनता तक पहुँचने के लिए कौन-सा माध्यम उपयुक्त होगा इसका चुनाव जनसंपर्ककर्ता को करना होता है। इसके अतिरिक्त जनसंपर्ककर्ता को सरकारी, अर्द्धसरकारी, कम्पनी के भागीदारों, शेयर होल्डरों, कर्मचारियों, ठेकेदारों, वितरकों आदि से भी संपर्क करना पड़ता है। विभिन्न लोगों से, विभिन्न क्षेत्रों में, विभिन्न प्रकार के संपर्क के माध्यम चुनने होते हैं।

जनसंपर्क का आधार प्राप्त सूचनाओं पर निर्भर करता है। सूचना देना जनसंपर्क का एकपक्षीय कार्य है। सूचना किसी भी विषय, स्थान या कार्य-व्यवहार एवं घटना के बारे में होती है। जनसंपर्क और प्रोपेगंडा भी एक विषय नहीं है। जनसंपर्क का आधार सत्य और यथार्थ की सूचनाओं पर टिका है जबकि प्रोपेगंडा का उद्देश्य केवल परिणाम की प्राप्ति नहीं बल्कि विस्तार होता है। प्रोपेगंडा एकतरफा होता है जबकि जनसंपर्क द्विपक्षीय सम्प्रेषण है। इसी प्रकार विज्ञापन और जनसंपर्क में भी गहरा संबंध है। विज्ञापन कम्यूनिकेशन का एक माध्यम है। विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य उत्पादन या सेवा की बिक्री करना है। इसलिए विज्ञापन का जनसंपर्क विभाग के साथ घनिष्ठ संबंध होता है। विज्ञापन दो प्रकार के होते हैं (1) बिक्री वृद्धि के लिए विज्ञापन, (2) सम्मान और संगठन की छवि स्थापना के लिए विज्ञापन या संस्थागत विज्ञापन। वास्तव में सूचना, प्रोपेगंडा, प्रचार और विज्ञापन जनसंपर्क के सहयोगी मित्र हैं। इस मित्र-मण्डली का मुखिया जनसंपर्क है।

जनसंपर्क संचार कम्यूनिकेशन के विभिन्न माध्यमों द्वारा

जनता के अज्ञान को दूर कर उन्हें जीवन की नई राहें दिखाता है। अतः इसे “नए जीवन का द्वार और संगठन के लिए क्षितिज का झरोखा” कहा जाता है। जनसंपर्क अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कम्यूनिकेशन के विभिन्न माध्यमों से करता है। प्रेस संपर्क भी इसके मुख्य कार्यों में आता है। जनसंपर्ककर्ता को प्रेस संपर्क में बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि वह प्रेस और संगठन के मध्य एक कड़ी है और उसका प्रेस से संपर्क एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है। जनसंपर्क एक ओर प्रेस प्रतिनिधियों को सूचनाएँ, तथ्य और आंकड़े उपलब्ध कराता है तथा दूसरी ओर प्रेस उसके संगठन के संबंध में समाचार प्रकाशित कर उसका प्रचार और जनमत तैयार करता है। प्रकाशित और छपे हुए शब्दों का सर्वाधिक महत्व होता है क्योंकि छपी हुई सूचना और समाचार पर जनता सबसे ज्यादा विश्वास करती है। प्रेस का विश्वास प्राप्त करना ही जनसंपर्ककर्ता का महत्वपूर्ण कार्य है और प्रेस संपर्क का सबसे बड़ा आधार है। प्रेस-संपर्क का एक आधार आतिथ्य (Hospitality) भी है। आतिथ्य से तात्पर्य उस सम्मानजनक स्थिति से है जिसमें जनसंपर्ककर्ता को प्रेस के साथ सत्यनिष्ठ, विश्वसनीय और सहायक के रूप में माना जाए।

समाचार पत्रों का जीवन काल क्षणिक होता है और पत्रिकाओं का दीर्घ ब्राह्म प्रचार के लिए समाचार पत्र, पत्रिकाओं, रेडियो, टी.वी. आदि का सहारा लिया जाता है। निजी संस्थानों, सार्वजनिक क्षेत्रों तथा सरकारी कम्पनियों में आन्तरिक या विभागीय प्रचार के लिए गृह-पत्रिका (House Journal) आदि प्रकाशित किए जाते हैं ये बिना लाभ के नियतकालीन प्रकाशन होते हैं जिसे संस्था कर्मचारियों एवं जनता से संपर्क स्थापित करने के लिए प्रकाशित करती है। गृह-पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य है संस्था की प्रगति की सूचनाओं गतिविधियों नीतियों, कार्यक्रमों एवं योजनाओं के बारे में जानकारी देना है और संस्था के बारे में अधिक से अधिक अवगत करना। गृह पत्रिका द्वारा ग्राहक और सप्लायर्स से संपर्क बनाया जा सकता है।

जनसंपर्क का कार्य जनता को नए विचार देना, उन्हें नई सेवाओं से परिचित कराना होता है। उत्पादन के लिए बाजार का अध्ययन करके वह अपनी वस्तु का ही नहीं अपितु संगठन को भी उपभोक्ता की दृष्टि से प्रतिष्ठित करता है। जनसंपर्क द्वारा जनता की रुचि को निरन्तर संगठन के पक्ष में रखा जा सकता है किंतु इसके लिए व्यवहार कुशलता के बल पर जनसम्मान प्राप्त करना होता है। संगठन की प्रतिष्ठा व छवि का फैलाव कर जनसंपर्क एक अहम् भूमिका अदा करता है। जनसंपर्ककर्ता संगठन के अन्तः संबंध निर्माण में भी उत्तनी लगन से काम करें जितना कि ब्राह्म प्रचार के लिए तभी संगठन को चहुंमुखी प्रगति

हो सकती है। जनसंपर्क के कार्य में ग्राहक को अपने उत्पादन के बारे में सूचना देना, बाजार में उत्पादन के प्रसार, प्रचार और मांग पैदा करने के लिए वातावरण तैयार करने में भी सहायता देना है। जनसंपर्ककर्ता का सबसे कठिन और कसौटी का काम प्रबंधकों (मैनेजमेंट) और कर्मचारियों के मध्य निरन्तर जागरूक औद्योगिक संबंध बनाए रखना है।

संगठन में जनसंपर्क कार्य का विशाल क्षेत्र होता है और जनसंपर्क जन कल्याण की दृष्टि में रखकर किया जाता है। जनता का अपेक्षित सहयोग जनसंपर्क के बल पर ही प्राप्त किया जा सकता है। विभिन्न नियमों और कानूनों का पालन और उनकी जानकारी देना जनसंपर्क द्वारा ही संभव है। यह भी कह सकते हैं कि जनसंपर्क जनता को प्रभावित करने और अभिमत निर्माण करने की एक कला है।

समाज मनुष्यों के सामाजिक संबंधों का एक जाल है और सामाजिक संगठन इन संबंधों का आधार होता है। समाज का संगठन सम्प्रेषण की एक कड़ी से जुड़ा होता है। जनसंपर्क का कार्य संगठन और जनता के मध्य जनसंपर्क द्वारा आपसी राय कायम करते हुए सहमति का निर्माण करता है। आज जनसंपर्क बड़ा ही वैज्ञानिक तथा दुरुह विषय बन गया है। इसकी आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में पड़ती रहेगी जिससे उद्योगों के विकास के साथ-साथ लोगों का जीवन-स्तर भी उन्नत होगा। जैसे-जैसे संचार के साधन बढ़ेंगे वैसे-वैसे जनसंपर्क का क्षेत्र तथा कार्य वैज्ञानिक ढंग से विस्तृत और विशिष्ट होता जाएगा।

निःसंदेह समाज का हर परिवर्तन जनसंपर्क कार्य के लिए महत्वपूर्ण होता है। सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति ही जनसंपर्क के कार्य को दिशा प्रदान करती है। संगठन का संदेश संबंधित जनता तक पहुँचाना, जनसंपर्क का पहला कार्य है। विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए जनसंपर्क को संगठन के लिए जन-विकास और जन-सेवा की भावना के माध्यम से आगे बढ़ाना होगा।

जो कृपण का आश्रय लेता है, वह मूढ़ कहलाता है।

हमारे लिए यह परम सौभाग्य और गर्व की बात है भारत में अनेक महान भाषाएँ हैं और प्रत्येक एक-दूसरे से संबंधित हैं। हमें इन सभी भाषाओं को सुदृढ़ बनाना चाहिए तथा अपनी मातृ भाषा के प्रति विरोध की भावना नहीं रखनी, चाहिए। सभी भाषाएँ युगों-युगों से विकसित होकर भारत की मिट्टी में ही पनपी और बढ़ी हैं। इनमें किसी एक भाषा की क्षति सारे भारत की क्षति है।



घर में खाद्य प्रबंधन

विपिन कुमार सिंह *

सब लोग चाहते हैं कि घर में खाना बेकार न जाए, परंतु बेकारी को रोकने के लिए हम खाद्य के प्रबंधन पर ध्यान नहीं देते। परिणाम यह होता है कि हमारे न चाहते हुए भी आए दिन कच्चा अथवा पका-पकाया खाना बेकार जाता है। एक तरफ वह खाना किसी के काम नहीं आता, दूसरी ओर सख्त मेहनत से कमाया गया हमारा पैसा बेकार जाता है। इसलिए घर में खाद्य को सुरक्षित रखने तथा उसे बेकार न जाने देने के लिए खाद्य का प्रबंधन भली-भाँति करना चाहिए। घर में खाद्य प्रबंधन के निम्नलिखित मुख्य पहलू होते हैं :

- 1) घर में खाद्य को सुरक्षित रखना
- 2) खाद्य को सुरक्षित ढंग से परोसना
- 3) खाद्य बरबादी रोकना
- 4) बचे भोजन का प्रबंधन करना, और
- 5) खाद्य की सुरक्षित पैकिंग करना।

1. घर में खाद्य पदार्थ सुरक्षित रखना

खाद्य पदार्थों को बाजार से खरीदने के बाद अगला कदम उसे घर में सुरक्षित ढंग से रखना है। घर में खाद्य को सुरक्षित रखने के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखें:

- खाद्य सामग्रियों को वायुरुद्ध धारकों में ढंडे और नमीरहित स्थान पर जमीन से ऊपर रखें।
- धारक से समय-समय पर उतनी ही सामग्री निकालें, जितनी जरूरी हो।
- सामग्री सूखे और साफ कड़छे से निकालें तथा सामग्री निकालते ही उसे अच्छी प्रकार बंद कर दें।
- सभी प्रकार के अनाजों और दालों में साबुत हल्दी, नीम की सूखी पत्तियाँ अथवा तेजपत्ता डाल दें। इससे उनमें घुन और अन्य कीट नहीं लगते।
- दलिया और सूजी का पैकेट खोलने के बाद उसे भूनकर सूखे और वायुरुद्ध डिब्बों में रखें। इससे उनमें कीट नहीं लगेंगे।

- हरी पत्तेदार सब्जियों को छाँटकर, साफ करके किसी जालीदार या प्लास्टिक के छेद वाले थैले में रखें। इससे वे ज्यादा ताजा बनी रहेंगी। गाजर, मूली, चुकंदर, फूलगोभी, टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च, भिंडी आदि सब्जियाँ भी धोकर, सुखाकर फ्रिज में छेद वाली थैलियों में रखें।
- प्याज, लहसुन, आलू, ब्रेड, केले फ्रिज में न रखें। उन्हें खुली हवा में रखें।
- ब्रेड को एक-दो दिनों के लिए एअर टाइट कंटेनर में सूखे स्थान पर रखें। गर्मी और बरसात के दिनों में उसे एअर टाइट कंटेनर में फ्रिज में रखा जा सकता है।
- सेब, नाशपाती, संतरा जैसे फलों को कुछ दिनों तक ढंडी, सूखी जगह रखा जा सकता है।
- दूध की थैलियाँ फ्रिज के चिलर में धोकर रखें।
- पेस्ट्री, केक, आइसक्रीम, कुल्फी आदि दुकान में डीप फ्रीजर में रखे जाते हैं। ऐसी चीजें उतनी ही खरीदें, जितनी घर लाकर तुरंत खाई जा सकें और उन्हें घर लाकर तुरंत खा लें। फ्रिज में न रखें, क्योंकि डीप फ्रीज की हुई चीजों को डीप फ्रीजर से निकालने और उनके विगलन के बाद उनमें लिस्टीरिया नाम का हानिकारक बैक्टीरिया पैदा हो जाता है। इसलिए ऐसी चीजों को अगले दिन के लिए बचाकर न रखें।
- दुग्ध पाउडर किसी एअर टाइट कंटेनर में कक्ष तापमान पर रखें।
- मक्खन, क्रीम और पनीर हमेशा फ्रिज में रखें।
- अंडे फ्रिज की ऐग-ट्रे में अलग रखें। सर्दियों में अंडे बाहर छाया में भी रखे जा सकते हैं।
- मांस और कुक्कुट को यदि एक ही दिन में खाना हो तो उसे चिलर में रखें। यदि ज्यादा दिनों के लिए रखना हो तो फ्रीजर में रखें।
- कच्चे मांस और कुक्कुट को हमेशा फूड ग्रेड की

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (लेखा), क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

नमीसह प्लास्टिक की थैलियों में रखें, जिससे वे अन्य खाद्य पदार्थों में न मिलें और अन्योन्य संदूषण (cross contamination) न हो।

- पके हुए मांस को स्टोर करने से पहले कसकर लपेटें।
- कच्चे और पके मांस को अलग-अलग रखें।
- वसा और तेल ठंडी और छायादार जगह अच्छी तरह फिट होने वाले कंटेनरों में रखें। उन्हें गैस स्टोव के पास या धूप में न रखें।
- मसाले साफ करके, छॉटकर और सुखाकर साफ कंटेनरों में सूखी जगह रखें।
- पैकेटबंद और डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ धूप और ताप से दूर ठंडे स्थानों में रखें। उन्हें खोलने से पहले प्रायः फ्रिज में रखने की आवश्यकता नहीं होती। यदि उन पर ऐसा लिखा हो तो उन्हें फ्रिज में रखें।
- डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों, जैसे जैम और जैली, खोलने के बाद फ्रिज में ही रखें। उनकी डीप फ्रीजिंग न करें।
- कंटेनरों के पुनः प्रयोग से पहले उन्हें साबुन और साफ पानी से धोकर अच्छी प्रकार सुखाएँ।
- चटके, टूटे हुए अथवा ढक्कनरहित धारकों में खाद्य पदार्थ न रखें।
- बिस्कुट, चिप्स, क्रैकर, इन्सटैंट मिक्स, तैयार खाद्य, पैकेजबंद पास्ता, स्नैक्स इत्यादि ठंडे और सूखे स्थान पर रक्ष तापमान पर रखें। रक्ष तापमान से 20°C से 25°C तक का तापमान तात्पर्य है।

- खाद्य से इतर चीजों, जैसे सफाई की सामग्रियों, रसायनों, पैकिंग सामग्रियों को खाद्य से दूर लेबल लगाकर रखें, जिससे वे खाद्य में गलती से भी न मिल सकें।

2. खाद्य पदार्थों को सुरक्षित ढंग से परोसना

खाद्य पदार्थों को अच्छी प्रकार पकाने के बाद उसे साफ, स्वास्थ्यकर और सुरक्षित तरीके से परोसना भी आवश्यक है। खाद्य को परोसने के दौरान निम्नलिखित सावधानियाँ बरतें:

- ठंडे परोसे जाने वाले भोजन को 5°C से कम तापमान पर ही परोसें।
- गर्म परोसे जाने वाले भोजन को 60°C से अधिक तापमान पर ही परोसें।
- जिन पात्रों से भोजन परोसा जाए, वे नॉन-टॉक्सिक, साफ और अच्छी हालत में हों,
- भोजन परोसने के दौरान आस-पास के वातावरण में खुली नालियों, कूड़ाघरों, घनी शाक-भाजी, गंध, कीट, दूध आदि का प्रदूषण न हो।
- खाद्य परोसने के दौरान पेपर टॉवल, डिस्पोजेबल कप, सफाई के कपड़े और प्लेट आदि डिस्पोजेबल सामग्रियों का प्रयोग दुबारा न करें।
- खाद्य परोसने के दौरान स्वयं खाना न खाएँ, तंबाकू न चबाएँ, धूम्रपान न करें, न थूकें और नाक साफ न करें।
- खाद्य कभी गंदे हाथों से या गंदे बर्तनों, चम्मचों, कड़छों आदि से न परोसें।
- खाना स्टेनलेस इस्पात, कलई-चढ़े ताँबे या पीतल, खाद्य ग्रेड के काँच, सिरैमिक अथवा पारसिलेन के बर्तनों अथवा डिस्पोजेबल अथवा एक बार उपयोग के सुरक्षित बर्तनों में ही परोसें।
- खाना परोसने के बर्तन गंदे कपड़े से न पोंछें।
- केले के पत्तों, डोनों आदि में खाद्य परोसने से पहले उन्हें अच्छी प्रकार धो लें।
- खाने को प्लास्टिक की चीजों, अखबार, मोमी कागज के कपों अथवा एल्युमिनियम के बर्तनों में न परोसें।
- जिन बर्तनों में पहले कच्चा मांस, कुक्कुट, समुद्री भोजन अथवा अंडे रखे हों, उन्हें साबुन के गर्म पानी से धोकर ही रखें।
- मांसाहार में डाली गई चम्मच धोए बिना शाकाहार में न डालें।
- चाय, कॉफी आदि गर्म पेय पदार्थ प्लास्टिक की थैलियों

किन चीजों को किस तापमान पर रखें?

| | | |
|---|---------------|----------------------|
| अनाज और दालें, केले, मसाले तथा कंद-मूल जैसे आलू, लहसुन, प्याज | रक्ष तापमान | 20°C से 25°C |
| तेल, वसा, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ | ठंडे स्थान पर | 20°C से कम तापमान पर |
| फल, सब्जियाँ, दूध और दुग्ध उत्पाद, अंडे, पका मांस, मछली, कुक्कुट | फ्रिज में | 1°C से 4°C |
| बर्फ, आइस-क्रीम, कच्चा मांस/मछली/कुक्कुट, प्रशीतित, पूर्व पकाए हुए आहार | फ्रीजर में | -18°C तापमान पर |



में न लाएँ। उन्हें प्लास्टिक की छलनी से न छानकर लोहे की छलनी से छाना जाए। प्लास्टिक से इनमें प्लास्टीसाइजर मिल जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। लोहे की छलनी से छानने पर उसमें अल्प मात्रा में लोहा मिलता है, जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। परंतु लोहे की जंग लगी छलनी का प्रयोग न करें। इसी कारण से गर्म पेय पदार्थों में चीनी भी प्लास्टिक की चम्मच से न मिलाएँ। प्लास्टिक की चम्मच से लकड़ी की चम्मच ज्यादा सुरक्षित होती है।

- पहले बना खाना ऊष्मारोधी, दुहरी भित्ति के केसरोल में रखें और डिस्पोजेबल अथवा प्लास्टिक, एल्युमिनियम, ताँबे या पीतल के कलई रहित बर्तनों में न रखें।
- नंगे हाथों से न खाना परोसें, न गिलास में बर्फ डालें। इन कार्यों के लिए चिमटे, चम्मच या डिस्पोजेबल दस्तानों का प्रयोग करें।
- बचे हुए खाद्य पदार्थ या अप्रयुक्त खाद्य किसी को खाने के लिए तुरंत दे दें या फेंक दें।

3. घर में खाद्य बरबादी रोकना

खाद्य बरबादी से तात्पर्य है खाद्य की वह अवस्था जब किन्हीं कारणों से उसका प्राकृतिक पोषण मान, गठन, सुवास आदि नष्ट हो जाते हैं और वह खाने लायक नहीं रहता। घर में खाद्य बरबादी मुख्य रूप से निम्नलिखित कारणों से होती है—

- 1) **बाहरी सामग्री से** — वह हर चीज, जो खाद्य अथवा खाद्य पदार्थ नहीं होती, बाहरी सामग्री होती है। इनमें बाल, स्टैप्लर, धातु कण, धागे, प्लास्टिक, क्षार इत्यादि शामिल हैं।
- 2) **नॉन फूड ग्रेड के उपकरणों के उपयोग से** — खाद्य की तैयारी से लेकर उसके सेवन तक विभिन्न प्रकार के उपकरण गैर खाद्य ग्रेड की धातु/प्लास्टिक, संक्षारी धातु आदि के होने पर उनके संपर्क में आया खाद्य बेकार हो जाता है।
- 3) **अनुचित हैंडलिंग से** — गंदे हाथों, गलत प्रकार के उपकरणों के प्रयोग और अनुपयुक्त सामग्री में पैकिंग से खाद्य सुरक्षा के मुद्दे उठ खड़े होते हैं।
- 4) **रासायनिक अवशिष्टों से** — रसायन खाद्य के संपर्क में पेस्टीसाइडों के रूप में और बाद में रोगाणुनाशियों के स्वैच्छिक प्रयोग, बर्तनों की धुलाई के दौरान आते हैं। अतः हर स्तर पर खाद्य बेकारी रोकने के लिए उत्पादन, खाना बनाने आदि के काम में लेने से पहले सभी बर्तन अच्छी प्रकार धो लें।

- 5) **अमानक स्वच्छता से** — खाना बनाते समय यदि हर स्तर पर पूरी स्वच्छता न बरती जाए, तो खाद्य असुरक्षित हो सकता है।
- 6) **घटिया कच्ची सामग्री के उपयोग से** — कच्ची सामग्रियों का चयन सख्त वैज्ञानिक रीतियों और नियमित प्रतिचयन के आधार पर करें। इस कार्य में ढील बरत देने से खाद्य के बेकार होने की सबसे पहले आशंका रहती है।
- 7) **सहयोज्य पदार्थों से** — इत्र, सुवास, मसाले आदि कोई भी खाद्य सहयोज्य पदार्थ दूषित होने अथवा अधिक मात्रा में डाले जाने से खाद्य को बेकार कर देते हैं। अतः इनके उपयोग के समय विशेष सावधानी बरतें और अप्राधिकृत तथा अमानक सहयोज्य पदार्थों का उपयोग न करें।
- 8) **दूषित पानी से** — पानी खाना बनाने के लिए सब्जी आदि को धोने से लेकर बर्तन धोने तक सभी चरणों में काम आता है। इस दौरान यह खाद्य उत्पादन के एक संघटक के रूप में अथवा किसी अप्रत्यक्ष रूप में, यथा भाप के रूप में भी काम आता है। अतः जल आईएस 10500 के अनुसार पेय गुणता का हो।
- 9) **अनुचित भंडारण के कारण** — भंडारण न केवल 'पहले आए, पहले जाए' पद्धति के आधार पर करें, बल्कि अलग-अलग सामग्रियों का भंडारण अलग-अलग करें तथा उचित संवातन से करें। उपयुक्त अवधि, तापमान, वेंटिलेशन और पृथक्करण के उचित मेल को ही अच्छा भंडारण कहा जाता है। इनमें से किसी में भी कोई कमी रह जाने से भोजन असुरक्षित हो जाता है।
- 10) **बीमारी/चोट आदि के कारण** — खाद्य सुरक्षा खाद्यकर्मी के वैयक्तिक व्यवहार और उसके स्वास्थ्य की स्थिति पर बहुत निर्भर करती है। खाँसी, जुकाम, खुले घाव, खाज और चिड़चिड़ापन पैदा करने वाली किसी बीमारी से ग्रस्त खाद्यकर्मी में अपने शरीर को छूने और छूने के बाद खाद्य को हाथ धोए बिना हैंडल करने की प्रवृत्ति होती है। इसलिए बीमार व्यक्ति खाद्य का काम न करें।
- 11) **अनुचित पृथक्करण से** — कुछ खाद्य उत्पादों में एलर्जीकारक होते हैं। ऐसे उत्पादों को अलग-अलग न रखने से अन्योन्य संदूषण होकर खाद्य बेकार हो जाता है।
- 12) **आर्द्रता** — आर्द्रता सूक्ष्मजीवाणुओं की वृद्धि का मुख्य कारण होती है। खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए फूड जोन में 65 प्रतिशत से कम आर्द्रता होनी चाहिए।
- 13) **तापमान** — खाद्य के सुरक्षित बने रहने के लिए उपयुक्त तापमान भी बनाए रखें। 5°C से 60°C के बीच के तापमान में खाद्य जल्दी खराब होता है।

- 14) **समय** – हर कच्ची अथवा तैयार खाद्य सामग्री के उपयोग की कोई निश्चित अवधि होती है। अतः उसे उस अवधि से अधिक समय के लिए न रखें।
- 15) **नॉन फूड ग्रेड की पैकिंग** – खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अधपके और तैयार उत्पाद खाद्य ग्रेड की पैकिंग सामग्री में पैक न करने से खाद्य बेकार हो जाता है, जैसे चपातियों को अखबार के कागज, कपड़े, पॉलिथीन की थैली आदि में पैक करने से वह खाने लायक नहीं रहती।
- 16) **कीटों से** – कीट खाद्य को बेकार करने के प्रमुख कारणों में से होते हैं। अतः कीट नियंत्रण युक्तियों और अन्य प्रकार के नियंत्रणों की आयोजना अच्छी प्रकार की जाए, ताकि वे खाद्य में प्रविष्ट न हों अथवा उसे संदूषित न करें।
- 17) **कुतरने वाले जीवों के शारीरिक द्रव से** – खाद्य में संदूषण कुतरने और रेंगने वाले जीवों, कीटों, रात्रि जीवों और पक्षियों के शरीरों के द्रव जैसे पेशाब, बीट, से हो सकता है। अतः इस प्रकार के संदूषण से भी खाद्य को बचाकर रखें।
- 18) **कचरे के अनुचित निपटान से** – यदि रसोई में कचरा पड़ा रहे या कूड़ेदान रसोई के अंदर अथवा उसकी खिड़कियों या दरवाजे या खाद्य रखने या तैयार करने के क्षेत्र, फ्रिज, खाना खाने के स्थान अथवा खाना खाने के बर्तनों, कच्चे फलों और सब्जियों के पास रखा रहे तो खाद्य में कीटाणु प्रवेश करके खाद्य सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन सकते हैं।

खाद्य की बरबादी रोकने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें:

- कच्चा माल आवश्यकता और भंडारण क्षमता के अनुसार खरीदें।
- उतना ही खाना बनाएँ और डालें, जितना खाया जा सके।
- खाद्य को सुरक्षित ढंग से रखें।
- 'पहले आए पहले खाएं' का अनुपालन करें।
- बचे भोजन का उपयोग समय रहते अन्य स्वादिष्ट व्यंजन बनाने के लिए करें या किसी जरूरतमंद को दें।

4. घर में बचे भोजन का प्रबंधन

पकाए हुए भोजन को तुरंत खा लेना अच्छा होता है। परंतु कोई भोजन बच जाए तो उसे सही ढंग से रखना भी जरूरी होता

है। बचे हुए भोजन को सही और सुरक्षित ढंग से रखने और उसे संभालने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :

- जहाँ तक संभव हो, केवल जरूरत के अनुसार ही खाना बनाएँ।
- कक्ष तापमान पर दो घंटे से अधिक समय तक रखा बचा हुआ भोजन न खाएँ।
- बचे हुए भोजन को गंदे चम्मचों, चाकुओं आदि से खराब न होने दें।
- बचे भोजन को ताजा भोजन में न मिलाएँ।
- बचे भोजन को ढककर रखें और अन्योन्य संदूषण न होने देने के लिए उन्हें कच्ची खाद्य सामग्रियों से अलग रखें।
- डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों को फ्रिज में तभी रखें जब उनके डिब्बे पर ऐसा लिखा हो।
- पनीर, खोया आदि दुग्ध उत्पाद सदा फ्रिज में रखें और उनका 24 घंटों के अंदर उपयोग कर लें।
- बचे भोजन के खराब होने का संदेह होने पर उसे फेंक दें। उसके खराब होने की जाँच करने के लिए उसे चखकर न देखें।
- बचे भोजन को कक्ष तापमान पर लाकर दो घंटों के अंदर फ्रिज में रख दें।
- पके भोजन को फ्रिज में सबसे ऊपर रखें।
- बचे रेफ्रिजरेटिड भोजन को दुबारा गर्म करने से पहले उसका विगलन उचित तरीके से करें।
- बचे सुरक्षित भोजन को ताजा भोजन से पहले गर्म करें और खाएँ।
- बचे भोजन को बार-बार गर्म न करें और उसमें बार-बार पानी न मिलाएँ। बार-बार गर्म करने से उसका पोषण कम हो जाता है तथा बार-बार पानी मिलाने से उसमें कीटाणुओं का प्रवेश हो सकता है।
- बचे भोजन को गर्म करने के लिए फ्रिज में से केवल उतना ही निकालें, जितनी जरूरत हो, पूरे भोजन को गर्म न करें। इससे एक तो उस समय प्रयोग में न आने वाले बचे भोजन का तापमान नहीं बढ़ेगा जिससे उसमें कीटाणु पैदा हो सकते हैं और उसे फिर फ्रिज में नहीं रखना होगा तथा दूसरे बार-बार गर्म करने से उसमें पानी बार-बार नहीं डालना होगा और उसके पोषक तत्व नष्ट नहीं होंगे।
- बचे भोजन को अच्छी तरह हिलाते रहकर उसका आंतरिक तापमान कम से कम 73°C आने तक गर्म करें।



- बची हुई सुरक्षित दाल से आटा गूँधा जा सकता है तथा बची सुरक्षित सब्जियों का उपयोग ब्रेड अथवा बन के साथ पेटिस बनाकर किया जा सकता है।
- बचे हुए सुरक्षित चावल से लेमन राइस, कटलेट आदि बनाए जा सकते हैं।

5. खाद्य की सुरक्षित पैकिंग करना

खाद्य के मामले में घर में पैकेजिंग प्रायः तैयार खाद्य सामग्री की ही की जाती है। वह खाद्य सामग्री हर प्रकार से सुरक्षित और स्वच्छ ढंग से तैयार की हुई होती है और उससे अगला चरण उसे खाना ही होता है। उसकी पैकेजिंग में उसी स्तर की सावधानियों की आवश्यकता होती है, जो उसके तैयार करने के लिए होती हैं। घरों में खाद्य की पैकेजिंग उसकी सुरक्षा का ध्यान रखे बिना प्रायः धातु के अमानक वर्कों, पॉलिथीन की गंदी थैलियों, कागजों, कपड़ों, अखबारों, गत्ते के डिब्बों, ट्रेसिंग पेपरों, टिफिनों, गंदी बोटलों, पाउचों, कपों, गिलासों आदि में कर दी जाती है, जिनकी गुणता हमेशा संदेहजनक होती है। घरों में लोग प्रायः यह ध्यान नहीं रखते कि हर प्रकार की पैकेजिंग सामग्री खाद्य सामग्री के उपयुक्त नहीं होती, क्योंकि पैकेजिंग सामग्रियों में अनेक प्रकार के हानिकारक तत्व और कीटाणु भी होते हैं। खाद्य सामग्री की पैकिंग के लिए अन्य आनुशांगिक बातों के साथ-साथ निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए:

- पैकेजिंग सामग्री हर प्रकार के भौतिक, रासायनिक और जैविक खतरों से मुक्त हो।
- वह गंदी न हो, धूल आदि में सनी न हो, काफी दिनों से खुली न पड़ी हो और गंदे वातावरण में न रखी हुई हो।
- वह जंग या रंग छोड़ने वाली न हो।
- उसकी धातु ऐसी न हो कि वह खाने के साथ प्रतिक्रिया करके उसे संदूषित कर दे।
- वह खाद्य के स्वाद, सुवास, रंग, गंध आदि को किसी भी प्रकार प्रभावित करने वाली न हो।
- खाद्य की पैकेजिंग मोमी कागज में न की जाए, विशेषकर गर्म पदार्थों की।
- खाद्य की पैकेजिंग कपड़े में न की जाए, क्योंकि कपड़ा धूल, गंदगी, नमी, कीटाणु आदि का शोषक होता है और उसमें इनमें से कोई न कोई संदूषक होने की आशंका होती है। ये संदूषक उसमें लपेटे गए भोजन को भी संदूषित कर सकते हैं।
- खाद्य की पैकेजिंग अखबार के कागज या किसी अन्य प्रयुक्त अथवा अप्रयुक्त कागज में भी न करें, क्योंकि

खाद्य की सुरक्षा की दृष्टि से उसमें भी कपड़े वाले दोष होते हैं। अखबार में हानिकारक रंग, बाइंडर और परिरक्षी सामग्री होती है और रासायनिक संदूषक, रोगजनक सूक्ष्मजीवाणु भी होते हैं। उसकी स्याही भी बहुत जहरीली होती है। इस प्रकार अखबारी कागज में जैविक दृष्टि से सक्रिय बहुत सी सामग्रियाँ होती हैं, जिनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ते हैं और वह स्वच्छता से तैयार किए गए भोजन को भी संदूषित कर देता है। वास्तविकता यह है कि अखबार पढ़ने के बाद भी हाथ धोकर ही खाना खाना चाहिए।

- रिसाइकिल किए गए कागज से बनाए गए कागज/कार्डबोर्ड बॉक्स भी पथलेट जैसे रसायनों से संदूषित हो सकते हैं। उनमें खाद्य की पैकेजिंग करने से भी पाचन की समस्याएँ पैदा हो सकती हैं और शरीर में गंभीर आविषालुता बन सकती है। इससे बूढ़े लोगों, किशोरों, बच्चों और क्षतिग्रस्त अंगों वाले तथा कम रोग-प्रतिरोध शक्ति वाले लोगों को कैंसर से संबंधित समस्याएँ हो सकती हैं।
- चपाती आदि की पैकिंग किसी भी प्रकार के एल्युमिनियम वर्क में नहीं करनी चाहिए, क्योंकि एल्युमिनियम भी खाद्य के लिए कोई बहुत सुरक्षित धातु नहीं होती। इसलिए खराब गुणता का वर्क भी भोजन को संदूषित कर सकता है। इसलिए अच्छी गुणता के एल्युमिनियम वर्क में ही खाद्य सामग्री की पैकिंग करनी चाहिए और वही वर्क खरीदना चाहिए जिस पर आईएसआई मुहर हो। वर्क में चपातियाँ प्रायः गर्म-गर्म ही पैक कर दी जाती हैं, जबकि वे गर्म-गर्म पैक नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे उनमें वर्क के टॉक्सिक तत्व जल्दी मिल जाते हैं। इसलिए वर्क में पैकिंग करने से पहले चपाती आदि को ठंडा करें और उसमें अम्लीय चीजें पैक न करें। खाद्य पैकेजिंग के लिए बटर पेपर एल्युमिनियम वर्क से ज्यादा अच्छा होता है।
- गर्म खाद्य सामग्री की पैकिंग न करें, क्योंकि अधिक तापमान पर कीटाणु जल्दी पनपते हैं। दूसरे, गर्म खाद्य सामग्री से वाष्प निकलने से खाद्य में नमी पैदा होती है तथा नमी कीटाणुओं को और अधिक बढ़ावा देती है।
- खाद्य सामग्री की पैकेजिंग कभी किसी धूल भरे, गंदे, हवा के वातावरण में न करें, क्योंकि उससे उस वातावरण की गंदगी भी उसके साथ पैक होकर खाद्य को संदूषित कर सकती है।
- एक ही तापमान पर रखी जाने वाली खाद्य सामग्री को ही एक साथ पैक करें, जिससे वह अनावश्यक रूप से ठंडी अथवा गर्म होकर खराब अथवा संदूषित न हो।

- सब्जी, रोटी, दही, दूध, द्रव पदार्थों आदि को कभी पालिथीन की थैलियों में पैक न करें, क्योंकि पालिथीन की थैलियाँ खाद्य ग्रेड की नहीं होतीं और गर्म चीजों में पालिथीन का अंश छूटकर उनमें मिल जाता है।

यदि पैकेजिंग के लिए प्लास्टिक का उपयोग किया जाए तो वह केवल खाद्य ग्रेड का हो। क्योंकि प्लास्टिक में पैक की गई खाद्य सामग्री उसमें उच्च तापमान पर, ज्यादा देर तक रखने पर, धूप में रखने पर और बार-बार के उपयोग से उसके रसायन खाद्य में मिल सकते हैं। निम्नलिखित चिह्नन लगे प्लास्टिक के 1, 2, 4 और 5 नंबर वाले प्लास्टिक ही खाद्य ग्रेड के होते हैं:



- खाद्य सामग्री पैक करते समय लिफाफे, थैलियाँ आदि फूँक मारकर न खोलें, क्योंकि उससे फूँक में मौजूद कीटाणु, विषाणु खाद्य को संदूषित कर सकते हैं।
- दूध जैसे खाद्य पदार्थों को एअर टाइट, साफ और अदूषित कंटेनरों में अथवा फिल्म अथवा बोर्ड, कागज, पॉलिथीन, पॉलिएस्टर, धातु चढ़ी फिल्म के अस्तरो से बनी किसी सुनम्य पैकेजिंग सामग्री में पैक किया जाए अथवा ऐसी रीति से पैक किया जाए जिससे वे खराब न हों।
- पैकेजिंग सामग्रियों की सफाई और अन्य संदूषणों की समय-समय पर जाँच करते रहना चाहिए और ऐसी पैकेजिंग सामग्रियों का ही उपयोग करें, जिनसे भंडारण और उपयोग की निर्दिष्ट अवस्थाओं में खाद्य की सुरक्षा और उपयुक्तता को कोई खतरा न हो।
- पैकेजिंग के लिए उपयुक्त रूप से कलई न किए गए तांबे अथवा पीतल के कंटेनरों का प्रयोग न किया जाए,
- खाद्य तेल और वसा पैक करने के लिए एक बार प्रयुक्त हो चुके टिन और रांगा के धारकों का दुबारा प्रयोग न करें, परंतु तांबे के बर्तन और धारक अच्छी प्रकार कलई न किए गए होने पर भी मिष्टान अथवा सुगंध तेल तैयार करने के लिए प्रयुक्त किए जा सकते हैं।
- लंच बॉक्स पैक करने से पहले उन्हें अच्छी प्रकार धोएँ और सुखाएँ। लंच बॉक्स की आकृति साधारण होनी चाहिए, जिससे उसमें लगी सब्जी आदि को आसानी से साफ किया जा सके।
- माइक्रोवेव में गर्म करने के लिए केवल माइक्रोवेव सुरक्षित प्लास्टिक के लंच बॉक्सों का ही प्रयोग करें।

लंबे समय तक पैक किए गए अथवा खराब गंध वाले भोजन का प्रयोग न करें।

“क्या होती है माँ”

बीरेन्द्र सिंह *

मैंने पूछा अपनी कलम से
बोलो क्या होती है माँ
हँसकर उसने कहा मुझसे,
तेरे दर्द से जो रोती है,
वही तो होती है माँ।

आरंभ तेरा जब हुआ था,
तब तू किसी के अंश में छिपा था।
अपने अंश में छुपा ले जो,
वही तो होती है माँ।

जब नन्हा-सा फूल था तू,
तब किसी के सीने से सिमटा था,
अपने सीने से सिमटा ले जो,
वही तो होती है माँ।

रातों को कभी जब तू रोता था,
तब तुझे कोई लोरी सुनाता था।
अपनी नींद गँवाये जो,
वही तो होती है माँ।

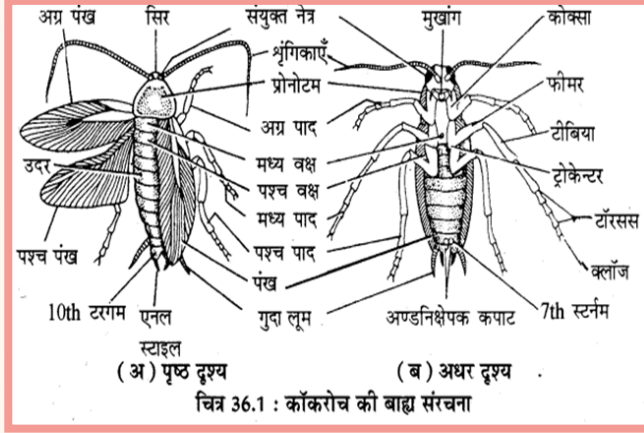
जब तू कोई सपना देखता था,
उसपे अपनी मेहनत लगाता था,
तेरे सपनों पर जो अपने सपने वार दे,
वही तो होती है माँ।

माँ के इस भव्य रूप को देकर,
मेरे दिल से बस एक ही आवाज आई।
हे ईश्वर, कैसे करूँ तेरा शुक्रिया,
जो तूने यह अनमोल कृति बनाई।
सारे संसार में सबसे अतुल्य है, जो,
वही तो होती है माँ।

* कनि. अधीक्षक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

तुझे काँकरोच कहूँ या तिलचट्टा....?

रोहित उपाध्याय *



चित्र 36.1 : काँकरोच की बाह्य संरचना

दुनिया में यूँ तो अनेक जीव हैं, लेकिन एक जीव ऐसा भी है, जिसका केवल नाम सुनकर ही घिन आने लगती है। अधिकांश बच्चे और महिलाएँ तो इसको देखते ही डर से चिल्ला उठते हैं। वैसे डरते तो बहुत से पुरुष भी हैं, लेकिन शायद दिखाते नहीं। अब डर किसे नहीं लगता, गला किसका नहीं सूखता? यह जीव इंसान को काटता तो नहीं है पर अपने रंगरूप और अपनी आदतों के कारण मन में एक घृणा-सी पैदा करता है।

इस जीव को हिंदी में तिलचट्टा कहते हैं और अंग्रेजी में काँकरोच। वैसे काँकरोच शब्द हमारी हिंदी एवं अन्य भाषा में इतना अधिक घुल-मिल गया है कि तिलचट्टा बोलने की बजाय काँकरोच बोलने में अधिक सुविधा होती है। इस लेख को लिखने का उद्देश्य किसी के मन में घृणा पैदा करना नहीं, बस एक तथ्यात्मक जानकारी देना भर है। वैसे मैंने महसूस किया है कि यदि मैं काँकरोच के स्थान पर तिलचट्टा लिखूँ तो शायद आपके मन में इस लेख को पढ़ने की उत्सुकता जाग जाए और शायद आप पूरा लेख पढ़ लें। मेरा यह भी मानना है कि यदि आप हमारे निगम के कर्मचारी हैं तो आपको तिलचट्टे के बारे में अवश्य जानना चाहिए क्योंकि इसको मारने के लिए बहुत से संस्थान हमारे निगम की कीट नियंत्रण सेवा का लाभ उठा रहे हैं। इस प्रकार भले ही यह कीट आपको घर या बाहर कहीं भी परेशान

कर रहा हो पर हमारे निगम को आर्थिक लाभ पहुँचा रहा है। तो आइए, जानते हैं इस अद्भुत कीड़े के बारे में।

वैज्ञानिकों के अनुसार तिलचट्टों का इतिहास बहुत पुराना है और ऐसा माना जाता है कि इनकी उत्पत्ति 300–350 मिलियन वर्ष पहले कार्बोनिफेरस काल के दौरान हुई थी। ये हर प्रकार के मौसम में जीवित रह सकते हैं। इनकी विश्व में 4600 से भी अधिक प्रजातियाँ मौजूद हैं और लगभग 30 प्रजातियाँ मनुष्य से जुड़ी हैं। इन 30 में से भी जर्मन तिलचट्टे, अमेरिकी तिलचट्टे, ऑस्ट्रेलियाई तिलचट्टे तथा ओरिएंटल तिलचट्टे सबसे प्रमुख हैं।

तिलचट्टा एक सर्वहारी, रात्रिचर प्राणी है, जो अंधेरे में, गर्म स्थानों में, जैसे- रसोई घर, गोदाम, अनाज और कागज के भंडारों में पाए जाते हैं। जब अंधेरा होता है और घर में सभी लोग सो जाते हैं तब तिलचट्टे के सक्रिय होने का समय होता है। यदि दिन में भी आपको अपने घर में तिलचट्टा दिखाई देता है, तो समझ जाइए कि अब पानी सिर से ऊपर निकल चुका है और आपको हमारे निगम की कीट नियंत्रण सेवाओं की आवश्यकता है।

पंख से ढका हल्का लाल एवं भूरे रंग का इसका शरीर तीन भागों सिर, वक्ष और उदर में विभाजित रहता है। सिर में एक जोड़ी संयुक्त आँखें होती हैं एवं एक जोड़ी संवेदी शृंगिकाएँ (एन्टिना) निकली रहती हैं जो भोजन ढूँढने में सहायक होती हैं। वक्ष से दो जोड़ा पंख और तीन जोड़ी संधियुक्त टाँगें लगी रहती हैं जो इसके प्रचलन अंगों का कार्य करते हैं। शरीर में श्वसन रंध्र पाए जाते हैं। इसका उदर दस खंडों में विभक्त रहता है। तिलचट्टे का शरीर 2.5 से 4 सेंटीमीटर लंबा तथा 1.5 सेंटीमीटर चौड़ा होता है। शरीर ऊपर से नीचे की ओर चपटा एवं खंडयुक्त होता है। नर तिलचट्टा आकार में मादा तिलचट्टा से साधारणतः छोटा होता है। तिलचट्टे का श्वसन-तंत्र अनेक श्वसन-नलिकाओं से बनता है। ये नलिकाएँ बाहर की ओर श्वासरंध्रों द्वारा खुलती हैं। तिलचट्टे में दस जोड़े श्वासरंध्र होते हैं, दो वक्ष में और आठ उदर में।

* प्रबंधक, कंटेनर फ्रेट स्टेशन, द्रोणागिरि नोड, मुम्बई

वैसे, तिलचट्टे को देखकर आपके मन में क्या विचार आता है? यदि आप डरपोक होंगे तो चिल्लाएंगे और यदि थोड़े से बहादुर होंगे तो चप्पल या झाड़ू लेकर तिलचट्टे को मारने दौड़ेंगे। यदि किसी मित्र/रिश्तेदार के घर में या किसी होटल में तिलचट्टा दिखाई दे जाए तो वहाँ का पानी भी पीने का मन नहीं करता है। ट्रेन के या हवाई जहाज के खाने में तिलचट्टा निकलने के समाचार अक्सर सुनने को मिलते रहते हैं। तिलचट्टा हमारे भोजन को अपने थूक और मल से प्रदूषित कर देता है। इनके शरीर से एक स्राव निकलता है, जिससे एक विशेष दुर्गंध निकलती है।

आपने 'लीडर' फिल्म का ये देशभक्ति गीत अवश्य ही सुना होगा "अपनी आजादी को हम हरगिज मिटा सकते नहीं, सर कटा सकते हैं, लेकिन सर झुका सकते नहीं"। इस गीत को तिलचट्टों ने अपने जीवन में पूरी तरह से उतारा है, आपको जानकर आश्चर्य होगा कि सर कटने के बाद भी तिलचट्टा मरता नहीं है बल्कि सात से नौ दिन तक जिंदा रहता है। इनकी मौत भूख नहीं, बल्कि प्यास के कारण ही होती है क्योंकि पानी पीने के लिए तो मुँह की आवश्यकता होती है। ऐसी ही अनेक विशेषताएँ तिलचट्टे को एक अद्भुत प्राणी बनाती है—

- तिलचट्टे सबसे तेज भागने वाला कीड़े हैं, यह एक घंटे में पाँच किलोमीटर तक दौड़ सकते हैं।
- तिलचट्टे सर्वभक्षी होते हैं अर्थात् यह कागज, लकड़ी, चमड़ा, साबुन, गोंद, टूथपेस्ट इत्यादि सब कुछ खा सकते हैं।
- तिलचट्टे अपनी साँस 40 मिनट तक रोक सकते हैं।
- तिलचट्टे अपने आप को अत्यधिक संकुचित कर सकते हैं और अपने शरीर को एक छोटी-सी 1.6 मिलीमीटर तक की दरार के अंदर भी समा सकते हैं। यह लगभग वैसे ही है जैसे आप अपने शरीर को एक फुटबॉल के अंदर समाने का प्रयत्न करें।
- ये शून्य डिग्री तापमान में भी जीवित रह सकते हैं।
- ये केवल सूँघकर अपने परिवार को पहचान सकते हैं।
- पंख होने के बावजूद ये अधिक दूरी तक उड़ नहीं पाते क्योंकि इनका पंखों की तुलना में इनका शरीर थोड़ा वजनी होता है।
- ऐसा माना जाता है कि इन पर विकिरण का भी प्रभाव नहीं होता, हिरोशिमा और नागासाकी में जो परमाणु बम गिरने से सभी मनुष्य मारे गए वहाँ भी तिलचट्टे जिंदा घूमते पाए गए।

- तिलचट्टे के शरीर के पिछले भाग पर छोटे-छोटे बाल हर दिशा में होते हैं। इन बालों के कारण इन्हें हर ओर से हवा की दिशा का ज्ञान हो जाता है। यही कारण है जैसे ही आप इसे मारने के लिए जमीन से जूता, चप्पल या झाड़ू उठाते हैं तो इसे इसका तुरंत आभास हो जाता है। यही वह समय होता है जब इसे अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता है। यह अपनी भागने और शरीर को सिकोड़ने की क्षमता का भरपूर लाभ उठाते हुए तुरंत दूसरी दिशा की ओर दौड़ लगाता है और या तो दरवाजे के नीचे से निकलकर भाग जाता है या किसी छोटी-सी दरार में घुस जाता है। अब आप अपना जूता, चप्पल हाथ में लेकर ढूँढते रहिए पूरे घर में।

तिलचट्टों को ये विशेष शक्तियाँ प्रकृति से मिली हैं उनके आगे मनुष्य असफल हो चुका है। आज विज्ञान भले ही कितना भी आगे क्यों न पहुँच चुका हो लेकिन तिलचट्टों से मुक्ति पाने में पूरी तरह से असफल रहा है। आज बाजार में अनेक कंपनियाँ तिलचट्टों को मारने के रसायन बनाकर अच्छा-खासा मुनाफा कमा रही हैं। यह आम लोगों के बीच तिलचट्टे के प्रति डर या घृणा का लाभ उठा रही हैं, जबकि आज की सच्चाई यह है कि तिलचट्टों ने इन तमाम रसायनों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली है और वह धीरे-धीरे और भी शक्तिशाली होते जा रहे हैं। आज स्थिति यह है कि आप केवल इन्हें नियंत्रित कर सकते हैं, परंतु इनका संपूर्ण अंत नहीं कर सकते।

यदि आपको अपने घर में तिलचट्टा दिखाई दे रहा है तो यह आपके घर में साफ-सफाई की कमी को दर्शाता है। यदि आप रात को रसोई में गैस स्टोव और सिंक के आस-पास खाने के कुछ कण छोड़ देते हैं या रात को सिंक में बर्तन छोड़ देते हैं तो ये तिलचट्टों को खुला निमंत्रण है। यदि आप भी ऐसा करते हैं तो जरा रात को उठिए और रसोई में जाकर देखिए वहाँ तिलचट्टे दावत का आनंद लेते दिखाई देंगे, इसलिए यदि आप तिलचट्टों के इस रात्रि-भोज को बंद करना चाहते हैं तो रात को ही रसोई को पूरी तरह से साफ करें, यही इसका एकमात्र उपाय है। तिलचट्टे जहाँ भी रहते हैं परिवार सहित रहते हैं। यदि आपको अपने घर में एक भी तिलचट्टा दिखाई दे रहा है तो केवल उस एक अकेले निरीह प्राणी को मारकर खुश मत होइए। उसके अन्य बंधु-बांधव भी अवश्य ही आपके घर के किसी कोने में मौजूद होंगे।

केवल सफाई की आदत ही आपको इनके चंगुल से मुक्ति दिला सकती है इसलिए सबसे पहले ऐसी आदतें पालिए जिनसे



इन अवांछित अतिथियों का आगमन आपके घर में न हो, वरना आप यही कहते रह जाएंगे कि अतिथि तुम कब जाओगे? रसोई, भोजन कक्ष या खाने की टेबल पर भोजन के कण/अवशेष न छोड़ें। रसोई का सिंक पाइप, गैस सिलिंडर, फ्रिज और माइक्रोवेव ओवेन इनके छुपने के प्रमुख स्थान हैं। सिंक में जूटे बर्तन कभी भी न छोड़ें। बचा हुआ खाना हमेशा ढक कर ही रखें। कचरे के डब्बे को भी बंद रखें तथा नियमित अंतराल में धोते रहें। रसोई की शेल्फ पर या बाथरूम में कहीं भी पानी न रहने दें, नहीं तो आपका ये विशिष्ट अतिथि तो केवल पानी पीकर भी जिंदा रह लेगा। किसी नल से यदि पानी टपक रहा हो तो उसे ठीक करवाएँ। घर में कूड़ा-कचरा जितना कम होगा आपका ये अतिथि उतनी जल्दी आपके घर से भागेगा।

और अंत में, सौ बात की एक बात, यदि आप अपने घर/कार्यालय/दुकान इत्यादि स्थानों की आवश्यक सफाई नहीं रख पा रहे हैं और इन तिलचट्टों से परेशान हैं तो आप हमारे लिए साक्षात भगवान का रूप हैं क्योंकि जिस तरह हर डॉक्टर का क्लीनिक और केमिस्ट की दुकान मरीजों के कारण चलती है, उसी प्रकार हमारा कीट नियंत्रण विभाग भी आप जैसे लोगों के कारण ही चलता है। हम आपसे केवल एक फोन कॉल की दूरी पर हैं। यदि आप रात को चैन की नींद सोना चाहते हैं तो तुरंत हमारे निगम के कीट नियंत्रण विभाग से हमारे टोल फ्री फोन नंबर 1800-313-0026 पर संपर्क कीजिए। आपका हर पल स्वागत है। हमारा निगम आपकी सेवार्थ हरदम तत्पर है।

कर्ण : एक परिचय

संजीव कुमार साहू *

पांडवों के कुल से जो कौरवों के खेमों में खड़े थे ।
धनुर्धर वो अप्रतिम थे, जो रण में अर्जुन से भिड़े थे ॥
माधव थे सारथी जिसके, अंजनाये जहां स्वयं सवार थे ।
वैसे रथ को भी डिगा दे, महारथी वो कर्ण नियति के शिकार थे ॥
जन्म से वंचित वो जो राजतिलक के थे परम अधिकारी ।
सूतपुत्र वो जीवनपर्यंत लड़े स्वयं के अस्तित्व की लड़ाई ॥
अनुज जिसके सुख ऐश्वर्यों से राजमहलों में बढ़े थे ।
देखो दुर्भाग्य राधेय का जो अश्वों के बीच पले थे ॥
था दूसरा न कोई शूरवीर कर्ण-सा,
कवच-कुंडल के साथ था जो जन्मा अंश सूर्य का ॥
दानवीर ऐसा की स्वर्ग के राजा इंद्र को भी याचक बना दे ।
वरना कौन था आर्यवृत में योद्धा दूजा, जो रण में कर्ण को हरा दे ॥
गंगा मां के लाडले वो नियति से हर मोड़ पे लड़े थे ।
किंतु, मित्रता के वचन से बंधे वो अंगद से अडिग खड़े थे ॥
धर्म-अधर्म की परिभाषा से परे, अपने वचनों के लिए जो जिए थे ।
धर्म की लड़ाई में वही कर्ण अधर्म से वीरगति को मिले थे ॥
कर्ण जैसे दानवीर योद्धा फिर कहा इस धरा पर उतरे थे ।
माधव भी थे प्रशंसक जिसके शौर्य के, सूतपुत्र वो कर्ण ही तो थे ॥

* प्रबन्धक (लेखा), निगमित कार्यलय, नई दिल्ली

जी हाँ, मैं चौकीदार हूँ

डॉ. मीना राजपूत *

जी हाँ, आपने सही सुना....., मैं चौकीदार हूँ, पहरेदार हूँ। चौकस, चौकन्ना और अपने काम में तत्पर देश का एक ईमानदार सिपाही। और, मुझे यह कहने में किसी तरह का संकोच या झिझक महसूस नहीं हो रही है, बल्कि अपनी महिमा और गरिमा पर मुझे गर्व है। यह कहते हुए मुझे गौरव और असीम आनंद की अनुभूति हो रही है कि मैं देश के किसी काम आ सका। सचमुच, मैं धन्य हो गया।

मैं केंद्रीय भंडारण निगम हूँ। मेरी स्थापना कृषि उपज अधिनियम, 1956 के अंतर्गत वैधानिक संस्था के रूप में 2 मार्च, 1957 को हुई। मैं प्रमुख भंडारण एजेंसी और भारत की सार्वजनिक भांडागार चलाने वाली सबसे बड़ी संस्था हूँ। कृषि उत्पाद से लेकर विभिन्न प्रकार की औद्योगिक वस्तुओं तक की किफायती लागत पर मैं ग्राहकों को वैज्ञानिक भंडारण सेवाएं प्रदान कर रहा हूँ। मुझे फख है कि आज मैं देश भर में 111.24 लाख मिलियन टन भंडारण क्षमता के 458 भांडागार चला रहा हूँ। इस दिशा में नित नए सार्थक निर्माण के लिए मैं सतत प्रयासरत हूँ। खाद्यान्न भंडारण, औद्योगिक भंडारण, कस्टम बॉडेड भंडारण, कंटेनर फ्रेट स्टेशन, इनलैंड कंटेनर डिपो, एअर कॉर्गो कॉम्प्लेक्स, इंटीग्रेटेड रेल टर्मिनल आदि मेरी गतिविधियों में मुख्य रूप से शामिल हैं। भंडारण और रख-रखाव के अलावा, भंडारण से जुड़े अन्य संबंधित कार्य, यथा – क्लिअरिंग और फॉरवर्डिंग सेवाएं, कीटनाशन सेवाएं, प्रधूमन सेवाएं आदि भी प्रदान कर रहा हूँ। किसानों, व्यापारियों, आयातकों, निर्यातकों, शिपिंग एजेंसियों आदि को आर्थिक व स्वास्थ्य नुकसान से बचाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा हूँ। मुझे यह बताते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि अपनी स्थापना के दिन से आज तक मैं पूरी निष्ठा, जिम्मेदारी और समर्पण भाव से अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ। पूरी ईमानदारी से, निष्कपट भाव से, बिना किसी ढिलाई के, सभी प्रकार के माल की सुरक्षा कर रहा हूँ। कृषि उत्पादों से लेकर अत्यंत परिष्कृत औद्योगिक उत्पादों के वैज्ञानिक भंडारण का मेरा रिकार्ड आज भी कायम है, तथापि खाद्यान्न भंडारण के अपने मुख्य उद्देश्य को मैं कभी नहीं भूला हूँ। खाद्यान्न भंडारण में तो मुझे विशेष महारत हासिल है और इसमें मेरी जान बसती है।

मैं आपको बता दूँ, मैंने सदा ही ग्राहकों को, ग्राहक संतुष्टि को अपने जीवन का महत्वपूर्ण उद्देश्य माना। उत्पादन और ग्राहक के बीच सेतु का काम किया और इनमें संतुलन बनाए रखा। अपने काम में सच्चाई और पारदर्शिता बरती। ग्राहकों को भंडारण के नियमों को समझाने में सुस्ती या हिसाब-किताब में किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं की और ग्राहक को दिए गए आश्वासन के अनुसार निश्चित सिद्धांतों और मानदंडों के अधीन कार्य करना अपना परम कर्तव्य समझा। मेरी और मेरे काम की असली व मौलिक पहचान यही है।

मेरे नाम के साथ 'मिनी रत्न' की सम्मानजनक उपाधि का मूल कारण भी काम के प्रति मेरी ईमानदारी और निष्ठा ही है। भंडारण के क्षेत्र में मेरा चौकन्नापन, नित नई ऊँचाइयों को छूना और ग्राहकों के प्रति मेरा सहज अपनापन मेरी साख को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं। आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में मैंने अपने पुराने ग्राहक को बनाए रखने सहित नए ग्राहक बनाने में भी अपनी एड़ी-चोटी का बल लगा दिया है। ग्राहकों की रुचि व आवश्यकता के अनुसार उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप और निगम के नियमों के अधीन उनकी व्यापारिक जरूरतों को यथासंभव पूरा किया है। ग्राहकों को गुणात्मक व उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान की हैं और उनकी उम्मीदों पर खरे उतरने का हर संभव प्रयास किया है।

नई-नई योजनाएं बनाना, पूर्ण क्षमता और उत्तरदायित्व के साथ रूपरेखा तैयार कर कार्य नीति बनाना, नीति के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सुचारु प्रबंधन करना, ग्राहकों की संतुष्टि के लिए सभी गतिविधियों को सफलतापूर्वक लागू करना, आय-व्यय का आकलन करना, कार्मिकों को उनके कार्यों व कर्तव्यों का मार्गदर्शन करना, एक अच्छा कार्य वातावरण बनाकर टीम भावना पैदा करना, नियमित रूप से भंडारित माल की समीक्षा – मूल्यांकन – कारगर उपाय करना, भविष्य की विश्वसनीय छवि तैयार करना आदि की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मेरे अधिकारियों के मजबूत कंधों पर रही है। उनके भगीरथ प्रयास का ही परिणाम है कि मैं निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर हूँ।

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई



मैंने सदा ही अन्य ग्राहकों से अधिक किसानों की मेहनत और खून-पसीने की पैदावार के भंडारण और उसके समुचित संरक्षण को अपनी मूलभूत सामाजिक जिम्मेदारी समझा। कृषि को सामाजिक सुरक्षा देने के लिए कृषि अर्थ-व्यवस्था को स्थायित्व देने का कार्य किया। मैं जानता हूँ कि इस काम को बरकरार रखना अपने आप में चुनौतीभरा है, लेकिन मुझे अपनी नीतियों और योजनाओं पर अटूट विश्वास है। अनुकूल नीतियों, कारगर योजनाओं, प्रभावी क्रियान्वयन ने मेरे काम को बखूबी अंजाम देने में काफी हद तक मदद की है। मेरे सुशिक्षित तकनीकी कार्मिक और प्रभावी तकनीकों के इस्तेमाल की कटिबद्धता ने प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षित और पौष्टिक अनाज उपलब्ध कराने के काम को आसान किया है, उसी तरह भंडारण क्षमता के अधिकतम उपयोग ने हर लक्ष्य हासिल करने में मेरी मदद की है।

एक ओर जहाँ मैं अपने विभिन्न स्तरों के कार्मिकों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों, व्याख्यानों आदि के माध्यम से सार्वजनिक वितरण प्रणाली के प्रचालन, नई-नई वैज्ञानिक तकनीक से समय-समय पर परिचित कराकर उन्हें दक्ष व पारंगत करता रहता हूँ, वहीं दूसरी ओर किसानों को कटाई के दौरान तथा उपरांत फसलों के सही रूप में अनाज संग्रहण, कीटों-जीवों से सुरक्षा, यातायात संबंधी व्यवस्थित सुविधाओं के लिए प्रशिक्षित कर उनका मनोबल बढ़ाता रहता हूँ। मैं मेटल साइलो, कोल्ड स्टोरेज जैसे खाद्यान्न संरक्षण के आधुनिक और वैज्ञानिक उपाय अपनाने के साथ किसानों को फसल कटाई के बाद अपने स्तर पर परंपरागत रूप में अनाज की उचित देखभाल कर सुरक्षित रखने, अनाज-फल-सब्जियों को समय से संग्रहीत करने, खाद्यान्न मात्रा और गुणवत्ता को बरकरार रखने के आसान और कारगर उपाय भी बताता रहता हूँ। इस तरह आधुनिक और पुरातन का बेजोड़ मेल कर फसल कटाई के बाद के नुकसान को कम करने सहित अनाज सुरक्षा का पावन कार्य कर रहा हूँ। किसानों को अपने भांडागारों में अनाज भंडारित करने पर उसे दी जाने वाली सरकारी सुविधाओं की विस्तार से जानकारी देता हूँ। अनाज सुरक्षित रखने सहित, किसानों को बीमा सुविधा एवं प्राप्ति रसीद पर बैंक से ऋण लेने की सुविधा भी प्रदान करता हूँ।

वैज्ञानिक भंडारण के प्रचार-प्रसार के लिए इस क्षेत्र में अपने अतुल्य ज्ञान और व्यापक अनुभवों को समाज में बाँटने की नैतिक जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए परामर्शदात्री सेवाएं दे रहा हूँ। भंडारण अवसंरचना निर्माण के लिए विभिन्न एजेंसियों को

प्रशिक्षण भी उपलब्ध करा रहा हूँ। इस तरह भंडारण के अपने नैतिक और सामाजिक दायित्व को पूरी तन्मयता और तल्लीनता से निभा रहा हूँ। इस कार्य से वैज्ञानिक भंडारण के उद्देश्य, महत्व, लाभ के प्रचार-प्रसार सहित मुझे असीम आत्मिक शांति भी प्राप्त होती है।

मैं यह कभी नहीं भूल सकता और न ही इस बात को नजरअंदाज कर सकता हूँ कि मेरी स्थापना किसानों के हित के उद्देश्य से की गई है। मैं किसानों के अपने प्रति अटूट विश्वास और मानवता की रक्षा के इस पावन कार्य के प्रति सदैव सजग, सतर्क, चौकस, चौकन्ना और तत्पर रहूँगा, क्योंकि मैं चौकीदार हूँ, मैं पहरेदार हूँ। चौकस, चौकन्ना और अपने काम में तत्पर देश का एक ईमानदार सिपाही।

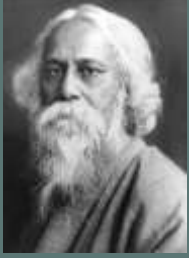
‘तलाश’

धर्मेन्द्र कुमार अस्थाना *

भूख में एक रोटी की तलाश,
अंधेरे में इक किरण की तलाश,
सूखे में एक बूंद की तलाश,
झंझावटों में सुकूँ की तलाश,
जिंदा तो हैं पर जिंदगी की तलाश,
सफर में राहों की तलाश,
भटकाव में मंजिल की तलाश,
गमों में एक पल खुशी की तलाश,
जिंदगी के ताने बाने में, ख्वाहिशों की तलाश
ख्वाहिशों, ख्वाबों के बीच, खुद की तलाश
सदियों से जारी वो तलाश.....
जब तक नहीं मिलता, सत्य का प्रकाश..।।

* परियोजना प्रबंधक (आउटसोर्स), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

भिखारिन . . .



गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई सन् 1861 को कोलकाता में हुआ था। रवींद्रनाथ टैगोर एक कवि, उपन्यासकार, नाटककार, चित्रकार, और दार्शनिक थे। रवींद्रनाथ टैगोर एशिया के प्रथम व्यक्ति थे, जिन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। आठ वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी पहली कविता लिखी, सोलह साल की उम्र में उन्होंने कहानियां और नाटक लिखना प्रारंभ कर दिया था। अपने जीवन में उन्होंने एक हजार कविताएं, आठ उपन्यास, आठ कहानी संग्रह और विभिन्न विषयों पर अनेक लेख लिखे। इतना ही नहीं रवींद्रनाथ टैगोर संगीत प्रेमी थे और उन्होंने अपने जीवन में 2000 से अधिक गीतों की रचना की। उनके लिखे दो गीत आज भारत और बांग्लादेश के राष्ट्रगान हैं। समुद्री मार्ग से भारत से इंग्लैंड जाते समय उन्होंने अपने कविता संग्रह गीतांजलि का अंग्रेजी अनुवाद करना प्रारंभ किया। गीतांजलि के प्रकाशित होने के एक साल बाद सन् 1913 में रवींद्रनाथ टैगोर को नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। टैगोर सिर्फ महान रचनाधर्मी ही नहीं थे, बल्कि वो पहले ऐसे इंसान थे जिन्होंने पूर्वी और पश्चिमी दुनिया के मध्य सेतु बनने का कार्य किया था। टैगोर केवल भारत के ही नहीं समूचे विश्व के साहित्य, कला और संगीत के एक महान प्रकाश स्तंभ हैं, जो स्तंभ अनंतकाल तक प्रकाशमान रहेगा।

अंधी प्रतिदिन मन्दिर के दरवाजे पर जाकर खड़ी होती, दर्शन करने वाले बाहर निकलते तो वह अपना हाथ फैला देती और नम्रता से कहती— “बाबूजी, अन्धी पर दया हो जाए।”

वह जानती थी कि मन्दिर में आने वाले सहृदय और श्रद्धालु होते हैं। उसका यह अनुमान असत्य न था। आने-जाने वाले दो-चार पैसे उसके हाथ पर रख ही देते। अन्धी उनको दुआएं देती और उनकी सहृदयता को सराहती। स्त्रियां भी उसके पल्ले में थोड़ा-बहुत अनाज डाल जाया करती थीं।

सुबह से शाम तक वह इसी प्रकार हाथ फैलाए खड़ी रहती। उसके पश्चात मन-ही-मन भगवान को प्रणाम करती और अपनी लाठी के सहारे झोंपड़ी का पथ ग्रहण करती। उसकी झोंपड़ी नगर से बाहर थी। रास्ते में भी याचना करती जाती किन्तु राहगीरों में अधिक संख्या श्वेत वस्त्रों वालों की होती, जो पैसे देने की अपेक्षा झिड़कियां दिया करते हैं। तब भी अन्धी निराश न होती और उसकी याचना बराबर जारी रहती। झोंपड़ी तक पहुंचते-पहुंचते उसे दो-चार पैसे और मिल जाते।

झोंपड़ी के समीप पहुंचते ही एक दस वर्ष का लड़का उछलता-कूदता आता और उससे चिपट जाता। अन्धी टटोलकर उसके मस्तक को चूमती।

बच्चा कौन है? किसका है? कहां से आया? इस बात से कोई परिचय नहीं था। पांच वर्ष हुए पास-पड़ोस वालों ने उसे अकेला देखा था। इन्ही दिनों एक दिन संध्या-समय लोगों ने उसकी गोद में एक बच्चा देखा, वह रो रहा था, अन्धी उसका मुख चूम-चूमकर उसे चुप कराने का प्रयत्न कर रही थी। वह कोई असाधारण घटना न थी, अतः किसी ने भी न पूछा कि बच्चा किसका है। उसी दिन से यह बच्चा अन्धी के पास था और प्रसन्न था। उसको वह अपने से अच्छा खिलाती और पहनाती।

अन्धी ने अपनी झोंपड़ी में एक हांडी गाड़ रखी थी। संध्या-समय जो कुछ मांगकर लाती उसमें डाल देती और उसे किसी वस्तु से ढांप देती। इसलिए कि दूसरे व्यक्तियों की दृष्टि उस पर न पड़े। खाने के लिए अन्न काफी मिल जाता था। उससे काम चलाती। पहले बच्चे को पेट भरकर खिलाती फिर स्वयं खाती। रात को बच्चे को अपने वक्ष से लगाकर वहीं पड़ी रहती। प्रातः काल होते ही उसको खिला-पिलाकर फिर मन्दिर के द्वार पर जा खड़ी होती।

काशी में सेठ बनारसीदास बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। बच्चा-बच्चा उनकी कोठी से परिचित है। बहुत बड़े देशभक्त और धर्मात्मा हैं। धर्म में उनकी बड़ी रूचि है। दिन के बारह बजे



तक सेठ स्नान-ध्यान में संलग्न रहते। कोठी पर हर समय भीड़ लगी रहती। कर्ज के इच्छुक तो आते ही थे, परन्तु ऐसे व्यक्तियों का भी तांता बंधा रहता जो अपनी पूंजी सेठजी के पास धरोहर रूप में रखने आते थे। सैकड़ों भिखारी अपनी जमा-पूंजी इन्हीं सेठजी के पास जमा कर जाते। अन्धी को भी यह बात ज्ञात थी, किन्तु पता नहीं अब तक वह अपनी कमाई यहां जमा कराने में क्यों हिचकिचाती रही।

उसके पास काफी रूपये हो गए थे, हांडी लगभग पूरी भर गई थी। उसको शंका थी कि कोई चुरा न ले। एक दिन संध्या-समय अन्धी ने वह हांडी उखाड़ी और अपने फटे हुए आंचल में छिपाकर सेठजी की कोठी पर पहुंची।

सेठजी बही-खाते के पृष्ठ उलट रहे थे, उन्होंने पूछा- 'क्या है बुढ़िया?'

अन्धी ने हांडी उनके आगे सरका दी और डरते-डरते कहा- 'सेठजी, इसे अपने पास जमा कर लो, मैं अन्धी, अपाहिज कहां रखती फिरुंगी?'

सेठजी ने हांडी की ओर देखकर कहा- 'इसमें क्या है?'

अन्धी ने उत्तर दिया- 'भीख मांग-मांगकर अपने बच्चे के लिए दो-चार पैसे संग्रह किये हैं, अपने पास रखते डरती हूं, कृपया इन्हें आप अपनी कोठी में रख लें।'

सेठजी ने मुनीम की ओर संकेत करते हुए कहा- 'बही में जमा कर लो।' फिर बुढ़िया से पूछा- 'तेरा नाम क्या है?'

अन्धी ने अपना नाम बताया, मुनीमजी ने नकदी गिनकर उसके नाम से जमा कर ली और वह सेठजी को आशीर्वाद देती हुई अपनी झोंपड़ी की राह चली गई।

दो वर्ष बहुत सुख के साथ बीते। इसके पश्चात एक दिन लड़के को ज्वर ने आ दबाया। अन्धी ने दवा-दारु की, झाड़-फूंक से काम लिया, टोने-टोटके की परीक्षा की, परन्तु सम्पूर्ण प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए। लड़के की दशा दिन-प्रतिदिन बुरी होती गई, अन्धी का हृदय टूट गया, साहस ने जवाब दे दिया, निराश हो गई। परन्तु फिर ध्यान आया कि संभवतः डॉक्टर के इलाज से फायदा हो जाए। इस विचार के आते ही वह गिरती-पड़ती सेठजी की कोठी पर आ पहुंची। सेठजी उपस्थित थे।

अन्धी ने कहा- 'सेठजी मेरी जमा-पूंजी में से दस-पांच रूपये मुझे मिल जायें तो बड़ी कृपा हो। बच्चा मर रहा है, डॉक्टर को दिखाऊंगी।'

सेठजी ने कठोर स्वर में कहा- 'कैसी जमा पूंजी? कैसे रूपये? मेरे पास किसी के रूपये जमा नहीं हैं।'

अन्धी ने रोते हुए उत्तर दिया- 'दो वर्ष हुए मैं आपके पास धरोहर रख गई थी। दे दीजिए बड़ी दया होगी।'

सेठजी ने मुनीम की ओर रहस्यमयी दृष्टि से देखते हुए कहा-

'मुनीमजी, जरा देखना तो, इसके नाम की कोई पूंजी जमा है क्या? तेरा नाम क्या है री?'

अन्धी की जान-में-जान आई, आशा बंधी। पहला उत्तर सुनकर उसने सोचा कि सेठ बेईमान है, किन्तु अब सोचने लगी सम्भवतः उसे ध्यान न रहा होगा। ऐसा धर्मी व्यक्ति भी भला कहीं झूठ बोल सकता है। उसने अपना नाम बता दिया। उलट-पलटकर देखा। फिर कहा- 'नहीं तो, इस नाम पर एक पाई भी जमा नहीं है।'

अन्धी वहीं जमी बैठी रही। उसने रो-रोकर कहा- 'सेठजी, परमात्मा के नाम पर, धर्म के नाम पर, कुछ दे दीजिए। मेरा बच्चा जी जाएगा। मैं जीवन-भर आपके गुण गाऊंगी।'

परन्तु पत्थर में जोंक न लगी। सेठजी ने क्रुद्ध होकर उत्तर दिया- 'जाती है या नौकर को बुलाऊं।'

अन्धी लाठी टेककर खड़ी हो गई और सेठजी की ओर मुंह करके बोली- 'अच्छा भगवान तुम्हें बहुत दे। और अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।'

यह आशीष न थी बल्कि एक दुखी का शाप था। बच्चे की दशा बिगड़ती गई, दवा-दारु हुई ही नहीं, फायदा क्योंकर होता। एक दिन उसकी अवस्था चिन्ताजनक हो गई, प्राणों के लाले पड़ गये, उसके जीवन से अन्धी भी निराश हो गई। सेठजी पर रह-रहकर उसे क्रोध आता था। इतना धनी व्यक्ति है, दो-चार रूपये दे देता तो क्या चला जाता और फिर मैं उससे कुछ दान नहीं मांग रही थी, अपने ही रूपये मांगने गई थी। सेठजी से घृणा हो गई।

बैठे-बैठे उसको कुछ ध्यान आया। उसने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और ठोकरें खाती, गिरती-पड़ती, सेठजी के पास पहुंची और उनके द्वार पर धरना देकर बैठ गई। बच्चे का शरीर ज्वर से भभक रहा था और अन्धी का कलेजा भी।

एक नौकर किसी काम से बाहर आया। अन्धी को बैठा देखकर उसने सेठजी को सूचना दी, सेठजी ने आज्ञा दी कि उसे भगा दो।

नौकर ने अन्धी से चले जाने को कहा, किन्तु वह उस स्थान से न हिली। मारने का भय दिखाया, पर वह टस-से-मस न हुई। उसने फिर अन्दर जाकर कहा कि वह नहीं टलती।

सेठजी स्वयं बाहर पधारे। देखते ही पहचान गये। बच्चे को देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी शकल-सूरत उनके मोहन से बहुत मिलती-जुलती है। सात वर्ष हुए तब मोहन किसी मेले में खो गया था। उसकी बहुत खोज की, पर उसका कोई पता न मिला। उन्हें स्मरण हो आया कि मोहन की जांघ पर एक लाल रंग का चिन्ह था। इस विचार के आते ही उन्होंने अन्धी की गोद के बच्चे की जांघ देखी। चिन्ह अवश्य था परन्तु पहले से कुछ बड़ा। उनको विश्वास हो गया कि बच्चा उन्हीं का है। परन्तु

तुरन्त उसको छीनकर अपने कलेजे से चिपटा लिया। शरीर ज्वर से तप रहा था। नौकर को डॉक्टर लाने के लिए भेजा और स्वयं मकान के अन्दर चल दिये।

अन्धी खड़ी हो गई और चिल्लाने लगी—‘मेरे बच्चे को न ले जाओ, मेरे रूपये तो हजम कर गये अब क्या मेरा बच्चा भी मुझसे छीनोगे?’

सेठजी बहुत चिन्तित हुए और कहा—‘बच्चा मेरा है, यही एक बच्चा है, सात वर्ष पूर्व कहीं खो गया था अब मिला है, सो इसे कहीं नहीं जाने दूंगा और लाख यत्न करके भी इसके प्राण बचाऊंगा।’

अन्धी ने एक जोर का ठहाका लगाया—‘तुम्हारा बच्चा है, इसलिए लाख यत्न करके भी उसे बचाओगे। मेरा बच्चा होता तो उसे मर जाने देते, क्यों? यह भी कोई न्याय है? इतने दिनों तक खून—पसीना एक करके उसको पाला है। मैं उसको अपने हाथ से नहीं जाने दूंगी।’

सेठजी की अजीब दशा थी। कुछ करते—धरते बन नहीं पड़ता था। कुछ देर वहीं मौन खड़े रहे फिर मकान के अन्दर चले गये। अन्धी कुछ समय तक खड़ी रोती रही फिर वह भी अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।

दूसरे दिन प्रातः काल प्रभु की कृपा हुई या दवा ने जादू का—सा प्रभाव दिखाया। मोहन का ज्वर उतर गया। होश आने पर उसने आँखे खोली तो सर्वप्रथम शब्द उसकी जबान से निकला, माँ।’

चहुं ओर अपरिचित शकलें देखकर उसने अपने नेत्र फिर बन्द कर लिये। उस समय से उसका ज्वर फिर अधिक होना आरम्भ हो गया। माँ—माँ की रट लगी हुई थी, डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, सेठजी के हाथ—पाँव फूल गये, चहुं ओर अंधेरा दिखाई पड़ने लगा।

क्या करूँ, एक ही बच्चा है, इतने दिनों बाद मिला भी तो मृत्यु उसको अपने चंगुल में दबा रही है, इसे कैसे बचाऊँ?

सहसा उनको अन्धी का ध्यान आया। पत्नी को बाहर भेजा कि देखो कहीं वह अब तक द्वार पर न बैठी हो। परन्तु वह वहाँ कहीं? सेठजी ने फिटन तैयार कराई और बस्ती से बाहर उसकी झोंपड़ी पर पहुँचे। झोंपड़ी बिना द्वार के थी, अन्दर गए। देखा अन्धी एक फटे—पुराने टाट पर पड़ी है और उसके नेत्रों से अश्रु धार बह रही है। सेठजी ने धीरे से उसको हिलाया। उसका शरीर भी अग्नि की भांति तम रहा था।

सेठजी ने कहा—‘बुढ़िया! तेरा बच्चा मर रहा है, डॉक्टर निराश हो गए, रह—रहकर वह तुझे पुकारता है। अब तू ही उसके प्राण बचा सकती है। चल और मेरे.....नहीं—नहीं अपने बच्चे की जान बचा ले।’

अन्धी ने उत्तर दिया—‘मरता है तो मरने दो, मैं भी मर रही हूँ। हम दोनों स्वर्ग—लोक में फिर माँ—बेटे की तरह मिल जाएंगे। इस लोक में सुख नहीं है, वहाँ मेरा बच्चा सुख में रहेगा। मैं वहाँ उसकी सुचारु रूप से सेवा—सुश्रूषा करूंगी।’

सेठजी रो दिए। आज तक उन्होंने किसी के सामने सिर न झुकाया था। किन्तु इस समय अन्धी के पाँवों पर गिर पड़े और रो—रोकर कहा—‘ममता की लाज रख लो, आखिर तुम भी उसकी माँ हो। चलो, तुम्हारे जाने से वह बच जायेगा।’

ममता शब्द ने अन्धी को विकल कर दिया। उसने तुरन्त कहा—‘अच्छा चलो।’

सेठजी सहारा देकर उसे बाहर लाये और फिटन पर बिठा दिया। फिटन घर की ओर दौड़ने लगी। उस समय सेठजी और अन्धी भिखारिन दोनों की एक ही दशा थी। दोनों की यही इच्छा थी कि शीघ्र—से—शीघ्र अपने बच्चे के पास पहुँच जायें।

कोठी आ गई, सेठजी ने सहारा देकर अन्धी को उतारा और अन्दर ले गए। भीतर जाकर अन्धी ने मोहन के माथे पर हाथ फेरा। मोहन पहचान गया कि यह उसकी माँ का हाथ है। उसने तुरन्त नेत्र खोल दिये और उसे अपने समीप खड़े हुए देखकर कहा—‘माँ, तुम आ गई।’

अन्धी ने स्नेह से भरे स्वर में उत्तर दिया—‘हाँ बेटा, तुम्हें छोड़ कर कहाँ जा सकती हूँ।’

अन्धी भिखारिन मोहन के सिरहाने बैठ गई और उसने मोहन का सिर अपने गोद में रख लिया। उसको बहुत सुख अनुभव हुआ और वह उसकी गोद में तुरन्त सो गया।

दूसरे दिन से मोहन की तबीयत अच्छी होने लगी और दस—पन्द्रह दिन में वह बिल्कुल स्वस्थ हो गया। जो काम हकीमों के जोशान्दे, वैद्यों की पुड़िया और डाक्टरों के मिक्सचर न कर सके वह अन्धी की स्नेहमयी सेवा ने पूरा कर दिया।

मोहन के पूरी तरह स्वस्थ हो जाने पर अन्धी ने विदा माँगी। सेठजी ने बहुत—कुछ कहा कि वह उन्हीं के पास रह जाए परन्तु वह सहमत न हुई, विवश होकर विदा करना पड़ा। जब वह चलने लगी तो सेठजी ने रूपयों की एक थैली उसके हाथ में दे दी। अन्धी ने मालूम किया, “इसमें क्या है?”

सेठजी ने कहा—“इसमें तुम्हारे धरोहर है, तुम्हारे रूपये। मेरा अपराध.....!”

अन्धी ने बात काट कर कहा—“यह रूपये तो मैंने तुम्हारे मोहन के लिए संग्रह किये थे, उसी को दे देना।”

अन्धी ने थैली वहीं छोड़ दी और लाठी टेकती हुई चल दी। बाहर निकलकर फिर उसने उस घर की ओर नेत्र उठाये उसके नेत्रों से अश्रु बह रहे थे किन्तु वह एक भिखारिन होते हुए भी सेठ से महान थी। इस समय सेठ याचक था और वह दाता थी।



रिटायरमेंट – एक स्वर्णिम काल

कुमार चंद्र सिंह नेगी *

हर नौकरी वाले का रिटायरमेंट होना लाजिमी है, जो तयशुदा तारीख पर ही होता है। रिटायरमेंट के बाद अब कैसे समय कटेगा? यह प्रश्न हर किसी के ज़हन में सबसे पहले आता है और इसके लिए उसे मानसिक व शारीरिक रूप से अभी तक वह जिस लय का आदी था, अब इस लय को तोड़कर एक नये लय का प्रारम्भ करना होता है, यूँ कहें कि जिंदगी के एक नये चरण का प्रारम्भ !!

जैसा सब लोग जानते हैं कि हिंदू धर्म दर्शन के अनुसार जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिये चार आश्रम तय किए गए थे। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ आश्रम व सन्यास आश्रम। ये आश्रम जीवनयापन के लिए एक आदर्श सूत्र के रूप में थे और मनीषी लोग इन आश्रमों के तय समय में ही अपना जीवनयापन उसी हिसाब से चलाते थे और चौरासी लाख योनियों से मिली मानव जीवन को सफल बनाते थे। इन सब आश्रमों में सबसे महत्वपूर्ण है – वानप्रस्थ आश्रम जिसे 'रिटायरमेंट आश्रम' का स्वर्णिम काल कहा जाए तो ज्यादा उचित होगा।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए शिक्षा पूरी करनी होती है, फिर गृहस्थाश्रम में सांसारिक कार्यों का संपादन यानी धनार्जन करते शादी, बच्चे, उनकी शिक्षा, उनकी शादी आदि सांसारिक कार्यों का निपटान होता है, फिर समय आता है वानप्रस्थ आश्रम जो अब नौकरी पेशा लोगों के लिए 60 साल का हो गया है, (जिसमें 10 साल का ग्रेस पीरियड मिल जाने से) यानी 25 साल ब्रह्मचर्य आश्रम, 25 से 50 साल तक गृहस्थ आश्रम था जो विस्तारित होकर 60 साल हो गया है।

तपस्वी संत महात्मा समाजसेवी श्री राम शर्मा ने कितना सटीक और सही कहा है—वानप्रस्थ संस्कार में (रिटायरमेंट संस्कार यानि विदाई समारोह के बाद) प्रतिभा, योग्यता व साधनों का समाज की निः स्वार्थ सेवा में सदुपयोग करना श्रेयस्कर है।

इन सभी संस्कारों/ आश्रमों की प्रासंगिकता आज भी उतनी

ही है जितनी पहले थी क्योंकि सुख और शांति मनुष्य की पहली आवश्यकता होती है, जिसकी शुरुआत असल में वानप्रस्थ आश्रम में यानि रिटायरमेंट संस्कार से शुरू हो जाती है। यानी वानप्रस्थ अवस्था में आते-आते, किसी ने ईमानदारी कमाई है, तो किसी ने धन, किसी ने विद्या, व्यवहार तो किसी ने कई अन्य प्रकार के गुण कमाए हैं, इसी समय अपने छूटे शौक (हॉबीज) को पूरा करने का सुंदर अवसर है जैसे किसी संस्था से जुड़ना जो जमीनी स्तर पर निःस्वार्थ भावना से मानवता की सेवा कर रही है, अच्छे लोगों से जुड़ना एक सही दिशा की ओर ले जाता है और वानप्रस्थ समय में यह सब संभव है।

वानप्रस्थ आश्रम एक सपाट जिंदगी का हिस्सा नहीं होता है, इसमें कई स्थितियों, परिस्थितियों, स्वास्थ्य आदि से रूबरू होना पड़ता है। लेकिन बीते समय के अनुभव जरूर इनके प्रत्युत्तर बन जाते हैं। आजकल व पहले के वैचारिक मापदंड में अंतर और यहां तक कि तब और अब के सामाजिक मूल्यों में भी भारी अंतर आ गया है। इसी को जनरेशन गैप कहते हैं, ऐसी स्थिति में विरोध छोड़कर पैच अप करना होता है क्योंकि प्रतिरोध से पहले अपना नुकसान होता है, फिर घर का माहौल खराब होता है। नतीजा बाप-बेटे में खासकर कम्युनिकेशन गैप शुरू हो जाता है। समय की नस को समझना समझदारी है— इससे वानप्रस्थ अवस्था में मिटास का ही अनुभव होगा। चादर जितनी लंबी हो उसी के अनुरूप पाँव फैलाना ज्यादा अक्लमंदी है। यह संदेश भी अपने तरीके से जानना भी जरूरी है। पुरानी कहावत भी है – “आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपैया” को ध्यान में जो रखेगा खुशियाँ, संतोष उसके आंगन में हमेशा खेलते रहते हैं।

श्रीमद्भगवत गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं “जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जिस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता है, चाहे हमने सच्चे मन से पूरी मेहनत से उस कार्य को क्यों नहीं किया हो, फिर भी हमें जो चाहिए, वह नहीं मिलता है कभी-कभी फल की जगह दंड मिल जाता है”। हम सबके साथ कभी न कभी ऐसा होता है और हम सोचते हैं ऐसा क्यों हो रहा

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (सेवानिवृत्त), क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

हैं? आज के समय में बहुत आध्यात्मिक संस्थाएँ व मिशन के जरिये मानव सेवा में अपना योगदान दे रही हैं, जिनमें श्री श्री रविशंकर जी सुदर्शन क्रिया, श्री राम चंद्र मिशन में सहज योग, ब्रह्मकुमारी के राजयोग, स्वामी योगानंद का क्रिया योग, इनके अतिरिक्त सद्गुरु जग्गी महाराज, स्वामी शिवानंद हरिद्वार, डेवीइन लाइट मिशन आदि संस्थाओं के सेवा भाव से जीवन दर्शन को समझने में आसानी हो जाती है।

वानप्रस्थ आश्रम में मातृ – पितृ ऋण उतारने का भी सुनहरा वक्त होता है। माता-पिता की वृद्धावस्था में यानी वे अपने सन्यास आश्रम में अपने वक्त बिता रहे होते हैं। रुग्णता आदि की परिधि में ज्यादातर आ जाते हैं। उन्हें सहारे की सख्त जरूरत पड़ने लगती है। ऐसी अवस्था में सेवा भाव की बहुत आवश्यकता होती है। अतः सम्मान के साथ उनकी यथाशक्ति मदद करनी होती है। गृहस्थ आश्रम में कमाया धन का सदुपयोग करना, धन शक्ति का बहुत बड़ा अहम रोल वानप्रस्थ समय महसूस किया जा सकता है, अतः कुछ पूंजी अपने हाथ में रखना इस आश्रम में सुख और खुशी का आधार बन सकता है।

वानप्रस्थ समय में कृतज्ञता प्रगट करने का सही समय होता है। जितना समय मिल सके प्रकृति के साथ जुड़ने की कोशिश करना बहुत फायदेमंद होता है क्योंकि हम भी प्रकृति से ही बने हैं, हम लोगों का पोषण प्रकृति से ही हुआ है और हो रहा है, पृथ्वी, हवा, पानी, पेड़ – पौधे, पर्वत, नदी, झरने, तारे, सूर्य, चंद्रमा आदि नहीं किसी न किसी रूप में हमारे पोषक रहे हैं। हमारा दैहिक, दैविक, भौतिक संबंध भी इनसे ही रहा है। प्रकृति से जुड़ने का मतलब बहुत कुछ होता है। हम स्वयं से जुड़ रहे हैं, इस जुड़ाव में हमें अकेलेपन का भी आभास नहीं होगा। माया मोह का भान भी धीरे-धीरे खत्म होता जाएगा किंतु-परंतु का भान भी नहीं रहेगा। अनेकता से एकता के भान से एकांतवास का भाव जागेगा जिसमें केवल स्वयं का भान होगा और हम अपने ईश्वरी स्वरूप को पहचानने लगेंगे और यही अभीष्ट फल है प्रकृति के जुड़ाव का। प्रकृति के अनुरूप दिनचर्या बना लें, भोर में उठे ध्यान योग संपन्न कर, प्रातः कालीन सहर में सूर्य नमन करें और सुबह का लुप्त लें, चिड़ियों की चहचहाहट, फूलों से सुगंध, शीतल हवा का आनंद लें। इस प्रकार मन को सुकून से जीने के लिए और क्या चाहिए वानप्रस्थ आश्रम में?

सन्यास आश्रम में धार्मिक (rituals) रस्म रिवाज उम्र के साथ सब छूटते चले जाते हैं यानी शरीर इनको जारी रखने में

असमर्थ हो जाता है, यह सब वैसे भी छूटना ही है। सन्यास आश्रम के प्रवेश की पहली सीढ़ी में यदि सहज रूप से आध्यात्मिकता की ओर स्विच ओवर किया जाए तो बहुत उत्तम श्रेणी का यह प्रयास होता है। कहने का मतलब यह है कि वानप्रस्थ समय में ये सभी कर सकते हैं जब हम सोचते थे कि काश मेरे पास समय होता? तो आज समय है इसलिए सब कुछ, अब अपने समय में हो सकता है। हेल्थ इज़ वेल्थ – कहावत को चरितार्थ भी वानप्रस्थ समय में ही होता है। अब इसे नजरअंदाज भी नहीं कर सकते। ये करें, ये न करें (Do's व Don't) वाली नियमावली पर अब ध्यान देने की जरूरत महसूस होती है और होना भी चाहिये। इस प्रकार स्वास्थ्य अब प्राथमिकता लिस्ट के पहले पायदान पर होता है, क्योंकि स्वस्थ रहने पर ही अन्य कार्य संपादित हो सकते हैं। स्वस्थ शरीर नहीं तो जगत अधियारा !!

आंतरिक सुख के लिए निस्वार्थ सेवा करना वानप्रस्थ समय में सबसे उचित है। अपनी क्षमता के अनुसार द्रव्य दान, विद्या दान, अनुभव दान आदि सुपात्र को देना होता है। अच्छे वचन बोलना भी एक प्रकार का दान ही है

इसके अलावा कुछ अधूरे कार्य, जो हम गृहस्थ समय में पूर्ण न कर पाए, उसे भी वानप्रस्थ समय में अमलीजामा पहना सकते हैं। अपने बचपन के स्कूल के समय के साथी, कॉलेज समय के साथी और नौकरी के वक्त दिल के रिश्ते से बने साथियों को ढूँढ-ढूँढ कर उनसे संपर्क बनाया जा सकता है और उनसे संवाद कर उनसे मिला जा सकता है, क्योंकि इससे ओल्ड इज गोल्ड की अनुभूति होती है। कुछ हॉबीज विकसित कर उसे स्वर्णिम काल में अंजाम दिया जा सकता है। वृक्षारोपण का कार्य भी वानप्रस्थ समय में बखूबी किया जा सकता है। अपने खाली समय को उससे भरें जिससे खाली दिमाग शैतान का घर न बन पाये।

भगवान बुद्ध की जीवन यात्रा पर लिखी यह किताब – 'जहां-जहां पड़े चरण गौतम के' तिक न्यत ह्यान, वियतनाम के बुद्धिष्ठ स्कॉलर है, उन्होंने अपनी किताब में लिखा है कि सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, आदि सब वानप्रस्थ जीवन में अपने आप उतर जाता है, बशर्ते अपने वर्तमान पर ध्यान दें। वर्तमान समय को सम्यक आचरण में लाना भी है सर्वोपरि यानि वर्तमान में आप क्या कर रहे हैं? कहाँ जा रहे हैं? आपके कौन से साथी हैं? आप कहाँ, किसके साथ बैठक करते हैं? आप क्या खा रहे हैं! क्या पी रहे हैं? इन्हीं चीजों से भूत और भविष्य का निर्माण होता है, इसको



बुद्ध ने 'सचेतन अवस्था' कहा हैं क्योंकि इस समय उसे न आसमान छूने की जरूरत होती है न पाताल। वह धरातली विचारधारा में सम्यक हो जाता है और वानप्रस्थ समय इसके अनुकूल ही होता है।

इस प्रकार वानप्रस्थ समय में क्या नहीं हो सकता है? अपने अनुभव को समाज में बांटना, अपने सामर्थ्य के अनुसार दान देना, अपने समय व साधनों का समुचित सदुपयोग प्रकृति के लिए, मातृ-पितृ ऋण, गुरु ऋण, प्रकृति ऋण आदि ऋणों को चुकाने का उत्तम अवसर होता है। यही नहीं, ऐसा करने से हम मनुष्य योनि की सार्थकता भी सिद्ध कर रहे हैं और अगले जन्म के लिए पुण्य भी संचित कर रहे हैं। क्योंकि ऐसा करने से आपको आंतरिक संतुष्टि मिलती है। गूंगे को गुड़ का स्वाद वानप्रस्थाश्रम में यानी रिटायरमेंट समय में ही संभव हो पाता है, इससे द्वंद खत्म होने लगते हैं जैसे लाभ-हानि, जन्म-मरण, यश-अपयश, और हम अपने मूल की ओर सहज रूप से अग्रसर होने लगते हैं जैसे अग्नि सूर्य की ओर और जल समुद्र की ओर रिटायरमेंट समय को इसलिए 'जीवन का स्वर्णिम' समय भी कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी 'क्योंकि रिटायरमेंट के बाद का समय अपना है', हम इसे अपने ढंग से ढाल सकते हैं क्योंकि अब हम आर्थिक रूप से, सामाजिक रूप से, माया-मोह से आज़ादी की तरफ होते हैं, क्योंकि यही समय है जब हम अपने विचारों को धरातल पर ला सकते हैं और सन्यास जीवन में शांतिमय और सुखमय मानव जीवन की सार्थकता की पुष्टि कर सकते हैं हमें और क्या चाहिये ?

“ललकारती पुकार”

जूही पंकज किराड़ *

मत भूलो मेरे रूप का विस्तार
मूक-मुख से निकली है ललकारती पुकार
क्या भूल गए मुझमें सुशोभित तार और संसार
लगा लिया औरों को गले, मैं रह गयी बनके यादगार
मत भूलो मेरे इतिहास का गहरा है द्वार
जिसके उद्गम है पड़ाव हजार
छूट रही तुम्हारी जुबान से मेरे शब्दों की कतार
मत होने दो इस प्रेम का प्रचार

मैं अलंकार, स्वर, व्यंजन से सजाई हुई
संज्ञा, क्रिया, विशेषण में समाई हुई
करती हूँ आह्वान अपनी पहचान का एक बार
क्या दोहराना होगा मुझको अपने स्वरूप का विस्तार
क्या भूल गए छंद, वाक्य और शब्द का भण्डार
याद करो बचपन का विलुप्त संसार
जिसकी हंसी और मुस्कान के भी थे भिन्न-भिन्न प्रकार
आज निकली है मन से ललकारती पुकार

वृद्ध हूँ मैं
संसार हूँ मैं
दर्द से लज्जित पुकार हूँ मैं
अपनाने को गंवाना मत समझो मेरे यार
तीखे तीरों से मत करो मेरी जिंदा देह पर प्रहार
अभी जिंदा हूँ मैं, मुझमें श्वास है भरपूर
मत होने दो मेरे स्वाभिमान का संहार

* पत्नी श्री पंकज, वरि.सहायक प्रबंधक(लेखा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

फ्यूचर लॉजिस्टिक एंड स्मार्ट कोल्ड चेन एक्सपो, 2022

01 से 03 दिसंबर 2022 की अवधि के दौरान हैदराबाद में आयोजित फ्यूचर लॉजिस्टिक एंड स्मार्ट कोल्ड चेन एक्सपो, 2022 में क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद की भागीदारी।

केंद्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद ने 01 से 03 दिसंबर तक हाईटेक्स (HITEX) प्रदर्शनी केंद्र, हैदराबाद में आयोजित फ्यूचर फूड लॉजिस्टिक्स और कोल्ड चेन एक्सपो 2022 में भाग लिया। क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद द्वारा केंद्रीय भंडारण निगम की विभिन्न सेवाओं से व्यापार करने और ब्रांड निर्माण का कार्य करने के लिए इस तरह की यह प्रथम पहल थी। स्मार्ट कोल्ड चेन एक्सपो एक मजबूत खाद्य आपूर्ति श्रृंखला इको सिस्टम बनाने के लिए भंडारण और कोल्ड चेन के लिए बुनियादी ढांचे, सामग्री प्रबंधन, स्वचालन, भंडारण और लॉजिस्टिक्स समाधानों को प्रदर्शित करने की विषय-वस्तु के साथ आयोजित किया गया था।

एक्सपो में, केंद्रीय भंडारण निगम ने बूथ संख्या 26 को खाली योजना के तहत लिया था, जो 24 वर्ग मीटर का था और तीनों तरफ से खुला था। बूथ को डिजाइनर की सेवाओं का उपयोग करके बनाया गया था।

दिनांक 01.12.2022 को केंद्रीय भंडारण निगम के स्टॉल का उद्घाटन श्री शैख फहाद, एवीपी, रिलायंस रिटेल द्वारा किया गया, जो इस क्षेत्र के प्रमुख जमाकर्ताओं में से एक हैं।



आयोजन की विषय-वस्तु :

उद्योग जगत के लोगों को एक साथ लाने के लिए और निर्णय लेने वाले निर्माताओं, नेटवर्क और संचालन उत्पन्न करने के लिए यह एक लाभप्रद मंच था। यह आयोजन भारत में खाद्य लॉजिस्टिक्स उद्योग की बदलती जरूरतों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नये युग की प्रौद्योगिकियों की बढ़ती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बनाया गया था। इस आयोजन में देशभर के दर्शकों और प्रदर्शकों को आकर्षित किया। एक्सपो के दौरान लगभग 300 दर्शकों ने केंद्रीय भंडारण निगम के स्टॉल का दौरा किया और केंद्रीय भंडारण निगम की सेवाओं और निगमित कार्यालय और क्षेत्रीय कार्यालय आदि के संपर्क विवरण को दर्शाने के लिए केंद्रीय भंडारण निगम के स्टॉल पर आने वाले सभी दर्शकों को सूची प्रदान की गई।

एक्सपो से संभावित लाभ :

केंद्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद का इस प्रदर्शनी में भाग लेना अंत्यंत लाभप्रद रहा। निगम को भंडारण के क्षेत्र में नई टेक्नोलॉजी और विकास का ज्ञान प्राप्त हुआ। अंत में हम यही कहना चाहेंगे कि इस तरह के आयोजनों में भाग लेना उद्योगों के विशेषज्ञों से जुड़ने और ग्राहक आधार विकसित करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

* बिजनेस टीम, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद के सौजन्य से

केन्द्रीय भंडारण निगम का

केन्द्रीय भंडारण निगम ने 02 मार्च, 2023 को देशभर में 67वां स्थापना दिवस "सामर्थ्य" मनाया। श्री अश्विनी कुमार चौबे, माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री ने नई दिल्ली में आयोजित समारोह की अध्यक्षता की। माननीय मंत्री जी ने केन्द्रीय भंडारण निगम के कार्य-निष्पादन की प्रशंसा की। श्री संजीव चोपड़ा, आईएएस, सचिव, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग (भारत सरकार), केन्द्रीय भंडारण निगम के प्रबंध निदेशक श्री अमित कुमार सिंह, निदेशक (वित्त) श्री अनुज कुमार, निदेशक (कार्मिक) श्रीमती संगीता



स्थापना दिवस समारोह

रामरख्यानी, तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे। केंद्रीय भंडारण निगम के कार्मिकों सहित सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने भी अपने परिवार सहित इस समारोह में भाग लिया।

इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में हर्षदीप कौर, सयाली कांबले एवं आशीष कुलकर्णी जैसे कलाकारों द्वारा प्रस्तुति दी गई।



रिश्तों के बदलते स्वरूप

मधुर पाहवा *

रिश्तों को बदलना क्यों...क्यों रिश्तों से इतनी छेड़-छाड़ ?
इंसान को प्राकृतिक रूप से बने रिश्ते पसंद क्यों नहीं हैं ?
बहू को बेटी बनाना चाहते हैं, बेटी को बेटा और जमाई को भी बेटा ।
आजकल यह सुनने में बहुत आने लगा है कि हम तो अपनी बहू को बेटी मानते हैं, उसे बेटी बना कर रखते हैं या रखेंगे ।
रिश्ते के समय लड़की वालों को कहेंगे, हमें तो बहू नहीं बेटी चाहिए ।

इसी प्रकार बेटी के लिए कहते हैं, हमने तो इसे कभी अपनी बेटी समझा ही नहीं । यह तो हमारा बेटा है । हमने तो अपनी बेटी को बेटों की तरह पाला है ।

इसी प्रकार अपने दामाद के लिए कहते हैं, यह तो हमारा बेटा है । हम इसे अपना दामाद नहीं, बेटा समझते हैं ।

प्रायः यह बातें उच्च शिक्षित, समझदार एवं अनुभवी लोगों के श्रेणी में आने वाले लोग करते पाए जाते हैं । वे यह बताएं – बहू के रिश्ते में ऐसी क्या समस्या या कमी होती है जो आप उसे बहू के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते ?

क्या वह आपसे बहू जैसा मान-सम्मान पाने की अधिकारी नहीं ?

आपको बेटियां ही अधिक प्यारी क्यों हैं?

तो क्या आपके द्वारा बदले गए इस रिश्ते के अनुसार आपका बेटा भी अपनी पत्नी को बहन समझे ?

पीहर और मायका, दोनों घरों में बेटी और बहू का स्थान एवं जिम्मेदारियां अलग-अलग होती हैं ।

तो उसके रिश्ते के अनुसार ही उसका मान सम्मान क्यों न हो ?

क्या बेटा और बेटी दोनों को पालने के मापदंड अलग-अलग होते हैं? जो आपको यह कहना पड़ रहा है कि बेटी को बेटे के जैसे पाला है ?

पुरातन काल से हमारी संस्कृति है, जब दामाद जी घर आते हैं तो उनका कुछ विशेष ध्यान रखा जाता है,



उन्हें खास सम्मान दिया जाता है । जमाई जी ऐसी ही अपेक्षा से गर्व से ससुराल आता है और आपने उसे बेटा बनाकर रख दिया ।

मानसिकता में ऐसा परिवर्तन क्यों होता जा रहा है? रिश्तों के मूलरूप को स्वीकार्यता क्यों नहीं ?

बहू बेटी है तो बेटा क्या है ? बहू बेटे की क्या लगी ? बेटी बेटा है, जमाई भी बेटा है तो इन दोनों का परस्पर रिश्ता क्या है ? या क्या यह समझा जाये कि – हमें बहू से ज्यादा बेटी प्यारी है ?

बेटी से ज्यादा बेटे से प्यार है ?

दामाद से अधिक बेटा अच्छा लगता है ?

एक तरफ हम कहते हैं, रिश्ते भगवान बनाता है तो क्या भगवान ने सही से नहीं बनाये ? या भगवान को यह जताना चाहते हैं कि आप उससे बेहतर प्रकृति का संचालन अपने हिसाब से कर सकते हैं और उसकी गलतियों को सही नाम दे रहे हैं ?

.कहीं हमारी इस छेड़-छाड़ के कारण ही तो रिश्तों में ऊष्मा का स्तर नहीं गिर रहा, रिश्तों में परस्पर प्रेम का प्रवाह बाधित नहीं हो रहा, रिश्तों के मायने खत्म नहीं हो रहे । अगर ऐसा है तो यह चिंता का गंभीर विषय है ।

रिश्तों का माधुर्य उनके मूल रूप में ही मिलेगा, हर रिश्ता अपने स्थान पर ही शोभा देता है, यही हमारी संस्कृति है । अपनी संस्कृति से छेड़-छाड़ परंपराओं के निर्वहन में बाधाएं उत्पन्न कर सकती हैं ।

* प्रबंधक (लेखा), क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

भारत दर्शन पार्क—पर्यटन स्थल

विमलेश गोस्वामी *

मानव जीवन में पर्यटन एवं मनोरंजन का अपना विशेष महत्व है। इससे घूमने-फिरने का आनंद तो मिलता ही है, साथ ही ज्ञान वर्धन भी बहुत होता है। महत्वपूर्ण स्थानों को देखने से, उनके बारे में सभी जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता भी जागृत होती है। अतः ये स्मारक, तीर्थ स्थल तथा अन्य दर्शनीय स्थल बच्चों, तथा वयस्कों, सभी के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। ऐसे ही राजधानी दिल्ली में भी अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें से एक है भारत दर्शन पार्क। इस पार्क में भारत के स्मारकों एवं अन्य विरासत स्थलों की प्रतिकृतियाँ देखने को मिलती हैं। इस पार्क में खराब वाहनों और अन्य कबाड़ की वस्तुओं से यह स्मारक बनाए गए हैं और हर प्रतिकृति की सुंदरता को बढ़ाने के लिए कम से कम 200 रंगों की गतिशील रोशनी एवं मधुर संगीत का आनंद देखने को मिलता है। हम भी परिवार सहित 'भारत दर्शन' देखने के लिए गए। यहां पर आकर ऐसा लगा जैसे कि समूचा भारत एक ही स्थान पर देखने को मिल रहा हो। यद्यपि हम 'भारत दर्शन' सुबह देखने के लिए गए थे और तभी हमें यह अत्यंत सुंदर लगा, पर कहा जाता है कि रात में जब यह रंग-बिरंगी रोशनी में जगमगा रहा होता है तो इसकी छवि देखते ही बनती है। तो आइए, अपने साथ हम आपको भी शब्दों के माध्यम से भारत दर्शन की सैर कराते हैं। यहाँ पर कुल 21 प्रसिद्ध स्मारकों की प्रतिकृतियाँ हैं।

सर्वप्रथम हमें गेटवे ऑफ इंडिया, मुंबई के प्रतिष्ठित स्मारक की प्रतिकृति देखने को मिली जिसको 20वीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रिटिश किंग जॉर्ज पंचम और महारानी मेरी के भारत आने की याद में बनाया गया था। ये मुख्य रूप से इंडोसरसेनिक वास्तुकला शैली में हराब मुस्लिम शैली में बनाया गया है। आज के समय में यह मुंबई का प्रमुख पर्यटक आकर्षण का केंद्र है।

इसके पश्चात, वट वृक्ष या दिव्य वृक्ष देखा। इस बरगद के वृक्ष को हिन्दू धर्म में शाश्वत जीवन का प्रतीक समझा जाता है। इसकी एरियल प्रोप जड़ें काफी लंबी होती हैं, जो पेड़ों की शाखाओं पर उगती हैं। इसकी बेल जैसी जड़ें धरती की ओर बढ़ते हुए बड़ा-सा जंगल जैसा बना देती हैं। हजारों वर्षों से इस

वृक्ष का उपयोग औषधि के रूप में भी किया जाता रहा है। इसकी दिव्य सुंदरता को देखने के लिए बहुत दूर-दूर से लोग आते हैं। भारत में इसका विशेष आध्यात्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है। पौराणिक कथाओं के अनुसार यह वृक्ष मनोकामनाओं और सांसारिक लाभ देने वाला है।

जयपुर के प्रसिद्ध स्मारक 'हवा महल' की खिड़कियों का इतिहास भी है। यह पिरामिड के आकार का लाल और गुलाबी बलुआ पत्थर या सैंडस्टोन से बना स्मारक सीधा खड़ा है। इसका निर्माण 1799 में महाराज सवाई प्रताप सिंह ने करवाया था इसका निर्माण मुख्य रूप से राजपूत शाही महिलाओं के लिए करवाया गया था ताकि वह बिना दिखे नीचे गली में होने वाले प्रतिदिन के नाटक नृत्य का आनंद ले सकें। साथ ही, शहर का खूबसूरत नजारा भी खिड़की से ही देख सकें।

अजंता-एलोरा की कलात्मक गुफाओं को देखने का भी आनंद मिला। यह 600 से 1000 ईसवीं के दौरान पहाड़ और चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएं हैं। अजंता में 30 गुफाओं का समूह भगवान बुद्ध की कई प्रतिमाओं और दीवारों पर बौद्ध धर्म से जुड़ी पेंटिंग्स से बनाया गया है। इसमें महात्मा बुद्ध के पिछले जन्मों के बारे में भी बताया गया है। एलोरा की गुफाओं में 34 मठ और मंदिर हैं जो बौद्ध जैन और हिन्दू धर्मों को समर्पित हैं। महात्मा बुद्ध की लेटी हुई मूर्ति पृथ्वी पर उनके जीवन के अंतिम क्षणों और निर्वाण में प्रवेश की घड़ी दर्शाती है। इसकी प्रतिकृति देखते ही बनती है।

भारत-दर्शन में चार धाम की यात्रा भी एक ही स्थान पर हो गई जिसमें देवताओं के निवास स्थान 'बद्रीनाथ धाम' के दर्शन का सौभाग्य मिला जो उत्तराखंड के बद्रीनाथ शहर में स्थित है। यह चार धाम और छोटे चार धाम दोनों यात्राओं का हिस्सा है। यह लगभग 3,300 मीटर की ऊंचाई पर हिमालय की चोटियों पर बसा भगवान विष्णु का मंदिर है। मान्यतानुसार, आदि शंकराचार्य जी ने अलकनंदा नदी में भगवान बद्री की मूर्ति को पाया और उसे गरम कुंड या हॉट स्प्रिंग्स के पास एक गुफा में रख दिया। इसके बाद 16वीं शताब्दी में गढ़वाल के राजाओं ने मंदिर का निर्माण करवाया।

* माता: नम्रता बजाज, प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

पवित्र चार धाम यात्रा में एक प्रमुख नाम 'जगन्नाथ पुरी' का भी आता है। ओडिशा के पुरी शहर में भगवान जगन्नाथ के साथ उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा की भी पूजा की जाती है। मंदिर का मुख्य गर्भगृह वक्र्रीय आकार में 214 फीट (65मीटर) ऊँचे पत्थर के चबूतरे पर स्थित है तथा उसके ऊपर मूर्तियाँ स्थापित हैं। यह हिन्दुओं के लिए बद्रीनाथ, द्वारका और रामेश्वरम के समान ही प्रतिष्ठित तीर्थस्थल है।

'द्वारकाधीश' मंदिर भगवान कृष्ण का मंदिर भी अद्भुत है। यह गुजरात के द्वारका में 2500 साल पुराना भव्य मंदिर है। यह हिन्दू तीर्थयात्रा सर्किट की चार धाम यात्रा के मंदिरों में से एक है। गोमती नदी के तट पर चालुक्य शैली की वास्तुकला में निर्मित पाँच मंजिला मुख्य मंदिर चूना पत्थर और रेत से बनाया गया है। इसमें गुंबद के विभिन्न आकार को काटकर उसमें विभिन्न प्रकार के स्क्रैप भर दिए गए हैं।

पत्थर से निर्मित अनोखे रथ देखने को मिले। भारत के वास्तुकला के कौशल को दर्शाते हुए हम्पी का रथ देखा जो द्रविड़ शैली में निर्मित रथ पर की गई नक्काशी को दर्शाता है। हम्पी का गहना नाम से प्रसिद्ध देश के तीन प्रसिद्ध रथों में एक माना जाने वाला यह विट्टु मंदिर के परिसर के अंदर स्थित है। हम्पी के मंदिरों को उनकी स्पष्ट नक्काशी, विशाल खम्भों, भव्य मंडपों, मूर्तिकला और पारंपरिक चित्र निरूपण के लिए जाना जाता है।

ओडिशा के 'कोणार्क मंदिर' की शोभा देखते ही बनती है। यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है। 13वीं सदी में बनाए गए इस मंदिर में 'भगवान सूर्य' के रथ का चित्रण है, जिसके बारह जोड़े विशाल पहिए और सात घोड़े स्वर्ग की ओर खींचते हुए प्रतीत होते हैं। कोणार्क मंदिर की विशिष्टता यह है कि सूर्य भगवान की प्रतिमा पर सुबह, दोपहर और शाम को सूर्य की किरणें पड़ती हैं। इस प्राचीन धरोहर की गिनती देश के सबसे बड़े 10 मंदिरों में की जाती है। यह कलिंग वास्तुकला के सबसे आकर्षक नमूनों में से एक है।

मदुरै स्थित मीनाक्षी मंदिर, जो द्रविड़ वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें 'अयिरम-काल मंडयम' (हॉल ऑफ पाउजें 5 पिलर्स) या हजार स्तम्भों का हॉल है जो इसका मुख्य आकर्षण है। इसमें उकेरे हुए सभी संगीतमय स्तम्भ किसी भी कोण से देखने पर एक सीधी रेखा में ही प्रतीत होते हैं। किसी भी स्तम्भ पर 'टक' की आवाज करने पर एक अलग ही संगीत ध्वनि सुनाई देती है। यह भारत के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है। मान्यता यह है कि भगवान शिव ने सुंदेश्वर का रूप धारण किया और इस स्थान पर पार्वती जी (मीनाक्षी) से विवाह बंधन में बँधे। अतः इस मंदिर का पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व है।

हिन्दुओं के प्रसिद्ध पवित्र तीर्थ 'रामेश्वरम् मंदिर' को देखा।



यह पवित्र तीर्थ स्थल तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में स्थित है। यह मंदिर 15 एकड़ में फैला हुआ है। इस मंदिर को वैष्णववाद और शैववाद के संगम के रूप में माना जाता है। इसके 4,000 फीट लंबे बरामदे संसार के सबसे लंबे बरामदों के रूप में विश्वविख्यात

हैं। मान्यता है कि इस स्थान पर भगवान राम ने भगवान शिवजी का आभार प्रकट किया था। यह मंदिर द्रविड़ शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह मंदिर चारधाम तीर्थ यात्रा का भी हिस्सा है।

इसके बाद भारत के मशहूर महलों की प्रतिकृतियाँ देखने को मिलीं जिनमें से मैसूर पैलेस 'शाही महल' को देखने का तो अपना ही आनंद है। यह विश्वास ही नहीं होता कि यह इंसानों द्वारा बनाई गई इमारत है। यह महल कभी वोडेयार शासकों का निवास स्थान हुआ करता था जिन्होंने सात शताब्दियों तक मैसूर पर शासन किया। 1897 में आग से नष्ट हो जाने पर एक ब्रिटिश वास्तुकार हेनरी इरविन को नया महल बनाने के लिए चुना गया। भारतीय-अरबी वास्तुकला से निर्मित ये महल हिंदू, मुस्लिम, गोथिक शैलियों का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण है। यह महल देश की सबसे शानदार संरचनाओं में से एक है। इसे अंबा विलास नाम से भी जाना जाता है।

‘महाबत पैलेस’ बीते युग का ‘नरहानीं सौंदर्य है। यह जूनागढ़ राज्य के नवाब महबत खान-द्वितीय को समर्पित मकबरा गोथीक, इंडो-इस्लामिक एवं यूरोपीय वास्तुकला का मिश्रण है। इसे 19वीं सदी में विशेष रूप से बनाया गया था। इसमें प्याज के आकार के गुंबद, फ्रेंच खिड़कियाँ संगमरमर के स्तंभ, एक मकबरे के चारों मीनारों के चारों ओर घुमावदार सीढ़ियाँ हैं जो प्राचीन स्थापत्य कला को दर्शाती हैं।

‘विक्टोरिया पैलेस’ जो महारानी विक्टोरिया की स्मृति को समर्पित एक सुंदर स्मारक है। भारत के तत्कालीन अंग्रेज गर्वनर जनरल लॉर्ड कर्जन ने इस स्मारक को रानी विक्टोरिया की याद में बनवाया था। संगमरमर की यह इमारत 1906 और 1921 के बीच कलकत्ता में बनाई गई थी। यह पश्चिम बंगाल के सबसे प्रसिद्ध स्मारकों में से एक है। यह इंडो-सरसेनिक स्थापत्य शैली का एक भव्य और उत्तम उदाहरण है।

हैदराबाद की पहचान ‘चार मीनार’ ऐतिहासिक और धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण स्मारक हैं। यह सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुबशाह द्वारा बनवाया गया था। यह चार मीनारों के साथ एक विशाल और प्रभावशाली संरचना है। जो 400 सौ सालों से आकर्षण का केंद्र रहा है।



इसका प्रत्येक साइड 20 मीटर लम्बा है। यह चारों कोनों पर चारों मीनारों से घिरा स्मारक देश के दस शीर्ष स्मारकों में से एक है।

बौद्ध स्थलों में से एक साँची स्तूप भारत के सर्वाधिक संरक्षित स्मारकों में से एक है। यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में निर्मित मध्य प्रदेश में साँची की पहाड़ी पर स्थित अन्य स्तूपों में सर्वप्रमुख है। बौद्ध दर्शन के संरक्षण और प्रसार के लिए सम्राट अशोक ने इसका निर्माण करवाया था।

‘ताजमहल’ प्रेम का प्रतीक अपनी भव्यता, सुंदरता और आकर्षण के कारण भारत को सबसे प्रतीकात्मक और प्रतिष्ठित ऐतिहासिक विश्व धरोहर माना जाता है। इसका निर्माण मुगल शासक शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज महल की स्मृति में बनवाया था। ताजमहल भारतीय, इस्लामी और फारसी स्थापत्य शैली का एक बेजोड़ और अनूठा नमूना है। पूर्णतया सफेद

संगमरमर से बना यह ताजमहल सूर्योदय से मध्य रात्रि तक रंग बदलता रहता है। शाहजहाँ ने इसका निर्माण यह सोच कर करवाया था कि ताजमहल धरती पर स्वर्ग जैसा दिखाई दे। इसके निर्माण के लिए पूरे भारत और एशिया की सामग्रियों का उपयोग किया गया था।

‘कुतुबमीनार’ विश्व की सबसे ऊँची ईंट की मीनार की प्रतिकृति भी देखी जो 1193 में दिल्ली के प्रथम मुस्लिम शासक कुतुब-उद-दीन ऐबक द्वारा बनवाई गई थी। राजधानी दिल्ली के कुतुब परिसर में स्थित यह टावर 725 मीटर लम्बा है। यह मीनार नीचे से चौड़ी और ऊपर से संकरी बनी हुई है अंदर से सीढ़ियों घुमावदार बनी हुई हैं। इसकी सतहों पर उच्चकोटि की कारीगरी की गई है जिसे अति उत्तम तरीके से तराशा गया है। यह बलुआ पत्थर से बनाया गया है।

प्राचीन ज्ञान का केंद्र नालंदा भी देखने योग्य है। भारत के सबसे प्राचीन और विश्व के सर्वप्रथम आवासीय विश्वविद्यालयों में से एक है यह नालंदा विश्वविद्यालय, जिसमें 800 सालों तक ज्ञान का प्रचार होता रहा। 450 ईसवी में गुप्त वंश के शासकों द्वारा बनवाया गया यह विश्वविद्यालय

परिसर स्तूपों, तीर्थस्थलों, विहारों (आवासीय और शैक्षिक) भवनों, मेडीटेशन हाल और कक्षाओं के लिए जाना जाता था। आज के समय में नालंदा के खंडहर बौद्ध पर्यटन सर्किट के महत्वपूर्ण गंतव्य के रूप में है। यहां का सबसे प्रतिष्ठित जीवित स्मारक महान स्तूप या सारिपुत्र स्तूप है। तीसरी शताब्दी में इसे मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनवाया गया था जिसमें स्तूप शीर्ष एक पिरामिड के आकार का है।

इस्लामी वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना गोल गुंबद की प्रतिकृति भी देखी। माना जाता है कि यह भारत के सबसे बड़े गुंबदों में से एक है। यह मकबरा राजा आदिल शाह का है जो 17वीं शताब्दी में बनाया गया था। इस गुंबद की खासियत यह है कि इसकी मुख्य गुंबद जो बिना किसी स्तंभ के खड़ा है। यह आकर्षक गोल गुंबद व्हिस्पेरिंग गैलरी या फुसफुसाती गलियारे के तौर पर मशहूर है क्योंकि इस गलियारे के एक तरफ



फुसफुसा कर बोला गया शब्द दूसरी तरफ स्पष्ट सुनाई देता है।

मूर्तिकला का एक उत्कृष्ट नमूना 'खजुराहो मंदिर' भी है। यह मध्य काल में बने खजुराहो के मंदिर नागर शैली की वास्तुकला एवं नायिकाओं और देवियों की सुंदर मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं। 950 से 1050 ईसवी की अवधि में चंदेल शासकों द्वारा इन मंदिरों का निर्माण करवाया गया था। इनकी कलाकृतियों में जीवन के चार लक्ष्यों अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष को उजागर किया गया है। यह मंदिर बलुआ पत्थर या सैंडस्टोन का उपयोग करके बनाए गए हैं। इनकी नींव ग्रेनाइट से बनी है।

अंततः, सभी भारतीय संस्कृति के स्मारकों मंदिरों तथा अन्य धरोहरों को देखने के पश्चात् अमूल्य जानकारी तो मिली ही इसके अतिरिक्त मनोरंजन भी बहुत हुआ। वहाँ पर खाने के व्यंजनों से लेकर संगीतमय वातावरण भी बनाने का भरपूर प्रयास किया गया था। खाने के स्टॉल की जगह को दिल्ली के चाँदनी चौक की तरह बनाया गया था और वहीं पर खाने के कई स्टॉल लगे हुए थे तथा वहीं पर राजस्थान से आए हुए संगीत प्रेमियों का भी कार्यक्रम चल रहा था।

भारत सरकार का 'भारत दर्शन' स्थान बनाने का सुविचार सराहनीय कदम है। इससे बच्चों, बड़ों सभी के लिए प्रेरणा और ज्ञानवर्धन का महत्वपूर्ण साधन सुलभ हो सका है। यहाँ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सभी स्मारक आदि पुरानी तथा बेकार पड़ी हुई वस्तुओं से निर्मित किए गए हैं। इनमें बिजली के पोल, क्लच, डिस्क, लोहे की रॉड, नट, बोल्ट, बाइक, इंजन, चैन और गियर्स इत्यादि अनेकों प्रकार का अनुपयोगी वस्तुओं का प्रयोग किया गया है। यहाँ पर आराम से घूमते हुए सभी स्थलों का दिग्दर्शन किया जा सकता है। आशा है कि हमारे साथ-साथ इस लेख के माध्यम से आपने भी भारत दर्शन का भरपूर आनंद लिया होगा।

"देखो कितना देश बचा है"

पीयूष सरोज *

रंग बिरंगी अपनी धरती, देखो क्या समझा सकती है,
सबके हित में एक इकाई, खोकर क्या कुछ पा सकती है !
जिसके जीवन की धारा, रास्ते में ही गुम हो जाती है,
वो सरिता बुझने से पहले, कितने प्यास बुझा सकती है !!
जो आँखें दिखलाती हैं वो, सच है या धोखा है कोई,
भाग रहे कदमों को रोको, तो देखो छूटा है कोई !
जो कहता है कभी-कभी, अधिकांश समय सिसकी भरता है,
अपने लोगों से जो हर दिन, रोटी की विनती करता है !!
तन के ऊपर बचा नहीं है, शर्म-हया का एक भी धागा,
तन के अंदर है अँधेरा, होश लिए अब तक है जागा !
देखो ढूँढ रहा बोझिल मन से, अपनी साँसों का दाना ,
देह बचाए जान सके फिर, क्या होता है लाज बचाना !!
नजर घुमाओ देख सकोगे, जीवन की कीमत कितनी है,
कितने जूझ रहे हैं देखो, भूखे पेट की हद कितनी है !
भीतर जलती आग बुझे तो, गिन भी लें क्या शेष बचा है,
तुम अपनी गिनती में जाकर, देखो कितना देश बचा है !!

* भंडारण एवं निरीक्षण अधिकारी, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निगम के अधीनस्थ वेअरहाउस—एक परिचय

भंडारण भारती पत्रिका के अंक 78 में सेंट्रल वेअरहाउस, भोपाल-1, अमरावती, एवं सेंट्रल वेअरहाउस, काक्कनाड का परिचय प्रकाशित किया गया था। इस अंक में सेंट्रल वेअरहाउस, बीदर एवं कंटेनर फ्रेट स्टेशन (सीएफएस) व्हाइटफील्ड का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

सेंट्रल वेअरहाउस, बीदर

केंद्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलुरु के अधीनस्थ 24 केंद्रों में से एक सेंट्रल वेअरहाउस, बीदर है जो कि कोलार इंडस्ट्रियल एरिया, बीदर में स्थित है। यह बीदर रेलवे स्टेशन से 13 कि.मी. और सेंट्रल बस स्टैंड, बीदर से 08 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। 7.25 एकड़ में फैले हुए सेंट्रल वेअरहाउस, बीदर की स्थापना वर्ष 2000 में हुई थी। इसकी कुल भंडारण क्षमता 24920 मीट्रिक टन है। सेंट्रल वेअरहाउस, बीदर में इलेक्ट्रॉनिक लौरी वेब्रिज (विद्युत चालित धर्मकांटा/तुलासेतु) की सुविधा उपलब्ध है। सुरक्षा की दृष्टि से संपूर्ण केंद्र एवं परिसर सीसीटीवी सुविधा से युक्त है जिसे सीसीटीवी लाइव-फीड के माध्यम से किसी भी समय देखा जा सकता है। सेंट्रल वेअरहाउस, बीदर में खाद्यान्न का संग्रहण किया जाता है।



कंटेनर फ्रेट स्टेशन, व्हाइटफील्ड

कंटेनर फ्रेट स्टेशन (सीएफएस) व्हाइटफील्ड क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु के अधीनस्थ एक कस्टम बांडेड वेअरहाउस है, जो आयात-निर्यात संबंधी कार्य करता है। यह राज्य हाईवे एसएच-35 एवं राष्ट्रीय हाईवे एनएच-648 से जुड़ता है। वर्ष 2006 में इसकी स्थापना हुई थी। यह 13.94 एकड़ में फैला हुआ है जिसकी वर्तमान भंडारण क्षमता 55820 मीट्रिक टन है। सीएफएस, व्हाइटफील्ड का कवर्ड एरिया 12996 वर्ग मीटर एवं ओपन एरिया 17666 वर्ग मीटर है। केंद्र परिसर में पेवर ब्लॉक रोड है। यह आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015 एवं आईएसओ 45001:2018 से आईएसओ/गुणवत्ता सर्टिफाइड है। उक्त केंद्र में आपातकालीन स्थिति अर्थात आग आदि से निपटने के लिए पर्याप्त व्यवस्था है। इस केंद्र पर लगभग 44 सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं।



अपनी माटी के कुम्हार स्वयं बनें

रेखा दुबे *

**शब्दों के सागर में भावनाओं की माला पिरोई है,
उम्मीद है ये आपके दिल को जरूर छू पाएगी।
अगर आपकी जिंदगी के कुछ पल भी हसीन हुए
तो मेरी लेखनी सार्थक हो जाएगी।**

जीवन और मृत्यु ईश्वर की देन है और इसके बीच का चक्र हमारी जिंदगी। अब इस बीच के चक्र की मंजिल क्या, कब और कैसे पूरी होगी, ये हम स्वयं निर्धारित करें तो जीवन वाकई खूबसूरत और जिंदगी हसीन हो जाएगी। मेरा मानना है जो ईश्वर से मिला वो जीवन है और हमने उसे जिस भाव से गुजारा वो जिंदगी है। जब एक शिशु का जन्म होता है तो उस शिशु के साथ एक पवित्र आत्मा का भी गृहप्रवेश होता है जो छल कपट, घृणा कलेश, ईर्ष्या इन सब से कोसों दूर होता है। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, दुनियादारी समझ में आने लगती है तो ये महसूस होने लगता है कि

**कागज की कश्ती थी, नदी का किनारा था,
खेलने की मस्ती थी, दिल ये आवारा था
कहां आ गए इस समझदारी की दलदल में
वो नादान बचपन ही बहुत प्यारा था।।**

इस जीवन और जिंदगी के बीच कई सफर तय करने होते हैं। कभी दुख की अति होती है तो कभी बेहद सुकून, कभी जीने की इच्छा नहीं रहती तो कभी जीना इतना भाता है कि मृत्यु का भय भी सताने लगता है। कभी सोचा है आपने कि इस जीवन में भी एक पुनर्जन्म संभव है और क्या आपमें से किसी ने इस जीवन को पुनर्जीवित किया है? मेरा मानना है कि जब भी हम लीक से अलग हटकर कुछ नया सोचते हैं या एक नया पॉजिटिव विचार मन-मस्तिष्क में जागृत होता है तो वाकई हमारा पुनर्जन्म हो जाता है क्योंकि हमारा हर नया और पॉजिटिव विचार, जिसे विश्वास रूपी पानी से सशक्त बना रहे हैं कि जीवन में असंभव कुछ भी नहीं है, को संभव बना देता है। हम तो ये पावर हमारे आने वाले वर्षों को बेहद सुंदर बना देती है। आध्यात्म आपकी पावर में वृद्धि करने और जीवन को एक नया आयाम और दृष्टिकोण प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम है। आध्यात्मिकता में एक भावना या विश्वास की मान्यता शामिल है कि खुद से बड़ा कुछ है। आत्मा,

परमात्मा, जीव, माया, जन्म-मृत्यु, पुनर्जन्म, सृजन-प्रलय की अबूझ पहेलियों को सुलझाने का प्रयत्न है अध्यात्म। विज्ञान, आध्यात्म और मेडिटेशन अलग क्षेत्र हैं लेकिन अगर इन्हें आपस में मिला दिया जाए तो इसके परिणाम आश्चर्यजनक और रोमांचक हो सकते हैं। अगर आप सुबह उठकर शांत मन से ईश्वर का शुक्रिया करें और स्वयं को एक स्वस्थ शरीर एक पावरफुल आत्मा मानें तो आप वाकई स्वयं को स्वस्थ और प्रसन्न महसूस करेंगे। यदि आप बीमार हैं, दुखी हैं और आप परिस्थिति से भयभीत हैं तो अपने अंदर की पावर को अपने ब्रेन पर फोकस करके कहिए कि आप बीमार नहीं हैं। आप कितनी भी दवाईयां खा लें लेकिन अगर संकल्प में ताकत नहीं है तो ब्रेन से ऐसी वॉयब्रेशन रिलीज नहीं होंगी जो उस मेडिसिन से शरीर में तंदरुस्ती ला सके। लेकिन अगर आपने अपनी मनःस्थिति को मजबूत कर लिया तो पानी भी अमृत के समान काम करेगा। संकल्पों की शक्ति से चमत्कार संभव हैं और इसमें दो राय नहीं है कि ऐसे विचारों ने ही विज्ञान को भी कई बार पराजित किया है। मेडिटेशन से हमारे अंदर एक ऊर्जा का संचार होता है और खुद पर भी विश्वास कि असंभव कुछ भी नहीं है। चुनौतियां और समस्याएं प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आएंगी, उनकी स्थिति आपकी मनःस्थिति के अनुरूप होगी। यदि आप उसे छोटा मानेंगे तो उसका रूप छोटा लगेगा और अगर आपने उस परिस्थिति को अपने मन पर हावी होने दिया तो समस्या का समाधान असंभव हो जाएगा। हमारे शरीर का हर छोटा सैल म्यूज़िकल हो सकता है यदि हम अपने हर सैल को पावर दें। स्वयं पर विश्वास बनाए रखें। हर समस्या का हल होता है, आज नहीं तो कल होता है.....इस विचार को हमेशा अपने मन में रखें। हमारे शरीर की रचना इस प्रकार की है कि हम इसके हर भाग को अपनी पॉजिटिव वॉयब्रेशंस से ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं। यदि कोई दुखी या परेशान व्यक्ति जीवन से हार मानकर आपके पास आता है और आप ऐसी एनर्जी दें कि ये कोई बड़ी बात नहीं है और इसका समाधान करना तुम्हारे हाथ में है और उसे इस स्थिति से उबरने के लिए राय भी दें और उसे उसकी क्षमता का अहसास दिलाएं तो उसके रेगिस्तान रूपी मन में हरियाली ला सकते हैं। उसके बुझे हुए मन में आशा का नया दीप जला सकते हैं। किसी भी परिस्थिति को अपने मन पर हावी होने न दें अन्यथा जिंदगी

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली



बेरंग सी लगेगी। मन के हारे हार है मन के जीते जीत..... इसी स्थिति को मनः स्थिति से परिस्थिति को बदलना कह सकते हैं। प्राचीन काल में लोग शांति की तलाश में महल का त्याग कर देते थे और इस भौतिक युग में हम महल की तलाश में शांति का त्याग कर रहे हैं। हमने अपने जीवन में आज तक जो भी एकत्रित किया है क्या उसका उपभोग कर पाएंगे ज़रा सोचिए.....फिर चिंता और अवसाद क्यों पालें।

हमारा जिंदगी वाकई जलेबी की तरह उलझी हुई है तो क्यों न इसे चाशनी में डुबो दिया जाए और हर उलझन को सुलझाने का प्रयास किया जाए। अपनी जिंदगी को कुछ इस प्रकार डिजाइन करें कि आप अपनी इच्छा शक्ति से तूफान की गति से हर समस्या का हल निकाल कर अपने साथ औरों की जिंदगी को भी खूबसूरत बना दें। **मन अगर कमजोर है तो परिस्थिति समस्या—सी प्रतीत होगी, अगर मन स्थिर है तो चुनौती और अगर मन सशक्त है तो परिस्थिति एक अवसर बन जाएगी।** तो क्यों न हर समस्या को एक नया अवसर माना जाए और उसमें विजय प्राप्त की जाए।

एक कुम्हार ने माटी से एक बेहद खूबसूरत चिलम बनाई किंतु कुछ देर बाद उसे तोड़ दिया। माटी ने कुम्हार से पूछा कि तुमने इस कृति को क्यों तोड़ा तो कुम्हार बोला माटी मेरा मन बदल गया। मैं अब एक सुराही बनाऊंगा। माटी बोली कुम्हार तुम्हारा तो मन बदला लेकिन मेरी तो किस्मत बदल गई। पहले मैं खुद भी जलती और औरों को भी जलाती। अब मैं स्वयं भी ठंडी रहूंगी और औरों को भी शीतलता दूंगी। कुम्हार के एक नये सृजनात्मक दृष्टिकोण ने माटी के जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार किया। तो आइये हम सभी अपनी माटी के कुम्हार स्वयं बनें। इस जीवन में जो भी हम किसी को देंगे, वही लौट कर आना है तो क्यों न खुद भी खुश रहें और औरों को भी बस खुशियां दें।

अंत में बस इतना ही कहूंगी कि जिंदगी बेहद हसीन है कल कभी नहीं आएगा, जो भी है बस आज है इसलिए आने वाले हर दिन का स्वागत मुस्कान एवं शुक्राना अदा कर कीजिए क्योंकि बहुतों के नसीब में ये सुबह नहीं आई होगी। किसी ने सत्य ही कहा है कि

हर ज़ब्त को जिंदगी में जुबां नहीं मिलती,
हर आरजू को जिंदगी में दुआ नहीं मिलती,
मुस्कराहट बनाए रखो तो दुनिया साथ है दोस्तों,
आंसुओं को भी आंखों में पनाह नहीं मिलती।

उम्मीदें

देवेश दीक्षित *

चन्द्रमा उम्मीदें हैं मुझे जिंदगी से
कभी तो उड़ान भरेगी
ले जायेगी मुझे ऊँचाइयों में
कभी तो एहसान करेगी

बस ईश्वर कृपा कर दे इतनी
सम्पूर्ण जगत में व्याप्त हो
कविता प्रचलित हो जाए इतनी
की सबकी जुबां पर मेरा नाम हो

उस एहसान की प्रतीक्षा में
मैं जीवन को जीता रहता हूँ
मुश्किल घड़ियां जब आती हैं
उम्मीदों को ही सहजे रहता हूँ

उम्मीदें हैं मुझे जिंदगी से
कभी तो उड़ान भरेगी
ले जायेगी मुझे ऊँचाइयों में
कभी तो एहसान करेगी

मेरी रचना ही मेरा सपना है
जो आगे मुझे ले जाएगी
यही हुनर तो मेरा अपना है
जो सबका प्यार पाएगी

* ऑफिस असिस्टेंट एलसीजीसी, मयूर विहार, दिल्ली

मानव जीवन में रंगों का महत्व

रजनी सूद *

रंगों की मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। सोचो, यदि मानव जीवन में रंग ना होते तो मानव जीवन कैसा होता। रंगों से हमें मानव की, प्रकृति की विभिन्न स्थितियों का पता चलता है। मूल रूप से इन्द्रधनुष के सात रंगों को ही रंगों का जनक माना जाता है। ये सात रंग लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला तथा बैंगनी हैं। ये प्रकृति की अवर्णनीय सुंदरता में चार चाँद लगाते हैं। हम अपने चारों तरफ अनेक प्रकार के रंगों से प्रभावित होते हैं।

सूर्य की लालिमा हो या खेतों की हरियाली, आसमान का नीलापन, या बादलों का कालापन, बारिश के बाद बिखरती इन्द्रधनुष की अनोखी छटा, पता नहीं प्रकृति के कितने नजारे हमारी आत्मा को आनंदित करते हैं, इसमें मुख्य भूमिका रहती है, रंगों की। हर एक रंग का अपना-अपना महत्व है, कोई रंग हममें उमंग भरता है, तो कोई रंग हमें उदास और सूना कर देता है, कुछ रंग शांति का अहसास कराते हैं तो कुछ मातम का। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं हमारे जीवन में रंगों का बहुत महत्व है। हर एक रंग अलग इंसान पर अलग-अलग प्रभाव डालता है।

हम हमेशा देवी-देवताओं के चित्रों में उनके मुख मंडल के पीछे एक आभा मंडल बना देखते हैं जो सफेद रंग का होता है। पता है वो सफेद क्यों होता है क्योंकि सफेद रंग पवित्रता का अहसास कराता है। रंगों से भरा आहार, घर या कमरों के रंग, कपड़ों के रंग आदि भी शरीर की ऊर्जा पर प्रभाव डालते हैं। सात रंगों से दस लाख रंग बनाए जा सकते हैं, लेकिन सूक्ष्मता से केवल 378 रंग ही देखे जा सकते हैं। हर रंग की तासीर ठंडी और गर्म होती है जहां हरे, नीले, बैंगनी और इससे मिलते-जुलते रंगों का प्रभाव वातावरण में ठंडक का अहसास कराता है वहीं दूसरी ओर पीले, लाल व इनके मिश्रण से बने रंग वातावरण में गर्मी का आभास देते हैं।

घर के लिए :-

- यदि कमरे में रोशनी कम आती है तो कमरे में सफेद, गुलाबी, हल्का संतरी, हल्का पीला, हल्का बैंगनी रंग का पेंट करवाना चाहिए इससे कमरे में चमक बढ़ेगी।

- छोटे कमरे को बड़ा दिखाने के लिए छत पर सफेद रंग का प्रयोग करना चाहिए।
- जिन कमरों की चौड़ाई कम हो उन्हें बड़ा दिखाने के लिए दीवारों पर अलग-अलग रंग करना चाहिए, गहरे रंग छोटी दीवारों पर तथा हल्के रंग लम्बी दीवारों पर करने चाहिए।
- यदि छोटा डिब्बेनुमा कमरा है तो उसे बड़ा दिखाने के लिए उसकी तीन दीवारों पर एक रंग तथा चौथी दीवार पर अलग रंग करना चाहिए।

धार्मिक महत्व :-

धर्म में रंगों की मौजूदगी का खास उद्देश्य है। रंगों के विज्ञान को समझकर ही हमारे ऋषि मुनियों ने धर्म में रंगों का समावेश किया है। पूजा के स्थान पर रंगोली बनाना कला के साथ-साथ रंगों के मनोविज्ञान को भी प्रदर्शित करता है। कुमकुम, हल्दी, अबीर, गुलाल, मेहंदी के रूप में पाँच रंग हर पूजा में शामिल किए जाते हैं। धर्म ध्वजाओं के रंग, तिलक के रंग, भगवान की वस्तुओं के रंग भी विशिष्ट रखे जाते हैं ताकि धर्म-कर्म करते समय हम उन रंगों से प्रेरित हो सकें और हमारे अंदर उन रंगों के गुण आ सकें।

हिन्दु मान्यताओं के अनुसार प्रत्येक वार अलग-अलग रंगों के वस्त्र धारण करने चाहिए जो इस प्रकार हैं :-

| | |
|----------|---|
| सोमवार | सफेद, सिल्वर, हल्के नीले, या पीले |
| मंगलवार | भगवा, संतरी, पीला, सिंदुरी |
| बुधवार | हरा |
| वीरवार | नारंगी, संतरी |
| शुक्रवार | सफेद गुलाबी, लाल गुलाबी |
| शनिवार | गहरा काला, गहरा नीला, गहरा भूरा या जामुनी |
| रविवार | गुलाबी, नारंगी, लाल, सुनहरे रंग |

* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

बीमारियों में रंगों का प्रभाव :-

रंग मानव जीवन पर व्यापक प्रभाव डालते हैं। प्राचीन-काल से ही यह माना जाता है कि रंग का मानव रोग मुक्ति से भी गहरा संबंध है। आज विज्ञान से लेकर मनोविज्ञान तक इस बात की मानता है कि रंग मानव के मनोविज्ञान और मनोस्थिति पर व्यापक प्रभाव डालते हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार मनुष्य को होने वाली आधी से अधिक बीमारियाँ मानसिक होती हैं, यही कारण है कि बहुत-से लोग विभिन्न रंगों के रत्नों को पहनते हैं। आज से चालीस साल पहले दिल्ली में एक औषधालय था जहाँ पर केवल रंग और प्रकाश द्वारा असाध्य रोगों का इलाज किया जाता था। मुझे याद है खेलों में लगने वाली चोटों के लिए भी लाल रंग की रोशनी का प्रयोग किया जाता था।

मानव के स्वास्थ्य पर रंगों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। आयुर्वेद में शरीर के किसी भी रोग का मुख्य कारण वात, पित्त और कफ को माना जाता है। रंग चिकित्सा की मान्यता के अनुसार लाल रंग के प्रकाश से रक्त में वृद्धि होती है। सर्दी में कफ की अधिकता को दूर करने के लिए लाल, पीले, नारंगी रंग का प्रयोग किया जाता है। पित्त में गर्मी की अधिकता को नीले, बैंगनी रंग के उपयोग से दूर किया जा सकता है। बैंगनी रंग का

प्रकाश गंजापन दूर करता है। चिकित्सा सिद्धांत के अनुसार नीला प्रकाश पेट के कैंसर, पेचिश, आँख के रोग, स्त्रियों के गुप्त रोग के लिए अत्यंत लाभकारी है। पीला प्रकाश गुर्दे व यकृत रोगों में लाभकारी है।

शरीर के अंगों पर रंगों का प्रभाव :-

| क्र.सं. | रंग | ग्रंथि | विटामिन |
|---------|------------|--------------------------------|-------------|
| 1. | लाल | लिवर | विटामिन-ए |
| 2. | नारंगी | थाँयराइड | विटामिन -12 |
| 3. | पीला | आँख की पुतली के भीतर की झिल्ली | विटामिन-बी |
| 4. | हरा | पिट्यूटरी | विटामिन-सी |
| 5. | गहरा नीला | पीनियल | विटामिन-डी |
| 6. | हल्का नीला | पैराथाँयराइड | विटामिन-ई |
| 7. | बैंगनी | पीलिया | विटामिन-के |

इसके अलावा भी आप देख सकते हैं कि रंग मानव जीवन में ऊर्जा भरने के साथ-साथ जिन्दगी को भी रंगीन बना देते हैं, तो इन्द्रधनुष के सात रंगों को अपने जीवन में अपनाइए और देखिए इनके प्रभाव।

बचपन का जमाना

सुनीता बाला *

बचपन का जमाना होता है, खुशियों का खजाना होता है। न चाहत चाँद को पाने की पर दिल तितलियों का दीवाना होता है। यूँ भाग के स्कूल से आना बस खेलने ही तो जाना था। दादी की कहानियाँ होती थीं, बचपन का जमाना होता था, खुशियों का खजाना होता है। बचपन में हम कहीं भी जोर-जोर से रो लेते थे, कहीं भी खिलखिलाकर हँस पड़ते थे। न जाने क्यों हो गए हम इतने बड़े अब रोने के लिए कोना और मुस्कुराने के लिए तहजीब चाहिए। वह भी एक दौर था, यह भी एक दौर है। वह बारिश में नहाना कागज की कश्ती तैराना व उड़ते बादल, मस्ती भरी हवाएँ बारिश में भीगना अब भी उतना ही पसंद है। बस डर इस बात का है कि कहीं हल्का सा जुकाम आ गया तो रिपोर्ट पॉजिटिव न आ जाए। बचपन चला गया, सब यादें ही बनकर रह गईं हम भी कभी अपने बचपन की याद कर लेते हैं और खुश हो जाते हैं, परन्तु अपने बच्चों के बचपन में आज हम अपना बचपन नहीं ढूँढ पाते। आजकल के बचपन को मोबाइल ने कैद कर लिया, अगर आज ये स्मार्ट फोन बंद हो जाएं, सिर्फ बात करने के लिए सादा फोन इस्तेमाल हो तो कुछ हद तक बच्चों का बचपन लौट आएगा।

बचपन के वो खेल आज भी मेरे दिल को छू जाते हैं। खो-खो खेलना, पिटू बनाना, फिर बिखरी हुई गिट्टियों को जोड़ना, ये सब याद करके मुझे आज भी हँसी आ जाती है। बचपन में न तो पढ़ाई का दबाव था और न ही बस्ते का बोझ था। उन दिनों को याद करके लगता है हमने एक जादुई दुनिया खो दी, वो दुनिया जो कम से कम बच्चों के लिए हर चिन्ता से मुक्त थी। किसने कहा नहीं आती वो बचपन वाली बारिश, हम खुद अब कागज की नाव बनाना भूल गए। कल हम भी बारिश में छपाके लगाते थे, आज इस बारिश में कीटाणु देखना सीख गए। कल बैफिक्र थे कि माँ क्या कहेगी, आज बारिश में मोबाइल बचाना सीख गए। कल दुआ करते थे कि बरसे बे-हिसाब तो छुट्टी हो जाए, अब डरते हैं कि रुके ये बारिश, कहीं ड्यूटी न छूट जाए।

आजा बचपन, एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शांत,
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली, ये प्राकृतिक विश्राम।

* अधीक्षक, सेंट्रल वेअरहाउस, आर. पी. बाग, नई दिल्ली

ईटीवी से सीडब्ल्यूसी तक का सफर...

रामराज रेड्डी *

जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था तब, रामोजी फिल्म सिटी के बारे में काफी सुना था। जिंदगी में एकबार इस फिल्म सिटी का दर्शन करना एक शौक—सा बन गया था। इसके बारे में जहां भी कोई अर्टिकल देखता तो पढ़ता था। एक आर्टिकल में पढ़ा कि दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे फिल्म का "जा सिमरन जा ! जी ले अपनी जिंदगी" का प्लेटफार्म सीन यहीं फिल्माया गया है। यह फिल्म हम सब की मनपसंद फिल्म थी तो मन बना लिया कि इस एक प्लेटफार्म को देखने के लिए ही सही फिल्म सिटी जाना ही पड़ेगा। इसके साथ ही कई लेखों के माध्यम से पता चला कि यह स्टूडियो 2000 एकड़ से भी अधिक क्षेत्रफल में फैला हुआ है। इसमें 500 से ज्यादा सेट लोकेशन हैं। इस स्टूडियो में 50 से अधिक शूटिंग फ्लोर है। यहाँ एक साथ 70 फिल्मों की शूटिंग की जा सकती है। यहां भारतीय फिल्मों के अलावा हॉलीवुड फिल्मों की भी शूटिंग होती है। फिल्म सिटी के अंदर 3 होटल हैं जिसमें 5 स्टार होटल भी शामिल है। पता चला कि रामोजी फिल्मसिटी दुनिया के सबसे बड़े फिल्म स्टूडियो परिसर के नाम से गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में शुमार है। उम्र जितनी बढ़ती गई फिल्मसिटी जाने का शौक भी बढ़ता गया पर जाने के लिए अनुमति और पैसे कौन देगा। यह प्रश्न दिमाग में घूमता रहता था। उस समय ऐसे शौक को पूरा करने के लिए मिडिल क्लास के पैरेंट्स कभी सपोर्ट नहीं करेंगे इतना तो मालूम था। सोचता था कभी नौकरी करूंगा तो एक दिन पूरे परिवार को लेकर फिल्म सिटी जाऊंगा।

जब मैं स्नातक के अंतिम वर्ष में था तो एक बार रेलवे में रिक्ति के बारे में आवेदन पत्र देखा। उन दिनों केंद्र सरकार की कोई भी रिक्ति हो हर स्टेशनरी की दुकान में आवेदन प्रपत्र दूर से ही टंगे हुए दिखाई देते थे। इंटरनेट आने के बाद सब कुछ ऑनलाइन हो गया है। आवेदन पत्र किताबों की दुकान में नहीं दिखते हैं। आवेदन पत्र पढ़ने के बाद पता चला कि हम परीक्षा केंद्र अपनी मर्जी से चुन सकते हैं तो मैंने जानबूझकर परीक्षा केंद्र सिकंदराबाद चुना ताकि परीक्षा के बहाने हैदराबाद जा सकूँ और फिल्म सिटी घूमने का अवसर मिल जाए फिर कुछ दिनों बाद

प्रवेश पत्र मिला और हैदराबाद निकल पड़ा। परीक्षा तो बहाना था परंतु देनी तो थी। परीक्षा देने के बाद 3 बजे वापस आया तो पता चला कि रामोजी फिल्म सिटी घूमने के लिए पूरा एक दिन चाहिए तो उस दिन हैदराबाद की बाकी जगह घूम ली और अगले दिन फिल्म सिटी घूमने की योजना बनाई, परंतु अगले दिन भोर से ही इतनी बारिश थी कि कहीं भी निकल नहीं पाए। फिर उसके अगले दिन तो दुर्गापुर के लिए निकलना था, फिल्म सिटी घूमने का सपना अधूरा ही रह गया।

हैदराबाद घूमने के दौरान हैदराबाद टूरिज्म से संबंधित हमने कुछ किताबें खरीदी थीं उनमें रामोजी फिल्म सिटी का वर्णन पढ़ कर मेरी फिल्म सिटी जाने की इच्छा और तीव्र होती गई। फिर धीरे-धीरे दिन बीतते गए। मेरी स्नातक परीक्षा खत्म हो गई, परीक्षा परिणाम भी आ गए थे, आगे पीजी करनी है या नौकरी ये सारी बातें चल रही थीं। फिर एक दिन अपने दोस्तों के साथ "ओम शांति ओम" फिल्म देखने गए। उस दिन हमने पहली बार एक दिन में लगातार 2 फिल्में देखीं। दुर्गापुर सिनेमा में 12 बजे से 3 बजे "सांवरिया" और 3 बजे से 6 बजे "ओम शांति ओम"। सांवरिया देख हम सबका मूड़ खराब हो गया था। घर वापस जाने का मन कर रहा था परंतु दोनों फिल्मों के टिकट एडवांस बुकिंग में लिए थे, तो पैसे भी वसूल करने थे। "सांवरिया" के बाद फिर उसी सिनेमा घर में "ओम शांति ओम" देखने लग गए। फिल्म की कॉमेडी ने हमारा मूड़ फिर से ठीक कर दिया। फिल्म का एक डायलॉग — "कहते हैं अगर किसी चीज को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने की कोशिश में लग जाती है", ने न केवल मुझे बहुत प्रभावित किया बल्कि वह मेरा मनपसंद डायलॉग बन गया। दिवाली के अगले दिन कुछ रोजगार की तलाश में अखबार निकाला तो एक विज्ञापन देखा जिसमें ईटीवी में एम.ए.(जन-संचार) के अभ्यर्थियों के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए थे। उस विज्ञापन की सबसे आकर्षक बात यह थी कि साक्षात्कार एवं परीक्षा के लिए रामोजी फिल्म सिटी जाना था, इसके साथ ही परीक्षा देने एवं साक्षात्कार के लिए चयनित अभ्यर्थियों के लिए आने-जाने और रहने की

* कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, राष्ट्रीय सूदुर संवेदन केंद्र, हैदराबाद

व्यवस्था खुद ईटीवी ही करेगा। बस फिर क्या मैंने सोच लिया कि जन-संचार की पढ़ाई कर लेते हैं तो कम-से-कम परीक्षा देने के बहाने फिल्म सिटी घूम सकेंगे, वो भी रामोजी राव जी के पैसों से। सोचा यह विज्ञापन आज आया है तो 2 वर्ष बाद भी आ सकता है। मैंने 2 वर्षों में जन-संचार में स्नातकोत्तर सफलतापूर्वक पूरा कर लिया और फिर उस विज्ञापन का इंतजार करता रहा। फिर कुछ महीनों में ही ईटीवी में अनुसंधानकर्ता का विज्ञापन निकला। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। जब नब्बे के दशक में भारत में सैटेलाइट टीवी क्रांति का जन्म हुआ, उसी समय आंध्रप्रदेश के ईनाडू तेलुगु दैनिक ने तेलुगु भाषा में एक चैनल की शुरुआत की। तेलुगु से एक चैनल की शुरुआत हुई, मगर जल्द ही ईटीवी नेटवर्क ने देश के विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में कई चैनल की शुरुआत की। ईटीवी तेलुगु, उड़िया, बांग्ला, उर्दू, कन्नड़, गुजराती, मराठी सहित कई भारतीय भाषाओं का प्रथम सैटेलाइट चैनल है। दूरदर्शन के बाद क्षेत्रीय भाषाओं में किसी चैनल की शुरुआत हुई तो वो ईटीवी ही है। मैंने आवेदन कर दिया और प्रतियोगिता दर्पण की एक वर्ष की सारी पत्रिकाओं पर एक नज़र घुमा लिया। वास्तव में मैंने जनसंचार में स्नातकोत्तर तो कर लिया परंतु मैं समाचार-पत्र पढ़ने में बहुत ज्यादा रुचि नहीं रखता था इसलिए प्रतियोगिता दर्पण पढ़ लिया। इसमें लगभग सारे मुख्य समाचार कवर हो जाते हैं जो परीक्षा एवं साक्षात्कार के लिए काफी हैं। फिर कुछ ही दिनों में आने-जाने के किराये तथा रहने की व्यवस्था के साथ रामोजी फिल्म सिटी से बुलावा आ गया और मैं हैदराबाद पहुंच गया। फिल्म सिटी के लिए बस से रवाना हुआ तो मुझे खिड़की के पास वाली ही सीट मिल गई और मैं खिड़की से बाहर के दृश्यों को देख-देख कर फिल्म सिटी आने का इंतजार कर रहा था। कुछ देर चलने के बाद दूर से ही फिल्म सिटी का साइन बोर्ड दिखाई दिया और मेरे दिल की धड़कन बढ़ने लगी। एक अजीब-सा अहसास और आखिर फिल्म सिटी पहुंच गया। सुरक्षा जांच के बाद कॉल लैटर दिखा कर फिल्म सिटी के अंदर चला गया। वहां देखा कि पूरे भारत से काफी लोग आये थे। हमारी परीक्षा ईनाडू जर्नलिज्म स्कूल में हुई थी। पता चला कि लिखित परीक्षा के लिए करीब 300 लोगों का चयन किया गया था। मैंने लिखित परीक्षा देने के बाद ही परीक्षा के परिणाम के लिए चिंतित हुए बिना कुछ अभ्यर्थियों के साथ फिल्म सिटी का लुत्फ उठाने निकल गया। उस दिन लगा मेरे जनसंचार की डिग्री ने मेरा सपना पूरा कर दिया। फिल्म सिटी का नजारा देख कर बहुत खुश हुआ। कई फिल्मों की शूटिंग हो रही थी। डर से नजदीक तो नहीं गया पर दूर से ही आनंद लिया। ईटीवी के परिसर में घूम कर और अभ्यर्थियों से बात कर ऐसा लगा यहां तो मिनी इंडिया

है। 2-3 घंटे घूमने के बाद फिर परीक्षा परिणाम के लिए वापस ईटीवी कार्यालय पहुंचा, तो पता चला कि पूरे भारत से करीब 50 लोगों का चयन हुआ है जिसमें मेरा नाम भी शामिल था। उस समय ईटीवी भारत की लगभग सभी भाषाओं में उपलब्ध था तो पूरे भारत से ही लोग आये थे। मैं बहुत खुश हुआ क्योंकि साक्षात्कार के लिए और एक दिन यहां रहने का मौका मिल गया। साक्षात्कार देकर मैं काफी आश्वस्त महसूस कर रहा था। हालांकि ये मेरी जिंदगी का पहला साक्षात्कार था। साक्षात्कार के बाद में फिर से दुर्गापुर वापस आ गया। साक्षात्कार के परिणाम के लिए हर दिन ई-मेल चेक करता रहता था क्योंकि मेरे अनुसार साक्षात्कार बहुत-ही अच्छा रहा। मैं वहां मिले कुछ दोस्तों को फोन करके भी जानकारी लेता था, पता चला सब मेरे जैसे ही इंतजार कर रहे हैं। परीक्षा के परिणाम जो भी हो तो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं बस इस बात से खुश था कि मैंने जिस मकसद से जन-संचार की पढ़ाई की, वो मकसद पूरा हो गया। मैं छोटी-छोटी बातों से भी बहुत खुश हो जाता हूं।

फिर वो दिन आ गया जिसके बारे में मैंने सोचना बंद कर दिया था। मुझे ईटीवी से ई-मेल मिला कि अनुसंधान कर्ता के लिए मुझे चुन लिया गया है, मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। 'ओम शांति ओम' के डायलॉग पर यकीन होने लग गया। हालांकि जनसंचार की पढ़ाई के दौरान मुझे पता चला कि 'ओम शांति ओम' का ये डायलॉग पाओलो कोएलो (Paulo Coelho) के कोटेशन से प्रेरित है, वह कुछ इस प्रकार है- "when you want something all the universe conspires in helping you to achieve it" इसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार है " जब आप कुछ चाहते हैं तो पूरा ब्रह्माण्ड उसे हासिल करने के



लिए आपके मदद की साजिश करता है परंतु किसी से भी पूछा जाए तो एक झटके में कह देंगे कि ये डायलाग शाहरुख खान का है। समाज में सिनेमा का प्रभाव ही कुछ ऐसा है। मैं भी उनसे अलग नहीं हूँ। रामोजी फिल्म सिटी को जिंदगी में बस एक बार देख लेना ही मेरा सपना था, परंतु यहां तो उम्मीद से दोगुना मिल गया। मैं कॉल लैटर में दी गई तिथि से पहले ही हैदराबाद पहुंच गया और फिल्म सिटी ज्वाइन कर लिया। हमारा कार्यालय इतना भव्य और सुंदर था मानो अमेरिका का व्हाइट हाउस। उस भवन के सामने न जाने कितनी बार फोटो खिंचवा के फेसबुक पर डाली होंगी। बाद में हमारे सामने ही यहां 'कृष 3' फिल्म की शूटिंग भी हुई, 'कृष 3' के कई दृश्य रामोजी फिल्म सिटी में ही फिल्माए गए थे। करीब 2 महीनों तक ऋतिक रौशन रामोजी फिल्म सिटी में ही रहे थे। इसके अलावा हमारे कार्यालय को हम कई सारी फिल्मों में कभी होटल के रूप में तो कभी कार्यालय के रूप में देख सकते हैं। इस भवन के सबसे ऊपरी मंजिल पर हमारे अध्यक्ष रामोजी राव सर का कार्यालय है और हमारा प्रथम तल पर। करीब दस दिन तक हमारे लिए रामोजी फिल्म सिटी के होटल में ही रहने-खाने की व्यवस्था की गई थी। मैं 8 घंटे ज्यूटी के अलावा पूरा समय फिल्म सिटी घूम कर ही मजा लेता था। 2 हजार एकड़ जमीन पर बिछी फिल्म सिटी को पूरा घूमना संभव नहीं था परंतु मैंने अपने कार्यकाल के दौरान काफी घूम लिया। मैं फिल्म सिटी घूम कर कभी थकता नहीं था। 10 दिन बाद मैं कुछ दोस्तों के साथ मिलकर वनस्थलीपुरम किराए के मकान में रहने लगा। किराए के मकान का भी अपना ही मजा है। अपनी इच्छा के अनुसार जहां मन चाहे वहां रह सकते हैं। मैंने वनस्थलीपुरम में ऐसी जगह मकान लिया जहां से दो सिनेमा घर (सुष्मा थियेटर और संपूर्णा थियेटर) मात्र 300 मीटर की दूरी पर थे और दो सिनेमा घर 2 कि.मी. की दूरी पर (विष्णु थियेटर और विजयलक्ष्मी थियेटर) यानि मेरे घर के आस-पास चार सिनेमाघर थे। वास्तव में मैं दुर्गापुर में तेलगु फिल्म को बहुत मिस करता था, अतः इस कमी को पूरा करना चाहता था। मेरी ये आदत बन गई थी कि इन चारों सिनेमाघरों में कोई भी फिल्म आए, मैं जरूर देखता था।

मुझे ईटीवी में भी कुछ मजेदार काम ही दिया गया था। कॉपी एडिटर की मांग के अनुसार हम अनुसंधान करके न्यूजरील, डोक्यूमेंट्री या बुलेटिन के लिए संबंधित विजुवल्स संपादन कर उन्हें उपलब्ध कराते थे। अपनी सुविधा के लिए उस वीडियो डाटाबेस को भी हम ही बनाते थे। ईटीवी में किया गया काम मुझे कभी काम ही नहीं लगा। हमारे कार्यालय 24X7 था तो मेरी "ए", "बी" और "सी" शिफ्ट हुआ करती थी। ईटीवी में पिक-अप और ड्राप की सुविधा थी और खाने के लिए सस्ता

कैंटीन भी जहां मात्र 8 रुपये में अनलिमिटेड जबरदस्त स्वादिष्ट शानदार भोजन मिलता था। इसके साथ ही पूरी फैमली को फिल्म सिटी घुमाने का मौका भी मिलता था। पूरी फैमली को फिल्म सिटी घुमाने का मेरा सपना भी पूरा हो गया। फिल्म सिटी घूम कर मेरे घरवाले काफी खुश हुए थे। मेरी ज्यूटी 8 घंटे की ही हुआ करती थी परंतु मैं फिल्म सिटी में 12-15 घंटे बिताता था। वास्तव में रामोजी फिल्म सिटी में आठ रुपये में 8-9 आइटम के साथ मजेदार भोजन और पांच रुपये में नाश्ता मिल जाता था जो खुद से पकाकर खाने से कई गुणा सस्ता पडता था तो मैं खुद खाना पकाकर कभी समय बर्बाद नहीं करता था। मैं अधिकतर समय फिल्म सिटी में बिताता था। अगर मेरी "ए" शिफ्ट हो तो मेरी ज्यूटी 6-2 तक ही होती थी परंतु मैं ज्यूटी के बाद 2 बजे घर जाने के बजाय फिल्म सिटी में ही लंच और डिनर करके रात को 10 बजे घर जाता था। अगर मेरी "बी" शिफ्ट रहती तो मैं सुबह 10 बजे ही फिल्म सिटी में हाजिर हो जाता था 10 बजे से 2 बजे तक शूटिंग देखता फिर लंच करके "बी" शिफ्ट करता था "सी" यानि नाइट शिफ्ट में मैं 2 बजे ही फिल्म सिटी पहुंच जाता था समय से पहले आकर मैं फिल्म सिटी में इधर-उधर शूटिंग देखने निकल जाता था। हमारे कार्यालय के सबसे नजदीक की शूटिंग स्पॉट एयरपोर्ट है जो बस 100 मीटर की ही दूरी पर स्थित है। इस एयरपोर्ट की खास बात यह है कि इसके सामने का भाग एयरपोर्ट है तो पीछे वाला भाग अस्पताल और यह एयरपोर्ट कभी अंतरराष्ट्रीय बन जाता है तो कभी डोमेस्टिक। यहां फ्लाइट भी है जिसमें हम कई बार चढ़ कर मजे लेते थे। इस फ्लाइट के अंदर कई फिल्मों के फ्लाइट के अंदर के सीन फिल्माये जाते थे। यहां शाहरुख खान की फिल्म रा-वन और प्रभास की रेबल की शूटिंग देखने के लिए हम कई बार जाते थे। हमारा चार-पांच लोगों का एक गैंग बन गया था। हम मौका मिलते ही शूटिंग देखने निकल जाते थे। एयरपोर्ट के थोड़ी-ही-दूर पर गॉडलेस टेंपल है। इसे बिन भगवान का मंदिर कहा जाता है क्योंकि यहां आमतौर पर कोई भगवान की मूर्ति नहीं रखी जाती थी परंतु शूटिंग के दौरान निर्देशक के अनुसार यहां भगवान रखे जाते हैं, फिर शूटिंग के बाद निर्देशक अपने भगवान साथ लेकर चले जाते हैं। यह मंदिर कभी शिव मंदिर तो कभी गणेश या कभी राम मंदिर आदि का रूप ले लेता है। इस मंदिर को "चेन्नई एक्सप्रेस" में रामेश्वरम के मंदिर के रूप में दिखाया गया है। इसी जगह शाहरुख खान दीपिका पादुकोण को गोद में उठाते हुए कई सीढ़ियाँ चढ़ते हैं। इसके अलावा इस मंदिर को कई हिंदी, तेलगु, तमिल, उड़िया, बांग्ला और भोजपुरी फिल्मों में देखा जा सकता है। फिल्म सिटी में मंदिर के अलावा मस्जिद (ईद के दिन का विश यहीं तस्वीर खींच के फेसबुक पर डालते थे), रेलवे स्टेशन, चेन्नई एक्सप्रेस में

दिखाया गया पूरा गांव है। इस गांव में कई फिल्मों हमारे ही सामने बनी हैं। सूर्यवंश में अमिताभ बच्चन साहब का घर और चंद्रमुखी फिल्म का महल, कृष्णा कोटेज का कॉलेज भी हमारे कार्यालय के करीब 300 मीटर की ही दूरी पर था। सूर्यवंश और चंद्रमुखी की शूटिंग तो हमने नहीं देखी परंतु इस महल को कई फिल्मों में कोर्ट और अन्य भवन के रूप में दिखाते हुए कई शूटिंग देखी। इसके अलावा 'कृष-3' फिल्म का सिंगापूर और मुंबई के एक मार्केट का निर्माण यहीं किया गया था। 'कृष-3' फिल्म का मुंबई मार्केट हमारे कार्यालय से काफी दूरी पर बनाया गया था। जिसे करीब एक महीने बाद नष्ट भी कर दिया गया। रामोजी फिल्म सिटी में काफी फिल्मों के सेट बनाये जाते हैं और शूटिंग के बाद नष्ट भी कर दिए जाते हैं। परंतु बाहुबली फिल्म के लिए बना माहिष्मती साम्राज्य का सेट आज भी यहां स्थित है। बाहुबली की शूटिंग मेरे फिल्म सिटी में रहने के दौरान ही हुई परंतु मैं कभी माहिष्मती साम्राज्य देख नहीं पाया क्योंकि राजमौली फिल्म के हीरो सहित सभी क्रू मेंबर्स को आई डी कार्ड देते थे और खुद भी पहनते थे। बिना आई डी कार्ड के कोई भी सदस्य शूटिंग परिसर में नहीं जा सकता था। मगर आज यह स्थल सभी के लिए खुला है। यह स्थल पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। फिल्म शूटिंग के दौरान फोटोग्राफी की अनुमति नहीं है इसलिए इतनी सारी फिल्मों की शूटिंग देखने के बावजूद भी हम कभी तस्वीर नहीं ले पाए, प्रभास की फिल्म रेबल के दौरान तस्वीर लेने की कोशिश की तो फोन छीनने तक की नौबत आ गई थी। फिर फिल्म के निदेशक लारेंस ने कहा फोन दे दो और कहो कि दोबारा कभी तस्वीर न खींचे।

सब कुछ ठीक ही चल रहा था फिर मेरी शादी हुई। फिल्म सिटी अब मेरे लिए केवल जॉब करने का ही स्थान बन गया। घर में मेरी धर्मपत्नी को अकेले छोड़ कर फिल्म सिटी में घूमने का कोई मतलब अब नहीं रह गया था। इसके साथ ही मेरी ड्यूटी 24X7 थी, अतः "ए", "बी", "सी" शिफ्ट। जब मेरी शादी हुई तब मेरी पत्नी इंटरमीडिएट में पढ़ती थी यानी उसका बचपना अभी नहीं गया था। उसे आत्माओं में काफी विश्वास था। रात के समय घर में अकेले उसे काफी डर लगता था। अतः मेरी "सी" शिफ्ट ड्यूटी का मतलब मेरी नींद के साथ-साथ उसकी भी नींद गायब। हालांकि मेरी शादी के बाद मेरे अनुरोध पर मेरे बॉस ने करीब 3 महीने "सी" शिफ्ट नहीं देने का वादा भी किया था। वास्तव में

फिल्म सिटी में मैं केवल पैसों के लिए जॉब नहीं करता था, वहां समय बिताना मुझे अच्छा लगता था इसलिए जब तक वहां था तब तक कहीं भी किसी भी नौकरी के लिए आवेदन नहीं किया। शादी के बाद मुझे 9 बजे से 5 बजे की ड्यूटी वाली नौकरी की आवश्यकता महसूस हुई तो सरकारी नौकरी की ख्वाहिश हुई, अतः मैं सरकारी नौकरी की तैयारी में लग गया। प्रेरणा के लिए तो मेरे पास पहले से ही 'ओम शांति ओम' का डायलॉग कहे या पाओलो कोएलो की सूक्ति, तो थे ही इसके साथ ही ई-टीवी में काम करते समय मैंने इसरो की काफी ख्याति सुनी। लगता था अगर सरकारी नौकरी करनी हो तो इसरो में ही करना है और जब पता चला कि इसकी ख्याति के पीछे डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का भी हाथ है, तो मैंने इनके द्वारा लिखित पुस्तक विंग्स ऑफ फायर (अग्नि की उड़ान) पढ़ी, उसमें एक जगह लिखा हुआ था— "Desire when it stems from the heart and spirit when it is pure and intense possesses awesome electromagnetic energy- This energy is released into the ether each night, as the mind falls into the sleep state. Each morning it returns to the conscious state reinforced with the cosmic currents" उसका हिंदी अनुवाद कुछ इस प्रकार है" ख्वाहिश अगर दिलो-जान से निकली हो, वो पवित्र हो और उसमें शिद्ध हो तो उसमें कमाल की एक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक एनर्जी होती है। एक बर्की मकनती-सी ताकत होती है। दिमाग जब सोता है तो वो एनर्जी रात की खामोशी में बाहर निकल



जाती है और सुबह कायनात, ब्रह्मांड से सितारों की गति रफ्तार को अपने साथ समेट कर दिमाग में वापस लौट आती है।" इसने मुझे बहुत ही प्रेरित किया और इन पंक्तियों को ही प्रेरणा के रूप में लेकर मैं सरकारी नौकरी की तैयारी में लग गया क्योंकि मेरे पास 'सी' शिफ्ट न करने के लिए 3 महीने की मोहलत थी। तीन महीने बाद मेरे बॉस मुझे नाइट शिफ्ट में लगा देंगे, अतः मुझे जल्द ही वहां से निकलना था। केवल दो महीने में ही सरकारी नौकरी की प्रथम परीक्षा एवं साक्षात्कार एनआईआरडी में दिया और चयनित हो गया और मैंने ईटीवी से त्यागपत्र दे दिया क्योंकि मुझे 9-5 की जॉब मिल गई थी और सरकारी आवास में रहने का मौका भी अब मेरी पत्नी खुश थी क्योंकि अब मुझे नाइट शिफ्ट नहीं करना पड़ेगा और उसे घर में अकेला नहीं रहना पड़ेगा। छह महीने वहां काम करते-करते मुझे एनएफडीबी से ऑफर आया। एनएफडीबी में काम करते-करते मैंने केंद्रीय भंडारण निगम के लिए आवेदन किया और परीक्षा उत्तीर्ण करने पर केंद्रीय भंडारण निगम के क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि में काम करने का प्रस्ताव मिला और "किसी चीज को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने की कोशिश में लग जाती है" वाले डायलॉग को फिर से चारितार्थ होते देखा। भ्रमण प्रेमी होने के नाते मैं काफी घूमता था। देश के कई राज्य घूमे परंतु आज तक कभी केरल नहीं घूमा था। अतः केरल जाने का मौका मिलते ही सीडब्ल्यूसी, क्षे.का.,कोच्चि में हिंदी अनुवादक के रूप में

ज्वाइन कर लिया। सीडब्ल्यूसी, क्षे.का, कोच्चि में इससे पहले कोई भी हिंदी अनुवादक न होने के कारण हिंदी से जुड़ी कोई भी फाइल वहां उपलब्ध नहीं थी। एक बात तो समझ में आ गई कि सारी फाइलों की शुरुआत मुझे ही करनी पड़ेगी। फाइलों की शुरुआत तो कर दी। कार्यालय में अभी एक वर्ष भी नहीं बीता था कि वहां संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण दौरे से संबंधित पत्र मिला। संसदीय राजभाषा समिति का सामना करना एक चुनौती से कम नहीं है। मैंने इस चुनौती को स्वीकार किया और सभी संबंधित फाइलें तैयार कीं। केंद्रीय भंडारण निगम के निगमित कार्यालय के हिंदी अनुभाग से मुझे काफी मदद मिली। नम्रता मैडम, भट्ट सर तो हमारी मदद के लिए केरल ही पहुंच गए। केरल के लोग भी काफी सहायक प्रकृति के हैं, अतः संसदीय राजभाषा समिति का सामना करने का मेरा अनुभव काफी सुखद रहा। आज जब संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण की बात होती है तो मुझे कोई डर नहीं लगता है। मैंने सीडब्ल्यूसी से इतना कुछ सीख लिया कि मुझे हिंदी से संबंधित किसी भी समिति से अब डर नहीं लगता है। रामोजी फिल्म सिटी से सीडब्ल्यूसी तक के मेरे सफर में मेरी शादी की जिंदगी और मेरे पिता बनने का अनुभव भी शामिल है। ईटीवी में काम करते वक्त मेरी शादी हुई और सीडब्ल्यूसी में ज्वाइन करने के बाद मैं पिता बना। आज मैं सीडब्ल्यूसी में नहीं हूँ परंतु इससे जुड़ी यादें हमेशा मेरे साथ रहेंगी....

रचनाकार कृपया ध्यान दें

- कृपया पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख सीधे निगमित कार्यालय के राजभाषा अनुभाग के मेल : rajbhasha.cwc@gmail.com, rajbhasha.cwc@cewacor.nic.in पर या डाक द्वारा भेजें।
- लेख के साथ इस आशय की घोषणा होनी चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक की मौलिक रचना है।
- यदि किसी कारणवश लेख/रचना को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा।
- रचनाएं भेजते समय कृपया इस बात का ख्याल रखें कि वह स्तरीय हों तथा समाज, साहित्य एवं संस्कृति से जुड़ी हुई हों।
- भंडारण से संबंधित रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। प्रकाशित सभी रचनाओं पर पुरस्कार/मानदेय प्रदान किया जाता है।
- निगम के सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी भी अपनी रचनाएं प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं। यदि वे पत्रिका पढ़ने में रुचि रखते हों तो अपना पता इस कार्यालय को भेज दें, ताकि उन्हें पत्रिका भेजी जा सके।
- आप अपनी रचनाएं निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं :-

प्रबंधक (राजभाषा)
केंद्रीय भंडारण निगम, निगमित कार्यालय,
4/1, सीरी इंस्टीच्युशनल एरिया, अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौजखास,
नई दिल्ली-110016

केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा आईजीएमआरआई, हापुड़ में आयोजित प्रशिक्षण सुविधाएं

केन्द्रीय भंडारण निगम ने दिनांक 25.10.2012 को आईजीएमआरआई, हापुड़ के संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सुविधाओं तथा प्रबंधन को लेने तथा खाद्यान्नों एवं अन्य कृषि वस्तुओं के फसल उपरान्त प्रबंधन में प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से इसे उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में विकसित करने हेतु आईजीएमआरआई, हापुड़, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग, भारत सरकार के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जिसका आगामी 05 वर्षों की अवधि के लिए 31.05.2018 को नवीनीकरण किया गया। इसके अतिरिक्त, निगम की ओर से विभिन्न प्रकार्यात्मक क्षेत्रों से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम भी यहाँ आयोजित किए जा रहे हैं। समझौता ज्ञापन में स्पष्ट है कि केन्द्रीय भंडारण निगम आईजीएमआरआई, हापुड़ को उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में विकसित करेगा जिससे खाद्यान्नों के फसल उपरान्त प्रबंधन पर प्रशिक्षण के लिए सार्क देशों, पड़ोसी एवं अन्य देशों के विदेशी प्रतिभागी प्रशिक्षण के लिए आकर्षित होंगे।

केन्द्रीय भंडारण निगम ने इस संस्थान में अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ-साथ आईजीएमआरआई, हापुड़ के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन मई, 2013 से शुरू कर दिया है। इसके अतिरिक्त, आईजीएमआरआई, हापुड़ में उपलब्ध सुविधाएं नीचे दी गई हैं:—

प्रयोगशाला (पैस्ट नियंत्रण के अधीन)

- ◆ भौतिक विश्लेषण प्रयोगशाला
- ◆ रसायन विश्लेषण प्रयोगशाला
- ◆ उपकरणीय विश्लेषण प्रयोगशाला

संग्रहालय

संस्थान का एक सुव्यवस्थित संग्रहालय है जिसमें ब्लो-अप्स, मैग्नीफाइंग लैन्स बॉक्स, पारंपरिक और आधुनिक भंडारण संरचना के डिस्पले मॉडल, कीट-पैस्ट एवं नक्शे इत्यादि के द्वारा खाद्यान्नों के वैज्ञानिक भंडारण के विभिन्न पहलुओं का क्षेत्रवार आकर्षक प्रदर्शन किया गया

है। इसके साथ ही खाद्यान्नों की क्षति करने वाले चूहों, पक्षियों तथा कीटों के नमूनों का प्रदर्शन किया गया है।

पुस्तकालय

संस्थान का सुविकसित विशाल पुस्तकालय भी है जिसमें कृषि अनुसंधान से संबंधित विभिन्न विषयों पर विशेषतः खाद्यान्नों के फसल उपरान्त प्रचालनों, अनाज रसायन, कीटनाशक, कीट विज्ञान, खाद्य पदार्थ, मसाले, बीजों, रोग विज्ञान, विपणन और कृषि अभियांत्रिकी आदि की अंतरराष्ट्रीय रूप से प्रसिद्ध 8500 पुस्तकों और 47 पत्रिकाओं से अधिक विविध पुस्तकें उपलब्ध हैं। आईजीएमआरआई का पुस्तकालय अंतरराष्ट्रीय स्तर की 17 विदेशी पत्रिकाओं तथा 22 ख्याति प्राप्त भारतीय पत्रिकाओं के लिए अंशदान देता है ताकि न केवल भारत अपितु विश्व के अन्य देशों में हो रहे अनुसंधान से संबंधित नई जानकारीयां प्राप्त हो सकें।

आउटडोर भंडारण संरचना यार्ड

आईजीएमआरआई परिसर में आउटडोर भंडारण संरचना यार्ड छात्रावास भवन के सामने है। यार्ड में विभिन्न क्षमताओं की अनेक प्रकार की मैटेलिक (धातु) एवं नॉन-मैटेलिक (गैर धातु) भंडारण संरचनाओं की समृद्ध विरासत है।

छात्रावास

संस्थान के परिसर में एक सुसज्जित छात्रावास है जिसमें 50 प्रशिक्षुओं के रहने की व्यवस्था है तथा इसमें न्यूनतम दरों के भुगतान पर भोजन तथा आवास की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

मनोरंजन के साधन

मनोरंजन के उद्देश्य हेतु एक टी.वी. का कमरा एवं टेबल टेनिस हॉल अलग से रखा गया है। साथ ही एक बैडमिंटन कोर्ट भी खुले आंगन में उपलब्ध है।

ग्रामीण विकास प्रक्रिया में सहकारिता की भूमिका

आर.पी.सिंह बघेल *

परिचय

सहकारिता आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य कृषकों, ग्रामीण कारीगरों, भूमिहीन मजदूरों एवं समुदाय के कमजोर तथा पिछड़े वर्गों एवं न्यून आय वाले व्यक्तियों, अर्ध रोजगार तथा बेरोजगारों को रोजगार साख तथा उपयुक्त प्रौद्योगिकी प्रदान कर एक अच्छा उत्पादक बनाना है। लेकिन ग्रामीण विकास का लक्ष्य न केवल उत्पादक बढ़ाना है अपितु सभी वर्गों को पूर्ण रोजगार तथा उनमें विकास प्रक्रिया का न्यायसंगत आबंटन करना है। भारत जैसे विकासशील देश में जहां मानव शक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण श्रोत है और जिसका एक भारी अंश समाज का कमजोर वर्ग है ग्रामीण विकास किसी भी आर्थिक विकास की सार्थक प्रक्रिया के लिए व्यापक महत्व का होता है।

सहकारिता एक लोकतान्त्रिक आन्दोलन है जो मात्र अपने सदस्यों द्वारा प्रदर्शित गतिशीलता और निर्देश केवल एक सुयोग्य नेतृत्व में ही कारगर हो सकता है जिसके अभाव में आन्दोलन समस्त उपलब्धियों तथा असफलताओं पर उसके नेतृत्व के स्वरूप और किस्म की छाप होती है जो बदले में आन्दोलन के सामान्य जन का प्रतिबिम्ब होती है।

सहकारिता का विचार

सन 1904 में सर्वप्रथम यह विचार अपनाया गया। उस समय देश परतंत्र था। अतः विदेशी शासकों ने अपने हितों को ध्यान में रखकर इसे ज्यादा पनपने नहीं दिया, परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देशवासियों को ही यह कार्य-भार सौंपा गया। फिर भी अभी तक अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो सके हैं। अतः इस पर गम्भीरता से विचार करने कि आवश्यकता है।

सर्वप्रथम तो यह तय करना होगा कि सहकारिता को वास्तविक रूप से हम ग्रामीण जीवन में उतारना चाहते हैं या घोषणा पत्रों तथा सरकारी एवं सहकारी दिखावे के रूप में इसे कार्यालयों तक ही सीमित रखना चाहते हैं। वास्तव में सहकारिता कोई सैधांतिक बात नहीं है। बल्कि इसका गहरा संबंध तो सामान्य व्यक्ति कि भावना से है जहां निश्चित रूप से यह अपने उद्देश्यों में सफल हो सकती है।

* अध्यक्ष, जिला औद्योगिक सहकारी संघ लि.
प्रयागराज (इलाहाबाद) उ.प्र.

हमारे देश के सर्वांगीण विकास की दो प्रमुख धाराएँ हैं

1. ग्रामीण विकास 2. शहरी विकास।

ग्रामीण विकास का सम्बन्ध देश कि 70 प्रतिशत जनसंख्या से है, जबकि शहरी विकास का सम्बन्ध देश की 30 प्रतिशत जनसंख्या से है। यातायात एवं संचार की सुविधाओं नए देश में शहरीकरण को बहुत अधिक प्रोत्साहित किया है। हर व्यक्ति किसी न किसी बड़े शहर में रहना चाहता है भले ही वहां का जीवन कष्टपूर्ण हो। अतः हमें विकास की दिशा को पूर्णतः ग्रामीण क्षेत्रों की ओर मोड़ना होगा और इस कार्य के अंतर्गत हमें गाँवों में शहरीकरण को प्रोत्साहन देना होगा अर्थात् वे सब सुविधाएँ जिनके कारण व्यक्ति गाँवों से शहर की ओर भाग रहा है। गाँवों में उपलब्ध करनी होगी। इस महत्वपूर्ण कार्य को सहकारिता के माध्यम से ही संपन्न किया जा सकता है। गाँधी जी भी कहा करते थे बिना सहकार नहीं उद्धार। लेकिन सहकारिता आन्दोलन मुख्यता सरकारी नीतियों तथा कारवाइयों का परिणाम है।

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था सहकारिताओं का कार्यक्षेत्र

सहकारिता और उसके उद्देश्य को देखते हुए ऐसा लगता है कि भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का जो ढाँचा एवं क्षेत्र है वह सम्पूर्ण विकास कि दृष्टि में सिर्फ सहकारिता का ही कार्यक्षेत्र हो सकता है। आज भारत कि आर्थिक व्यवस्था कृषि एवं ग्रामीण विकास पर आधारित है। भारत कि लगभग 60 प्रतिशत आबादी भारत के लगभग 60 लाख ग्रामों में रहती है जो कृषि तथा कृषि पर आधारित उद्योगों पर आश्रित है। शेष 40 प्रतिशत लोग शहरों में निवास करते हैं। भारत भौगोलिक क्षेत्रफल में लगभग 90 प्रतिशत भूमि का उपयोग किया जाता है। वन 6057 करोड़ हेक्टेयर में फैले हैं तथा बोई गई भूमि का क्षेत्रफल 1394 करोड़ हेक्टेयर है और फसलें 1640 करोड़ हेक्टेयर में उगाई जाती हैं किन्तु सिंचित क्षेत्रफल केवल 23 प्रतिशत (फसली क्षेत्र का) है। आज भी सम्पूर्ण देश में 7005 करोड़ कृषि जोते हैं और औसत जोत का क्षेत्रफल 206 प्रति हेक्टेयर आता है। खाद्यान फसलों का उत्पादन 80 प्रतिशत तथा अन्य फसलें 20 प्रतिशत उत्पादित कि जाती हैं। राष्ट्रीय आय में कृषि उत्पादन से होने वाली आय लगभग 48 प्रतिशत है। ग्रामों का देश भारत सहकारिता के लिए



व्यापक कार्यक्षेत्र है। जहाँ सहकारिता अपने सभी उद्देश्यों को ग्रामीण विकास प्रक्रिया में सहज ही प्राप्त कर सकती है।

ग्रामीण विकास श्रेष्ठतम आधार

देश की 60 प्रतिशत जनसंख्या का विकास करने के लिए ग्रामीण क्षेत्र को विकसित करना अनिवार्य ही नहीं वरन एकमात्र श्रेष्ठतम विकल्प है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने राजनीतिक आंदोलन के साथ ही ग्रामीण विकास का नारा दिया था क्योंकि भारत ग्रामों में निवास करता है।

ग्राम उनके विकास कार्यक्रम का आधार है। भारत के प्रत्येक व्यक्ति को खाना, कपड़ा, रोजगार उपलब्ध कराना गाँधी का एकमात्र लक्ष्य था। गांधीजी के विचारानुसार आदर्श ग्राम पूर्णतया स्वावलम्बी होना चाहिए घरों में पर्याप्त प्रकाश एवं हवा की व्यवस्था होनी चाहिए वे सभी स्थानीय साधन सामग्री से सम्पन्न होने चाहिए। उनमें पानी की उचित व्यवस्था के साथ-साथ आपसी भेद-भाव मिटाने के लिए सार्वजनिक मिलन-स्थल भी होनी चाहिए। सार्वजनिक चरागाह, दुग्धशाला, शिक्षा संस्थाएँ, जिनमें ओद्योगिक शिक्षा उपलब्ध हो तथा अपनी पंचायत प्रत्येक ग्राम में होनी चाहिए रक्षा के लिए ग्रामरक्षक भी होना चाहिए—ऐसी थी गांधीजी की कल्पना जिसे हम व्यावहारिक स्वरूप में परिवर्तित करने का सतत प्रयत्न कर रहे हैं।

कार्यक्रम एवं प्रभाव

विगत समय में ग्रामीण विकास तथा भारत के ग्रामों के आधुनिकरण का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए विविध कार्यक्रम हाथ में लिए गए।

- क. वास्तविक मापदण्ड के आधार पर सम्भावित लाभार्थियों की उचित पहचान।
- ख. समर्पित एवं वचनबद्ध तंत्र के अभाव के कारण कार्यन्वयन प्रक्रिया में व्यवधान।
- ग. ग्रामीण क्षेत्रों में आबादी के अपेक्षाकृत धनी तथा प्रभावशाली वर्गों की ओर से निहित स्वार्थ के प्रति दबाव।
- घ. कार्यक्रम के प्रति लोगों में जानकारी का अभाव।
- ङ. सहकारी विभागों, अभिकरणों आदि में आपसी तालमेल का अभाव।
- च. कार्यक्रम के विश्लेषण करने एवं मार्गदर्शन देने हेतु उचित मशीनरी का अभाव।
- छ. आधारभूत वित्त संस्थाओं एवं स्रोतों का अभाव तथा प्रशासनिक एवं बैंकिंग की कुव्यवस्था।

ज. ग्रामीण विकास कार्य हेतु उपलब्ध कराए गए ऋण के उपयोग की देख-रेख न करना आदि।

राष्ट्रीय सहकारी नीति संकल्प एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रम

राज्यों के सहकारिता मंत्रियों ने 1978 में हुए सम्मेलन में राष्ट्रीय आयोजन तथा विकास में सहकारी आन्दोलन की भूमिका और सहकारी आन्दोलन के लोकतंत्री स्वरूप तथा सहकारी संस्थाओं की व्यापार कुशलता को बढ़ावा देने व बनाये रखने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण विकास के लिए निम्न संकल्प किए।

1. सहकारी समितियों का निर्माण विकेन्द्रित श्रम प्रधान ग्रामोन्मुख आर्थिक विकास के एक प्रमुख साधन के रूप में किया जायगा।
2. सहकारी आन्दोलन का विकास निर्बलों की ढाल के रूप में किया जाएगा। छोटे और सीमान्त किसानों तथा खेतिहर मजदूरों ग्रामीण कारीगरों और मध्यम तथा निम्न आय वर्गों के साधारण उपभोक्ताओं की सहकारी कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए ज्यादा मौका दिया जायगा।
3. सम्पूर्ण तथा व्यापक ग्रामीण विकास के लिए ऋण कृषि निवेश की आपूर्ति डेयरी, कुक्कुट पालन, मछली पालन, सूअर पालन सहित कृषि उत्पादों आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं के विपणन और वितरण में सम्बन्ध बनाकर ग्रामीण क्षेत्रों में एक मजबूत जीवन तथा समन्वित सहकारी प्रणाली बनाई जायगी।
4. सहकारी कृषि संसाधनों और औद्योगिक इकाइयों का (प्रत्येक स्थान-ग्राम एवं शहर में जाल बिछाया जायेगा जिससे उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं के बीच लाभकर आर्थिक सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।
5. उपभोक्ता सहकारी आन्दोलन का निर्माण इस प्रकार किया जायेगा जिससे सार्वजनिक वितरण प्रणाली (शहर तथा ग्राम दोनों में मजबूत हो और उपभोक्ता संरक्षण को सहारा मिले तथा वह मूल्य स्थिरीकरण का साधन बन सके।

समग्र एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम संकल्पना 1980

ग्रामीण विकास को अब राष्ट्रीय उन्नति और सामाजिक कल्याण के लिए एक अनिवार्य शर्त अनुभव किया जाने लगा है। समस्या केवल ग्रामीण क्षेत्र के विकास की ही नहीं बल्कि ग्रामीण

समुदायों जिनमें हमारा राष्ट्र समाविष्ट है के विकास की है। प्रत्येक ग्रामीण परिवार को समग्र राष्ट्रीय उत्पादन एवं वर्तमान प्रति व्यक्ति आय में न्यायपूर्ण अंश प्राप्त होना चाहिए। इस प्रकार समग्र विकास कार्यक्रम का प्रयोग इन कार्यों से जुड़ा है।

- क. आय रोजगार और उत्पादन की वृद्धि एवं अधिकतम उपयोग जिससे लोगो को गरीबी की रेखा से ऊपर उठाया जा सके।
- ख. जनसंख्या के कमजोर वर्गों के प्रति विकास के आनुपातिक लाभ की अपेक्षा अधिक लाभ सुनिश्चित करना।
- ग. न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रमों रोजगार शिक्षा जीवनस्तर स्वास्थ्य पेयजल परिवहन बिजली आदि को पूर्ण करना।
- घ. काम के लिए अनाज कार्यक्रम से बेकारी दूर करना तथा उद्योगों की स्थापना करना।
- ङ. सामाजिक एवं आर्थिक अवस्थापना का निर्माण।
- च. गरीबों की भलाई के लिए विद्यमान संस्थाओं एवं संगठनों को नया मोड़ देना।
- छ. विशेषकर ग्रामीण गरीबों को बचाने के लिए उपयुक्त संगठन की स्थापना।
- ज. ग्रामीण विकास केन्द्रों को विपणन केन्द्र के रूप में मान्यता देना तथा इस प्रकार उनमें सभी तकनीकी विकास रोजगार सम्बन्धी सुविधाओं का उपलब्ध कराना। समग्र ग्रामीण विकास कार्य को सही दिशा में करने के लिए खण्ड स्तरीय विकास कार्यक्रम के अतिरिक्त कोई अन्य प्रथा उपयुक्त न होगी ऐसा विशेषज्ञों का मत रहा है। विकास खंड ही विकास का आधार माना गया है जो राष्ट्रीय विकास योजना निर्माण में विशेष योगदान देता है।

उद्देश्य नेतृत्व के लिए ठोस कदम

आज हम जिस समाज के सदस्य हैं, उसकी नींव में आश्वासन और अविश्वास का समीक्षण है। इस सब के पीछे जिस एक स्वार्थी का अदृश्य हाथ है वह है आज की लाभ वृत्ति जिसके कारण सहकारी संस्थाएँ अपने उद्देश्य को विकास का रूप नहीं दे पाईं। इसलिए पुनः विश्वासपूर्ण नेतृत्व के लिए दृढ़ संकल्प सहकारी संस्थाओं को चाहिए कि उन तमाम कारणों जिसको लेकर उनका नेतृत्व लडखडा सा गया है के लिए प्रयास करें।

1. राजनीतिक प्रभाव को समाप्त करना

हालाँकि अब यह पूर्णतया सम्भव नहीं है लेकिन कुछ प्रयासों से इसे स्वस्थ बनाया जा सकता है। वह यह है कि एक सहकारी सतर्कता आयोग का गठन किया जाये। वह उन बेईमान निदेशकों को दंडित करे जो समिति के विरुद्ध कार्य करते हैं।

2. नियुक्ति के लिए निष्पक्ष और सक्षम समिति का होना

सहकारी समितियों के स्वस्थ विकास के लिए यह आवश्यक है कि सहकारी कर्मचारियों का चयन कर उनकी श्रेणी तैयार कि जाय और उसे विभिन्न कार्यकारी सहकारी समितियों के राज्य स्तरीय संघ को सौंपा जाये ताकि उचित चुनाव गुण अवगुण के आधार पर, पदोन्नति के अवसर अच्छा वेतन नौकरी कि सुरक्षा के साथ सहकारी समितियों से अपनी संस्था के लिए निर्भय और निष्पक्ष होकर वे कार्य कर सकें। एक बार यदि यह परिपाटी शुरू हो जाय तो कोई व्यक्ति स्वार्थ या अन्य उद्देश्य से निदेशक के रूप में चुने जाने का प्रयास नहीं करेगा।

3. नेतृत्व कि परिपक्वता के लिए सहकारी शिक्षा को अनिवार्य करना

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में डिग्री बटोर कर बेरोजगारों कि पंक्ति में खड़ा होने के सिवा ऐसी कोई बात नहीं झलकती जिसमें युवावर्ग अपने पैरों पर खड़ा होकर नेतृत्व कि बात सोचें। इसलिए जरूरी है स्कूलों तथा कालेजों में प्रारम्भ से ही सहकारी शिक्षा अनिवार्य की जाए ताकि छोटी उम्र से ही सहकारी नेतृत्व की बात व्यावहारिक रूप में प्रकट हो। पदाधिकारियों के लिए नियमित रूप से गोष्ठी का आयोजन होना चाहिए और यदि पदाधिकारी किसी संगठन में पूर्णकालिक या अंशकालिक काम करते हैं तो उन्हें उचित वेतन या मानधन दिया जाना चाहिए। जिससे गलत रास्ते से पैसे लेने जैसी बातें बंद हों।

4. संचालन के लिए योग्य व्यक्ति का चयन

जरूरी है एक बार सहकारी कानूनों में संशोधन करना। प्रायः देखा जाता है कि सहकारी समितियाँ अपने संचालन के लिए ऐसे व्यक्ति को कार्यभार सौंप देती हैं जो उसके कार्य संचालन से अनभिग्य है। ऐसा ठीक नहीं। इससे वैमनस्य बढ़ता है। लोग आलसी होने लगते हैं। इसलिए जरूरी है अपनों में से ही यानी सहकारियों में से ही किसी योग्य व्यक्ति को कार्यभार सौंपना। उन्हें ही सम्मानित करना। लेकिन यह भी इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि चुना गया व्यक्ति योग्य हो निश्चित रूप से अपने में चुना गया व्यक्ति दिये गए कार्यभार का स्वागत करेगा खुद पर गर्व करेगा साथ ही सहकारिता और सहकारियों के बीच



वफादार भी रहेगा। तभी प्रतियोगिता कि भावना से ओत-प्रोत हो यह सहकारिता आगे बढ़ेगी। वर्तमान समय में देश के ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए सहकारी बैंक भूमि विकास बैंक औद्योगिक सहकारी संस्थाएँ सहकारी कृषि समितियाँ सहकारी विपणन समितियाँ सहकारी उपभोक्ता समितियाँ ग्रामीण विद्युत सहकारिताएँ आदि अनेकों संस्थाएँ कार्य कर रही हैं, परन्तु इनके बारे में अधिक जानकारी नहीं है या इन संस्थाओं से उसके द्वारा कार्य कराना उसके वश कि बात नहीं है। वास्तव में इन संस्थाओं का अधिकाधिक लाभ ग्रामीण क्षेत्र के कुछ सम्पन्न वर्ग से सम्बन्धित व्यक्तियों को मिला है। इस कारण सामान्य ग्रामीण व्यक्ति को इन संस्थाओं के कार्यों में कोई रुचि नहीं है। इसी तरह कि स्थिति शहरी क्षेत्रों के उपभोक्ता व सहकारी समितियों आदि के सम्बन्ध में भी देखने को मिलती है। अतः अब सहकारिता सप्ताह मनाकर ग्रामीण क्षेत्रों कि समस्याओं को हल कर सकते हैं या इससे सामान्य ग्रामीण व्यक्ति के मन में इन संस्थाओं के प्रति विश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यकता इस बात कि है कि सच्चे दिल से जन-कल्याण एवं राष्ट्र-कल्याण कि भावना को ध्यान में रखकर इस बात पर विचार किया जाय कि देश में इतनी बड़ी मशीनरी एवं करोड़ों रुपये के प्रावधान के बावजूद भी सहकारिता का कार्यक्रम सामान्य ग्रामीण व्यक्ति के लिए लाभप्रद क्यों नहीं हो सका युवा पीढ़ी क्यों सहकारिता के नाम से आक्रोश में आ जाती है इसका संक्षेप में यही उत्तर है कि सहकारिता विभाग ने अपनी मूल भावना को ध्यान में रखकर कार्य नहीं किया है और जो कार्य किया है वह इतना नगण्य है कि सामान्य ग्रामीण व्यक्ति का विश्वास अर्जित नहीं कर सकता। इसलिए अब जरूरी है ग्रामीण विकास के लिए सहकारी संस्थाओं को निम्न प्रकार से प्रयोग लाने कि -

- क. सहकारी संस्था को ग्राम विकास योजना निर्माण एवं उसके कार्यन्वयन का एक अभिन्न अंग माना जाए। सहकारी संस्थाओं का ग्राम पंचायत तथा अन्य विकास अभिकरण से पूर्ण समन्वय स्थापित रहे।
- ख. ग्राम कि सम्पूर्ण आवश्यकता में से अधिकाधिक आवश्यकताओं कि पूर्ति का उत्तरदायित्व सहकारी समितियों को दिया जाए।
- ग. ग्राम विकास योजना के लिए भी आर्थिक स्रोत के रूप में ग्रामीण सहकारी संस्था को प्रमुख स्थान दिया जाय।
- घ. सहकारी संस्था, ग्राम स्थित सभी प्रकार के अभिकरणों में समन्वय स्थापित करने का उत्तरदायित्व संभाले।
- ङ. ग्राम अंगीकृत योजना को समग्र ग्रामीण विकास योजना का आधार बिन्दु मानकर कार्यान्वित किया जाए। इस कार्यक्रम को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाएँ भी अपना रही हैं।

ग्राम विकास रणनीति का एकमात्र साधन - सहकारिता

उद्देश्यों तथा विचारधारा कि दृष्टि से ग्रामीण विकास कार्यक्रम तथा सहकारी संगठन एक ही विषय के दो पहलू हैं। दोनों का मुख्य उद्देश्य समाज का आर्थिक उत्थान करना एवं शोषण रहित समाज कि स्थापना करना है। अन्तर केवल इतना है कि ग्रामीण विकास कार्यक्रम कि संज्ञा देकर सहकारिता के साधन का प्रयोग करना है। सहकारिता की परिधि के अन्तर्गत सभी प्रकार के आर्थिक कार्यक्रम आते हैं चाहे वे कृषि, विपणन आपूर्ति उद्योग प्रक्रिया अथवा अन्य किसी भी सम्बन्धित क्रिया से जुड़े हों। कहने का तात्पर्य यह है कि सहकारिता के लिए जहाँ न आये रवि वहाँ जाये कवि वाली कल्पना साकार होती है। इतना ही नहीं ग्राम से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक प्रत्येक स्तर पर सहकारी संगठन कार्यरत ही नहीं निरंतर बढ़ते चले जा रहे हैं। अतएव ग्रामीण विकास कार्यक्रम, एक प्रकार से सहकारिता का ही एक अंग माना जा सकता है क्योंकि सहकारिता के क्षेत्र ग्राम से भी आगे हैं। वास्तविक रूप से सहकारिता आन्दोलन का प्रादुर्भाव ग्रामवासियों की अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए ही हुआ। सहकारिता ने भारत में 90 प्रतिशत ग्रामों से अधिक की अपनी कार्य परिधि कार्यक्षेत्र में लिया है। औसतन प्रत्येक चार ग्रामों की बीच एक ग्रामीण सहकारी समिति कार्यरत है। सहकारी सिद्धांतों के अनुसार कार्य करने से ग्राम जन-समुदाय अपने आप ही सहकारिता की प्रगति को ग्रामीण विकास मानने लगा है। सहकारिता की मुख्य रणनीति स्थानीय संसाधनों को विकसित कर उनका जनता के लिए उपभोग करना है जो ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अनुरूप है। नियोजकों तथा विशेषज्ञों के साथ एक कमी रही है कि उन्होंने सहकारिता सहकारी इकायों जो मात्र इनपुट प्रदान करने वाली संस्था समझा जबकि वास्तविक रूप से ये संस्थाएँ सभी प्रकार का कार्य करने में न केवल सक्षम है वरन कर भी रही है और इस प्रकार ये ग्रामीण विकास के मुख्य केन्द्र के रूप में काम कर रही हैं। इनकी क्षमता का पूर्ण उपयोग करना वर्तमान स्थिति में आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो गया है। सहकारिता का संगठनात्मक ढाँचा कार्यप्रणाली सिद्धांत जन-समुदाय की साझेदारी वित्तीय सुदृढता विस्तार आदि ऐसे आधार हैं जिनसे ग्रामीण विकास का मुख्य तथा एकमात्र साधन सहकारिता ही सिद्ध किया जा सकता है। आजीविका की वैकल्पिक सुविधा प्रदान कर कृषि पर ग्रामीण भारत की अत्यधिक निर्भरता को कम करने की जरूरत को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण कृषितर क्षेत्र का संवर्धन अत्यंत महत्वपूर्ण है इसके द्वारा छोटे और सीमांत किसान तथा कृषि से संबंधित मजदूरों का शहरी क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में पलायन को भी रोका जा सकता है।

सचित्र गतिविधियां

निगम के अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक की झलकियां



माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री पीयूष गोयल जी द्वारा निगम के हितधारकों के लिए विचार विमर्श बैठक



माननीया उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति जी की अध्यक्षता में मदुरै, तमिलनाडु में आयोजित मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक



निगम की सेवाओं के विस्तार की झलकियां



उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय से राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन हेतु निगमित कार्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई एवं गुवाहाटी को पुरस्कार



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम- I) दिल्ली द्वारा 'भंडारण भारती' को उत्कृष्ट गृह पत्रिका पुरस्कार



निगमित कार्यालय में आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह



गणतंत्र दिवस का आयोजन

निगमित कार्यालय में गणतंत्र दिवस के अवसर पर निगम के प्रबंध निदेशक द्वारा झंडा फहराया गया। इस अवसर पर निदेशक (वित्त), निदेशक (कार्मिक) एवं वरिष्ठ अधिकारियों सहित अन्य कर्मचारी भी उपस्थित हुए।



निगमित कार्यालय में स्वच्छता पखवाड़ा एवं उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय से स्वच्छता पखवाड़ा हेतु पुरस्कार



संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति द्वारा अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण



क्षेत्रीय कार्यालय कोच्चि



आईसीडी पटपडगंज

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति द्वारा अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण



सेंट्रल वेअरहाउस, कोटा



क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

निगमित कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला



अखिल भारतीय राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम





स्थापना दिवस के अवसर पर निगमित कार्यालय में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम



क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम की झलकियां





क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम की झलकियां



क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम की झलकियां





क्षेत्रीय कार्यालय, पटना में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम की झलकियां



क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम की झलकियां





क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी पखवाड़े की झलकियां



क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु



क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल



क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी पखवाड़े की झलकियां



क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई



क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली



क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी





क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी पखवाड़े की झलकियां



क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि



क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ



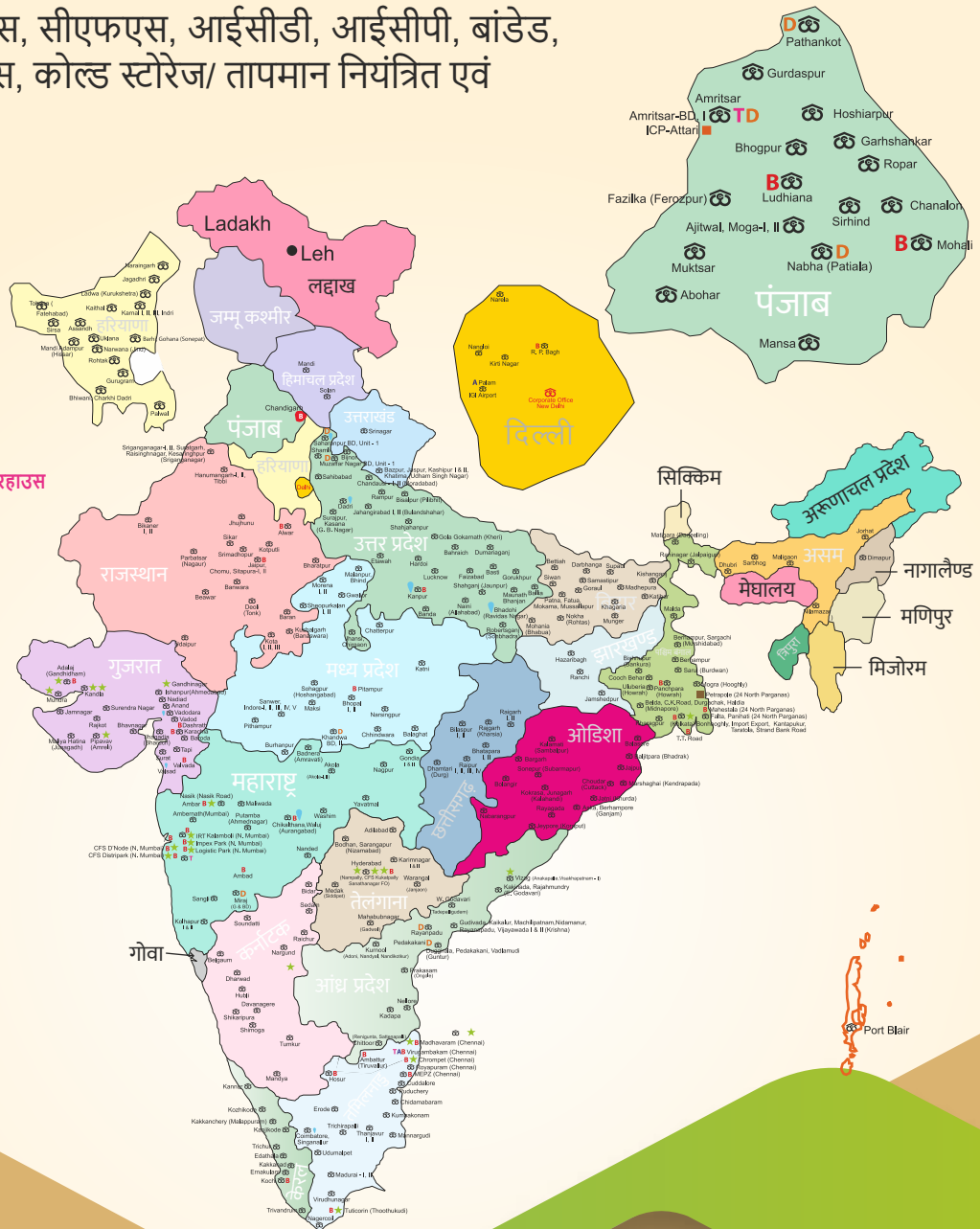
क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

वैज्ञानिक भंडारण के महत्वपूर्ण तथ्य

- किसी भी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए खाद्यान्नों को संजोकर रखना अत्यंत आवश्यक है। खाद्यान्नों का सीधा संबंध मानवीय अस्तित्व से जुड़ा है, अतः खाद्यान्नों का संरक्षण आने वाले कल के लिए जरूरी है।
- केंद्रीय भंडारण निगम पिछले कई वर्षों से उत्पादक तथा उपभोक्ताओं के बीच में मजबूत कड़ी का काम कर रहा है तथा देश के किसानों को वैज्ञानिक भंडारण की तकनीक की जानकारी उपलब्ध कराता है।
- वेअरहाउसिंग सेवा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू ग्राहकों के स्टॉक को समय पर डिपॉजिट करना एवं डिलीवरी देना है तथा वेअरहाउसिंग कारोबार की सफलता वेअरहाउसों की क्षमता के निरंतर भरपूर उपयोग पर ही निर्भर है।
- निगम खाद्यान्नों के वैज्ञानिक भंडारण के अतिरिक्त कंटेनर फ्रेट स्टेशन, अंतर्देशीय कंटेनर डिपो, लैंड कस्टम स्टेशन तथा एअर कार्गो कॉम्प्लेक्स जैसी लॉजिस्टिक सेवाएं भी उपलब्ध कराता है।
- निगम अपनी वैज्ञानिक भंडारण सुविधाओं के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है तथा इससे किसानों की खुशहाली में स्थिरता आई है और पूरे देश में इसकी लोकप्रियता बढ़ी है।
- कृषि एवं औद्योगिक कार्यकलापों के क्षेत्र में वेअरहाउसिंग एक महत्वपूर्ण घटक है। विकासशील अर्थव्यवस्था में वेअरहाउसिंग प्रणाली का विशेष महत्व है जो उत्पादन के लिए सुरक्षित वैज्ञानिक भंडारण प्रदान कर सकता है।
- निगम ग्राहकों के स्टॉक का स्वामी नहीं है बल्कि यह एक अभिरक्षक और अमानतदार के रूप में कार्य कर रहा है तथा वैज्ञानिक भंडारण की दिशा में आज कीटनाशन सेवाओं एवं प्रधूमन कार्य द्वारा भंडारित माल का परिरक्षण किया जाता है।
- मूल्य नियंत्रण के लिए भंडारण व्यवस्था का विशेष महत्व है। जन-जन के लिए आधुनिक भंडारण व्यवस्था सुनिश्चित करना आवश्यक ही नहीं बल्कि देश की समृद्धि के लिए भी उपयोगी है।
- देश में खाद्यान्नों के सुरक्षित भंडारण और उनकी आपूर्ति करने सहित भंडारण की वैज्ञानिक तकनीक के विकास में भी निगम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सीडब्ल्यूसी वेअरहाउस, सीएफएस, आईसीडी, आईसीपी, बांडेड, एअर कार्गो कॉम्पलेक्स, कोल्ड स्टोरेज/ तापमान नियंत्रित एवं बेस डिपो स्थान

- ⊞ सेंट्रल वेअरहाउस
- ★ सीएफएस / कंटेनर फ्रेट स्टेशन
- 📍 आईसीडी (इंलैंड कंटेनर डिपो)
- B बांडेड वेअरहाउस
- A एअर कार्गो कॉम्पलेक्स
- T कोल्ड स्टोरेज/ तापमान नियंत्रित वेअरहाउस
- D बेस डिपो
- आईसीपी (इंटीग्रेटेड चेकपोस्ट)
- ★ आईआरटी कालंबोली (नवी मुम्बई)



केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया, अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली - 110 016